जल भँवर

राजदेव मण्डल



JAL BHAMAR/A Maithili Novel by Sh. Rajdeo Mandal

जल भँवर

जल भँवर

राजदेव मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

ISBN : 978-93-87675-49-0

दाम : 250/- (भा.रू.)

नव संस्करण : 2019

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग
वार्ड नं. 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 6200635563; 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : श्रीमती पुनम मण्डल
निर्मली (सुपौल) बिहार : 847452

JAL BHAMAR

A Maithili Novel by Sh. Rajdeo Mandal

दू शब्द

ऐ उपन्यासक कथा हमर छी।
ई कथा अहाँक छी।
ई कथा हमरा सबहक छी।
नीक, अधलाहक निर्णयो तँ अहीं सभकेँ करए पड़त।



निवेदन

हमरा नहि करू एना ठेल कऽ कात
चलए दिअ सँग साथ
चलबै सँगे-सँग चारि कदम
तब ने हेतै प्रेमसँ बात
ओना तँ होइते रहै छै घात-परिघात
आऊ किछ पल करू शान्तिसँ बात।



अनुक्रम

(पात्र आ स्थानक नाओं सोल्हन्नी कल्पनापर आधारित अछि।)

एक

पंचमीक राति अन्तिम पहरपर लटकल छल। केतौ एकटा चिड़ै चुनचुनाएल।

राजेसरक देह चौकीपर पड़ल छेलै मुदा मन सपनामे दौगैत-पड़ाइत। निन्नमे डुमल साँसक तीव्रस्वर। ओइ गतिसँ दौगैत सपनामे केतए-सँ केतए पहुँच गेल छेलइ। ओ देख रहल छल, सपनाक रंग भरल चित्र...।

गाछक निचला भाग अन्हारमे डुमल छल। ओइ अन्हारमे ओ ठाढ़ भेल छल। धरती आ अकासक बीच विचारकेँ पकड़ने।

अकस्मात भयंकर अट्टहास सुनलक। राजेसर चौंक उठल। आकि पाछूसँ केकरो कनबाक स्वर ओकरा हिला देलक। चारूभर तकलक। वायुक गति बिहाड़ि सन। आगूमे जेना किछो गरजल। देखलक जे राक्षस सन आकृतिबला एक हाँज जीव ठाढ़ भेल छेलइ। ओ सभटा एकेबेर आक्रमण करैले दौगल। जान बँचेबाक कोनो उपाय नै सुझलै। लपैक कऽ ओ डारि पकैड़ गाछपर चढ़ि गेल। आक्रमणक मुद्रा बनौने जीव सभ लपकैले चेष्टा करए लगलै। डरे थरथराइत राजेसर ऊपरका डारि पकड़बाक यत्न करऽ लगल।

किन्तु डारिकेँ पकड़िते मोचरा जाइ छेलइ। मोचराएल डारिपर

लटकल राजेसर चिचिया लगल। डारिकेँ कड़कड़ाइते राजेसरक धुकधुकी तीव्र भऽ गेल। भंयकर जीव सभ फानि-फानि कऽ ओकरा पकड़बाक कोशिश करऽ लगलै। बँचबाक लेल ओ एमहरसँ ओमहर डारिपर झूलए लगल। ओकर देह कखनो अन्हारमे तँ कखनो इजोतमे चलि जाइ छल। तखने सौंसे गाछ कड़कड़ा उठल।

राजेसर जोरसँ हल्ला केलक-

“हौ भागै जा... जल्दी। गाछ खसि रहल छइ। तरमे पिचा जेबहक।”

भयानक जीव सभ उनैट कऽ तकैत भागऽ लगलै। ओकरा सबहक आँखिमे परेम आ घृणा दुनू भरल छेलइ। तखैने राजेसरक जेठ भाय-जागेसर जोरसँ हल्ला केलक-

“रौ... राजेसर। उठ जल्दी। भिनसरबा भऽ गेलइ। चल हमरा धार तक पहुँचा। नाह सबेरे खुगै छइ।”

राजेसरक सपना भंग भऽ गेल छेलइ। डरसँ घमाएल देहकेँ पोछलक। साँसकेँ सहज करैत बाहर दिस देखलक। घरसँ बाहर इजोत हुलकी मारै छेलइ। ❑

दू

सुर्जक स्वर्णिम किरिण पृथ्वीपर पसैर गेल छल। दूर-दूर धरि छुछे बाउल पसरल। हरियरीक नाओंपर केतौ-केतौ खढ़क झाँकुड़। बगलसँ बहैत धार। आ पानिपर दौगैत रंग-बिरंगक किरिण।

चमकैत पसरल बाउलपर दूटा मनुखक छाँह ठाढ़ भेल छल। उड़ैत बाउलपर दौगैत आँखि जेना किछो ताकि रहल छेलइ।

अगिला पुरुखक देह दुबर-पातर। रौद-पानिमे रेताएल श्याम-

शरीर। हाथमे लाठी आ छाता लेने जागेसर ठाढ़ छल। पाछूमे ओकर छोट भाए राजेसर। पुष्ट शरीर। वर्ण कनी साफ। जुआनीक रंगसँ चमकैत। मुख उत्साहसँ दमकैत।

दुनू भाँइ भिनसरबे गामसँ चलल रहइ। धारक किनारपर अबैत-अबैत भोरका किरिण देहपर पड़ए लगलै।

जागेसर बेचैन दृष्टिसँ धारक फनकैत पानि दिस तकलक आ बजल-

"रौ राजेसर, नाह कहाँ छै?"

"नाहबला कोनो साधारण लोक छइ। ऊ अपना बखतसँ एतइ। लोकक बेगरतासँ ओकरा कोन मतलब।"

"हँ कहै छी ठीके। बड़ टेँटियाह होइ छइ। एके मिनटमे अपन रूप बदलि लइ छइ।"

कहैत जागेसर अपना नजैरकेँ धार दिस दौड़ौलक मुदा मन बहिनक संकटमे घुरिया रहल छेलइ।

राजेसरक पएर स्वत: पानि लग पहुँच गेलइ। सोचलक, केतेक पानि हेतइ। हेलि कऽ टपल नै जा सकैत अछि।

एकटा पएर पानिमे देलक। हड़बड़ा कऽ कछेरक माटि नेने पानिमे खसल।

"आहि रौ तोरी के।"

डाँड़ धरि पानिमे चलि गेल। जागेसर 'हाँ हाँ' करैत दौगल। आ ओकर हाथ पकैड़ घींच लेलक। जागेसर डपटैत बाजल- "एना जँ लुच्चा जकाँ करबहक तँ डुमि जेबहक। आब तूँ जवान भेलहक। देखै छहक, लोक प्रकृतिकेँ परनाम करै छइ। मनकेँ एकाग्र करै छै तब सोचि-विचारि कऽ कोनो काज करै छइ।"

मुड़ी झुकौने राजेसर भीजल नुआँकेँ झाड़ए लगल।

तखने एकटा पुरुख ओनए-सँ आएल। सौंसे देह गरदा आ बाउल पड़ल। जागेसर ओकरा दिस तकैत बाजल- “हौ भाय। नाह कहाँ छै?”

“हमहीं नाहक ठीकेदारी नेने छी। हम खढ़ बेचै छी। लेबहक?”

जागेसर पुछलकै-

“खढ़ बेचै छहक?”

“उपजै छै खढ़ आ बेचबै चाउर।”

पुरुख तमसाइत चलि देलक। राजेसर पुछलकै-

“एना तमसाइ किए छै?”

जागेसर बाजल-

“एकर कोनो दोख नै छै बौआ।”

धार दिस तकैत गम्भीर सुरमे बजल-

“दुख आ अभावसँ बेथित लोक अमरीत-वाणी केतए-सँ अनतै। अमरीतक अभावमे बीख तँ राज करबे करतै। ई लड़ाइ होइते रहतै।”

नाहकेँ अबैत देख दुनूक मनमे आसक संचार हुअ लगलै। ❑

तीन

सघन मेघक खण्ड सुरुजकेँ झँपने छल। दौगैत-पड़ाइत खोजैत मेघ। मेघक दोगसँ हुलकी मारैत तीखर किरिण।

बाध-बोनमे काज करैत लोककेँ दुपहरियाक भूख बेसी तंग-तवाह करै छइ।

नचैत दुपहरियामे बाध-बोन सुन-मसान। सुनहट बाट जेना

निसाँस छोड़ैत रहइ। बाटक दुनूकात पसरल खेत। केतौ-केतौ गाछी-बिरछी ठाढ़ भेल।

सुनहट बाटपर राजेसर बढ़ल जा रहल छल। रस्ता-पेराक नापैत पएर। मुदा मनमे सनसना रहल छेलै, साँझक गप्प। साँझेमे तँ सुनने रहै जे ओकर बहिन बेसी बेमार पड़ि गेल छइ।

तँए आइ भिनसरे ओकर जेठ भाय- जागेसर- बहिनक हाल-चाल बुझैले विदा भऽ गेल छेलइ। जागेसरकेँ कोसीक कछेर तक पहुँचबैले राजेसर संगे गेल छल। जागेसरकेँ नाहपर चढ़ेला बाद राजेसर आपस गाम दिस आबि रहल छेलइ।

ओकर बढ़ैत पैरक संगे विचारक क्रम सेहो बढ़ऽ लगलै। सोचए लगल, जिनगीमे केहेन-केहेन वियोगक छन अबै छै आ ओइ छनकेँ कल्पना मात्रसँ लोक केतेक दुखित रहैत अछि। मुदा जखैन ओ दुखक छन आबि जाइ छै तँ केहेन सहजतासँ सभ सहि लैत अछि।

एके अँगनामे भाए-बहिन खेलैत-कुदैत, पलैत-बढ़ैत रहैए। माए-बाप, भाए-बहिनक बीच सिनेहक जाल केतेक सघन भऽ गेल रहैत अछि। किन्तु बिआह भेला बाद बहिनकेँ ऐ घरसँ विदा हुअ पड़ै छइ। दिन-दिनसँ जुआन भेल सिनेहकेँ छोड़ैत आ तोड़ै काल केहेन पीड़ासँ गुजरए पड़ैत हेतै?

भाए-बहिनक बीच निरन्तर बढ़ैत दूरी। गाम-घर, माए-बाप, अड़ोसी-पड़ोसी सभकेँ बिसैर बहिन सासुर दिस विदा भऽ जाइत अछि। ओइ बिछुड़ैत घड़ीमे बहिनक हृदए केना फटैत हेतै...? ओह...! बिआह लगीचेमे हेबाक चाही। जइसँ भेँट करैमे समस्या नै होइ। जागेसर भैया ई नीक नै केलक, जे बहिनक बिआह एतेक दूर कोसी धारक ओइ पार कऽ देलकै।

फेर ओकरा मनमे बहिनक संग खेलल गेल खेल सबहक स्मरण

हुअ लगल।

तखने टिपिड़-टिपिड़ पानि पड़ऽ लगल। राजेसरक सोचक क्रम टुटल। ओ मुड़ी उठा अकास दिस तकलक। मेघ धरती दिस नमरल जा रहल छल। सौनक मेघ होइते छै अहिना। केनौउसँ एगो टुकड़ी नमरल आ झर-झरा कऽ बरैस गेल।

राजेसर अंगपोछासँ मुँहपर पड़ल पानिकेँ पोछलक। आ आगू मुहेँ नजैर दौगेलक। बलान धारमे बाढ़ि आबि गेल छेलइ। कछेरक खेत सभ पानिसँ डुमल जा रहल छेलइ। बाउलक ऊँचका भिण्डा सभ सूखल छेलइ। रोपल धानकेँ बाउलसँ भरैत बलान माय।

केतेको बरिससँ ई बलान नदी ऐठाम घुरिया रहल छइ। आस-पासक गाम सबहक माटिकेँ प्राण विहीन कऽ देने छइ। कोनो ठाम बाउलक भिण्डा तँ कोनो ठाम खत्ता। केतौ समतल नहि। केकरो खेतमे नीक माटि तँ केकरो खेते मरा गेल। कोइ मनक मन धान उपजबैत तँ कोइ हक्कन कनैत। तब ने कोइ ईहो कहै छै, आएल बलान तँ बान्हू दलान आ गेल बलान तँ टुटल दलान। स्वतंत्रताक लेल ई नदी किछो कऽ सकैत अछि। केतबो ऊँचगर बान्हसँ घेर दियौ बाउलसँ भरना करैत फानि कऽ ओइपार टपि जाएत। जइ बाटे मन होइ, जइ गाम जेबाक होइ, ओतए चलि जाएत।

ऐबेर ई नदी राजेसरक गामकेँ चारूभरसँ घेरने छइ। उत्तरसँ अबैत धारा दू भागमे विभक्त। गामक पुबरिया धारा मोट-गहींर मुदा पछबरिया धारा पातर। जेना बड़का साँप गामकेँ घेरने होइ। गामक उतरबरिया कात ऊँचका भिण्डापर स्कूल। धारक घेरासँ बँचल छइ। स्कूलक भिण्डापर ठाढ़ भऽ कऽ सौंसे गामक छप्पर देखल जा सकै अछि। दूर-दूर धरि पसरल खेत...।

राजेसरक गाम। कोनो बेसी नमहरो नै आ ने कोनो बेसी छोट।

सभ तरहक लोक आ जाति। जातिक भेद नहि, एकेठाम बसल। दूटा टोल मुदा एकेमे मिलल। किन्तु अन्तर अछि-एकटा। गरीब, मजदूरक विचार सभ रंगक। मुदा जमीनबला धनिक सबहक विचार एके रंग।

राजेसर सोचलक, की होइ छै जे हमरा सभकेँ आपसी झगड़ासँ फुरसति नहि भेटैए आ ओकरा सभकेँ एके इशारा...।

मेघक गर्जनासँ ओकर धियान दोसर दिस भऽ गेल।

पानिक झीसी बन्न भऽ गेल छेलइ। हवामे ठण्ढी आबि गेल छेलइ। मनकेँ प्रसन्न करैबला समय...।

राजेसर अपना गामक बाधमे पहुँच गेल छल। कनी आगूसँ हड़हड़ाइत, फनकैत भूतही बलानक धारा...।

राजेसरक पएर गाम दिसक बाटपर बढ़ऽ लगल। बर्खामे भीजला कारणे देहक ठेही निकैल गेल छेलइ। ठण्ढाएल हवासँ मन आन्नदित हुअ लगलै। ओ गुनगुनाए लगल। शनैः शनैः अवाज तीव्र हुअ लगलै-

"कहमाँ बहै छै मैया कमलेसरी
कहमाँ बहै छै बलान।
माँझ तिरहुत बहै छै मैया कमलेसरी
अलापुरमे बहै छै बलान।
केते जल बहै छै मैया कमलेसरी
केते जल बहै छै बलान।
अगम जल बहै मैया कमलेसर
रिमझिम बहै छै बलान।
कथी दऽ बोधबै मैया कमलेसरी
कथी दऽ बोधबै बलान।
पान-फूल दऽ बोधबै मैया कमलेसरी
पाठी दऽ बोधबै बलान।"

'छपाक' दऽ पानिमे किछु खसल। ओही शब्दसँ गीतक क्रम टुटि गेल। राजेसर अकचका कऽ चारूभर तकलक।

आँखि खोजलक मुदा किछो नै भेटल। मन घुरिया लगलै आ देह आगू बढ़ल। ओ बाउलक ऊँचगर ढूहपर चढ़ि चारूभर नजैरकेँ दौगेलक। आँखि ठाढ़ भऽ गेल।

धुरक कातसँ एकटा नारीक आकृति ओकरे दिस टक-टक तकैत। ठोरपर मन्द मुस्कान।

राजेसर छड़ैप कऽ ढूहपर सँ उतरल। ओ गमछासँ मुँह पोछैत ओम्हरे टाँग बढ़ेलक। लग गेलापर देखैत अछि जे नीता धूरक कातमे बैसल अछि। मुड़ी नमरौने खुरपीसँ माटि कैच रहल अछि। कातमे घाससँ भरल छीटा छइ।

राजेसर अनुमान लगेलक जे यएह माटिक ढेपा पानिमे फेकने हएत। मुदा तेना अनठौने अछि जे के कहत एकर किरदानी छी।

राजेसर किछु काल धरि ओकरे दिस तकैत रहि गेल। हरिअर रंगक साड़ीकेँ ठेहुन धरि समेटने। बाँहिपर कसल ब्लाउज। सिनुरिया भेल मुँहपर लटकल एकटा लट। बरखामे भीजल केशसँ चुबैत पानिक बून ललियाएल कपोलपर ससैर रहल छल। लगै छेलै जेना करियाएल मेघसँ टपकैत मोती चानपर गिर रहल होइ।

पिआसल नजैर पिबैत रहल रूपक पानि, किन्तु केते काल? किछु एहनो समय होइ छै जइमे अभिनय चलैत-चलैत यर्थाथ बनि जाइ छइ। आ ओइ यर्थाथकेँ सहजताक संग अंगीकार करऽ पड़ै छइ।

राजेसर खखसल। नीता अकचकाइत मुड़ी घुमौलक। पातर ललियाएल ठोरपर मन्द मुस्कान।

आँखिक भवमे सहज आकर्षण। राजेसर तकिते रहि गेल।

नीता बजली-

“की यौ गबैया, बड़ी टहकारसँ गाबै छेलौं। जेहने गीत तेहने मधुर गला।”

राजेसर ठाढ़ भेल ओहिना तकैत रहल, जेना पहिने तकै छल।

नीता नजैर घुमबैत पुन: बजली-

“हे यौ, एना किए टकटकी लगौने छी, हम की कोनो चुड़ीन छी।”

राजेसर हँसैत बाजल-

“हमरा तँ बुझि पड़ैत अछि जे अहाँ जलपरी छी। तुरन्ते पानिसँ निकैल कऽ बैसल छी। तँए मन होइए जे अहाँकेँ देखते रही।”

“अहाँकेँ तँ हरदम मजाके सुझैए।”

“ई मजाक नै अछि नीतू। लोक जँ नीक कहैत तँ अहाँकेँ आँखिक सोझहासँ परोछ नइ हुअ दइतौं। मुदा करब की... ।”

“रोकैत के अछि, अहाँकेँ?”

“रोकत के हमरा। मुदा बिआहसँ पहिने ई गप्प ठीक नै अछि। समाजक लाज-धाक तँ राखए पड़ै छइ। जनिते छिऐ, अपना गाममे केहेन-केहेन अगिलगौना सभ अछि। छनेमे तिलकेँ ताड़ बना देत।”

“तँए ऐ डरे चारि दिनसँ नुकाएल छेलौं।”

“से बात नै छइ। माइक बेमारीक कारणे ओझरा गेल छेलौं। पथ-पानि,दवाइ करैमे अपसियाँत छेलौं।”

“सएह यौ, हमरा तँ कखनो काल डर भऽ जाइत अछि। कहींहम बिच्चे धारमे ने डुमि जाइ।”

“अहाँ घबराउ नै। हमरा शपथपर बिसवास राखू। अहाँकेँ छोड़ि दोसरसँ हमर बिआह नै हएत। किछु दिन परतीछा करए पड़त।”

नीताक मुँहपर खुशीक रेखा आएल आ सिनुरिया रंग छोड़ैत चलि गेल। गप्प दुनूकेँ आर निकट लाबि लेलक।

नीता मुड़ी नुहरौने बजली-

"परतीछा तँ हम जिनगी भरि कऽ सकै छी। मुदा एकटा गप्प बुझि लिअ। जहिया ई बात होएत तहिया गाममे हड़कम्प मचि जाएत।"

"से किए? बिआह तँ होइते रहै छइ।"

"होइ छइ। अपना जातिमे। आन जातिमे नहि। गरीब-धनिक सेहो देखल जाइ छइ। हम तँ जातियो आ धनोमे अहाँसँ हीन छी। ओनऽ परिवार आ समाज ओहो सभ रोकत।"

"अहाँ बेकारे चिन्ता करै छी। हमरापर बिसवास राखू। हम केकरोसँ डरेबला नै छी।"

कहैत राजेसर आरो लग सहटि गेल। नीताक बाँहि दिस तकैत बाजल-

"अहाँक बाँहिपर ई कथीक चेन्ह छी? कोइ मारलक की?"

"हँ, बाबू खिसया कऽ एक छौंकी मारलक।"

"की भेल रहै से?"

"धरमलालक काज गछने रहइ। हमरा कहने रहै जे ओकरा अँगना जा कऽ काज कऽ दिहैन। हम नइ गेलिऐ।"

"किए नै गेलिऐ?"

"हे यौ, ओकरा ऐठाम जँ काज करैले जाइ छी तँ लगैत रहैए जे धरमलाल आँखिमे गिर लेत। हरदम टकटकी लगौने रहै छइ। हमरा डर होइए। बाबू ई बात बुझबे ने करै छइ। कहबै केना।"

"अहाँ चिन्ता नै करू। हमर मोटका डेरहत्थी लाठी राखल छइ। जँ अहाँक किछ कहत तँ कपारे फोड़ि देबै।"

"हे यौ, बापक संगे ओकर बेटो ओहने छइ।"

गप-सप्पक क्रममे राजेसरक अंग नीतासँ स्पर्श भऽ गेलइ। स्पर्शक

सुखद आकर्षण...।

राजेसर चाहलक जे नीताकेँ पाँजिया ली। नीता बँचबाक लेल चेष्टा केलक आ धड़फड़ाइत धारमे खसि पड़ल।जलक तीव्र वेगक कारणे भँसिया लगल। मुदा राजेसर चट-दे धारमे धसि गेल आ नीताक बाँहि पकैड़ कछेर दिस घिंच लेलक।

दुनू हतप्रभ। एक दोसर दिस तकैत। डर आ सिनेह एके संग बरखैत...।

नीताक सभटा वस्त्र भीज कऽ देहमे सटि गेल छेलइ। राजेसरोक वस्त्र डाँड़ धरि भीजल।

अपना दिस धियान जाइते नीताक नजैर नीचा झूकि गेल। पानिक शोर सुनहटकेँ भंग कऽ रहल छेलइ।

दूरसँ कोइ खखसल। दुनू गोरे मुड़ी उठा कऽ देखलक। कालीकान्त कोदारि कान्हपर नेने आबि रहल छेलइ। किछु एहनो लोक होइ छै जेकर डर सभकेँ होइत रहै छइ। आ ओकरा तापसँ लोक हटले रहैए। नीक आ अधलाहक मध्य डरक सत्ता, आ सत्ताक निच्चाँ सुख-दुखमे डुमल लोक।

राजेसर आ नीताकेँ जेना डर चारूकातसँ घेरि लेलक। दुनू आँखिए-सँ किछु गप्प केलक आ अपन-अपन बाट धऽ लेलक। आ धारक पानि जेना हँसए लगल। ❑

चारि

राजेसरक देह थाकल-ठेहियाएल आ निन्नमे मातल छेलइ। मुनल आँखिमे नचैत रहै- सपनाक सतरंगी संसार।

ओ स्वच्छ झीलमे हेल रहल छल। गहींर झील। अगम-अथाह, झलमलाइत पानि। कनी अन्हार कनी इजोत। मुदा ओइ पानिमे राजेसरकेँ डर नइ होइ छेलइ। शरीरमे स्पर्श करैत जलसँ ओकरा सुखद अनुभूति भऽ रहल छेलइ। ओ हेलैत आगू बढ़ले जा रहल छल। आकि कियो गट्टा पकैड़ झमारऽ लगलै। कानकेँ कोनो शबद हिलौलकै।

भुक्क दऽ ओकर निन्न टुटि गेलइ। धड़फड़ा कऽ उठि गेलइ। छनेमे सुन्दर सपना आगूसँ अलोपित भऽ गेल छेलइ।

ओ अँङैठी करैत उठि कऽ बैसल।

आगूमे भौजाइकेँ ठाढ़ भेल देखलकै। ओसारसँ नीचाँ उतैर अकास दिस तकलक तँ देखलक जे ललियाएल सुरुज धरती दिस हुलकी मारि रहल छेलइ। खोंतासँ बाहर चिड़ै-चुनमुनी चुन-चुना रहल छल। मेघ अपन मोहक चित्र बना रहल छेलइ।

भौजाइक शबदसँ राजेसर पाछू घुमि तकलक।

“गिरहत तकैले आएल छेलइ। काज गछने छल। जाइयौ ने। आइ भाइक बदलामे काज कऽ देबै।”

गप्प सुनि जेना तुरतेमे राजेसरक मन तितौंस भऽ गेलइ। मुँह घोंकचबैत ओ दुआरिसँ बाहर विदा भऽ गेलइ।

अदहा सौन सनसना कऽ बीति गेल छेलइ। रेड़-बरहा करितो धन-रोपनी तेजीसँ भऽ रहल छल। एहेन समयमे जनो-मजदूर खुशामदोपर नइ भेटत।

रोपनी-कटनीक लेल लोक बाहर चलि जाइत अछि। काज केनिहारक अभाव सोभाविक छइ। काज करेबाक अछि तँ खुशामद करए पड़त। अहिना होइ छै- करवनो नाहपर गाड़ी तँ करवनो गाड़ीपर नाह।

जन-मजदूर, काज केनिहार, श्रमशक्तिकेँ ने मान-सम्मान आ ने

उचित श्रमक मूल्य भेटै छइ। सोभाविक छै जे ओ सभ पलायन करतै।

राजेसरक सोच फेर दोसर दिस घुमलै। गछल छै तँ काज करैले जाए पड़त।

ओकर पएर पोखरिक महार दिस बढ़ल।

दरबज्जापर सबहक बरद सानी-कुटी खा रहल छेलइ। किछु गिरहत टेक्टरक जोगाड़मे लगल। गप हँकैत। धनक ठेसी सभसँ बेसी।

"धुर हम तँ दू दिनमे खेती कऽ लेबै।"

अधिक खेतबला सभ जनकेँ होहकारने खेत दिस जा रहल छल।

"रौ जल्दी चल। खेत चटपटाएल छइ। पानि सुइख जेतौ तँ मुँह तकैत रहि जेमेँ।"

चौबटियापर मलकेसर जोर-जोरसँ सोर पाड़ि रहल छेलै-

"रौ ढोकबाऽ ऽ ऽ। दुपहरिया भेल जाइ छइ। तूँ सभ पड़ले रहमेँ।"

ओइ टोलक लोककेँ बुझले छै जे गिरहतकेँ चिचियाइक आदत छइ। तँए अनठौने अछि।

मलकेसर फेर हल्ला केलक-

"रौ सुनै छीही आकि नइ। रौ ढोकबाऽ ऽ ऽ। मरि गेल छी की...?"

भुखना ओही टोलपर सँ आबि रहल छल। एक नम्बरक बकटेँट अछि। ओकरा बुझल छेलै जे मलकेसरक बाप कारी बाबू एकबेर घरढुक्का काण्डमे पकड़ा गेल रहइ। ओही दिनसँ परोछमे लोक ओकरा करिया बोता कहए लगलै। मलकेसर जँ अनछपोमे सुनि जाइ तँ झगड़ा शुरू...।

मलकेसर हल्ला करिते छल। भुखनो जोरसँ सोर पाड़लक-

"बक् छू...। बक् छू...। करिया बोता बक् छू...।"

मलकेसरक आँखि ललिया गेलइ। तामसे हाथ थरथराए लगलै।

हाथमे लाठी रहबेकरै। लाठीक हूर उठा कऽ ओकरा लगीच गेलइ।

“रौ सार, तूँ एहेन बात बजमें। देखै छी लाठीक हूराठ। एके हूराठमे...।”

“हे, हम तोहर करजा धारने छियह आकि कमाएल खाइ छियह। ईह, टेरही देखबैत अछि!”

“तूँ एहेन अधला गप बजलेँ किएक? तूँ हमरा...।”

“हम तोरा नहि कहलियह। हम तँ अरखनियोँ बोताकेँ सोर पाड़बै-बक् छू...। बक् छू...।”

मलकेसर तामसे थरथराए लगल। करोध बरदाससँ बाहर। ओ भुखनाक मुँहकेँ लाठीक हूराठसँ हूराठि देलकै। अचक्केमे चोट लगलासँ भुखना चितंगे खसि पड़ल।

लाठीकेँ सोझ करैत मलकेसर बाजल-

“की बुझि पड़ै छौ तोरा, कमजोर। रौ बाप तँ हमरा सोझहामे बजबे नइ करतौ आ तूँ फटर-फटर...।”

कहैत घुमि कऽ विदा हुअ लगल आकि भुखना सुतले-सुतल ओकर टाँग पकैड़ सट दऽ घींच लेलक। मलकेसर मुहेँ भरे गिरल। ओइठाम राखल पथ्थलपर गिरलाक कारणे डाँड़मे बेसी चोट लगि गेलइ।

बात आगू बढितै ताबे ‘हाँ हाँ’ करैत राजेसर बीचमे पहूँच गेलइ। खेत-पथार दिस जाइत गौआँ-घरूआ ठमैक गेल।

दुनू गोरेकेँ पकैड़ अलग केलक। फोंफियाइत मलकेसर बाजल-

“देखलिऐ ने यौ अपने लोकैन, ई छौड़ा हमरा डाँड़ सरका देलक। रौ रजेसरा गवाही रहिहेँ।”

भीड़सँ अवाज निकलल-

“यौ मलकेसर बाबू, अहाँ शान्त रहू। साँझहेमे पंचैती करब। एतेक

ठेसी।”

“हँ यौ, एकरा सबहक मन बढ़ि गेलइ। जेतए देखियौ, जबरदस्तीए बात करत। बुढ़बाकेँ डाँड़ सरका देलकै।”

“भुखनोक मुँह फुला देलकै। कोनो की एके दिस गलती भेलइ। फटाक दऽ पहिने लाठी नै चला देबाक चाही।”

“साँझेमे फरिया जेतै जे केकर गलती छइ।”

“हँ हँ, बुझले तँ छै जे गाममे केहेन पंचैती होइ छइ। मुँह देख मुंगबा...।”

राजेसर चुपचाप ओही भीड़मे ठाढ़ छल। कालीकान्त कार कौआ जकाँ टाँहि दऽ बाजल-

“रौ रजेसरा हम तोरा तकने फिरै छियौ। तूँ पंचैती करै छेँ। हर-जन खेत पहुँच गेलइ। जल्दी चल।”

लबरा ऐबते बाजल-

“रौ चल करैले खेती-पथारी, नइ तँ बिका जेतौ बाड़ी-झाड़ी।”

“देखही लबरा ऐबते अपन लबरपन शुरू करि देलकै।”

“तँ हम कहाँ कहै छिऐ- बक् छू...। बक् छू...।”

सभ हँसैत-मुस्कियाइत चलि देलक। ❑

पाँच

दिन भरिक काज कऽ जखैन लोक आपस अबैत रहै छै तखैन सफलता-विफलता, जश-अपजश, नीक-अधला सभ घेरने रहै छइ।

रोपनी-कमैनी करैबला केँ तँ बाते किछु आर रहै छइ। रौदाएल

देह, घामसँ भीजल कपड़ा-लत्ता। भुखाएल पेट, पियासल मन, मुरझाएल मुँह, टाँग-हाथमे सटल थाल-कादो।

गाम दिस बढ़ैत पएर बाधक चिन्ता छोड़ि दइ छइ। किन्तु गाम परहक चिन्ता कपारपर चढ़ि जाइ छइ। एहेन बखतमे आँखिमे तामस नचिते रहै छइ।

सुरूज डुमैमे अखैन किछु बिलम्मे छेलइ। राजेसर बँसबिट्टी लग आबि ठाढ़ भऽ गेलइ। आँखि चारूभर घुमि-घुमि ताकए लगलै।

अहीठाम तँ नीता भेँट करैले कहने छल? कहाँ देखै छिऐ। ठकि लेलक की?

फेर ओकर पूर्व मिलनक घटना सभ मन पड़ए लगलै। आ जेना शीतल बसातक एकटा झोंक आबि देहकेँ सिहरा देलकै।

आहट सुनलक तँ मुड़ी उठा कऽ आगू तकलक। धरमलाल बाबूक बेटा कुलानन्द लगमे आबि गेल छेलइ।

चारूभर नजैर घुमबैत कुलानन्द ऐँठि कऽ बाजल-

“रौ रजेसरा, एना चोर जकाँ की तकै छी?”

राजेसरो केना चुप रहितए, बाजल-

“जेकरा काज-धंधा नै रहै छै से अहिना बताह जकाँ वौआइत रहै छै आ लबर-लबर केने घुमै छइ।”

दुनूमे बकटेँटी शुरू भऽ गेलइ।

“हे रौ, हम सबटा गप बुझै छियौ। बाधे-बोनमे जे रसलीला केने घुमै छीही से के नइ जनै छौ। जहिया चोटपर चढ़बीही तहिया बुइझ पड़तौ।”

“यौ कुलानन्द, हमहूँ सभ बात जनै छी जे घरेमे अहाँ की सभ करै छिऐ। डुमि कऽ एना पानि किए पीबै छी। हमरा डेराउ नइ। जहिया हमर

मन गरमा जाएत तँ डेरहथ्थी हमरा काँखे तर रहै छइ।"

"ओऽ ऽ, ई गप तँ बिसैर गेल रहियौ जे तूँ गरीबक नेता छैं। सुनै छियौ जे मुखियासँ ठाढ़ हेमैं। एहने चोरा-छीनरा मुखिया होइ छै रौ।"

"गौआँ-घरूआ चाहतै तँ हम मुखिया पदसँ लड़बै। आ अहाँकेँ कहने थोड़े किछो हएत। अखैन केहेन मुखिया अछि से तँ जनिते छिऐ।"

"रौ, शिवकान्त बाबू तँ दू पीढ़ीसँ मुखिया बनल छथिन। हुनकर मोकाबला तूँ करबीही। पसङ्गो बरबैर छीही, हुनका सोझहामे तूँ। फूकतौ तँ उड़ि जेबही। रे बुड़ी, देहपर न लत्ता, चौधरी बोलत्ता। बापसँ भेँट भऽ जेतौ।"

राजेसर डेरहथ्थी काँख तरसँ निकालैत बाजल-

"हे, मुँह सम्हारि कऽ बात करू आ नइ जँ अखने फरियेबाक अछि तँ फरिया लिअ।"

"रौ, हम तोरासँ लड़ि कऽ अपन मान घटाएब। लोक कहत जे लड़बो केलकै तँ कीड़ी-मकौड़ीसँ।"

"से तँ हमहूँ घरढुक्कासँ नहि लड़ऽ चाहै छी।"

"समय आबऽ दही डाँड़ सरका देबौ जे उठले ने हेतौ।"

"लोक हमरा संगे अछि। हमरा गीदर-भौकी नइ देखाउ। नहि तँ डेन-बाँहि टुटि जाएत।"

"ठीक छइ।"

तामसे डेन फरकबैत दुनू दू दिसामे चलि देलक।

बँसबिट्टीसँ एक हेँज कौआ-मेना फड़फड़ाइत उड़लै आ अपन-अपन संगीक संगे अकासमे निर्विघ्न विचरण करए लगल। ❑

छह

गामक चौबटियापर ठाढ़ ई पीपरक गाछ आब केतेक चतैर गेल छइ। कोनो आइसँ ई गाछ छइ। बुढ़े-पुरान कहत जे कहिया रोपल गेल।

आब तँ माटि भरि कऽ चबुतरो बना देल गेलइ। पहिने तँ लोक भुँइएपर बैसै छेलइ।

पंचैती की कोनो आइसँ होइ छइ। हँ, जमानामे तँ कोटो-कचहरी नहियेँ रहइ। पंचैतीएमे न्याय होइ छेलइ।

जेतए न्याय ओतै अन्याय। लगबैत रहू उपाय। मनुख छै तँ झगड़ा हेबे करतै। तामसो तँ लोककेँ संगे छन्हि। तामसपर लोक की नियंत्रण करत। लोकेपर तामस नियंत्रण करैत अछि। तामसपर नियंत्रण केलासँ की हेतै?

दोसर बाटे आर दूना वेगसँ बहतै। कोनो तरहेँ जँ तामस एबाक दुआरि सभ बन्न भऽ जेतइ। पहिने तँ ओकरा संगी सभपर रोक लगबए पड़तै।

गामक चौबटियापर लोक सभ एका-एका जमा भऽ रहल छेलइ। आइ काजो करैत काल सभकेँ पंचैतीएपर धियान रहइ।मनमे रहै छै- अपना लड़ाइ-झगड़ा नै करब तँ दोसरोकेँ लड़ाइ करैत देखबै। अन्तरक सभ बातसँ परिचित भऽ जेनाइ की सहज छइ। भीतरिया कंकालकेँ देखनाइ बड़ डेरौन...।

पंचैती तँ जमानामे होइ छेलइ। दूधक दूध आ पानिक पानि बेरा दइ छेलइ। अखैन तँ पंचैतियोमे घूसखोरी, जातिवाद, पाटीवाद, अपन-आन...।

सभ अपना-अपना सुआरथमे डुमल।

न्यायक कण्ठ मोका जाइत अछि। केतेको समस्या फन-फना कऽ ठाढ़ भऽ जाइत अछि।अन्यायक बदला आइ नहि काल्हि अन्याय भेटते अछि। गाछ रहतै तब ने झटहो मारलापर फले भेटतै।

साँझक अन्हार गाछ-पत्ता सभपर पसरए लगल छल। पछुआएल कौआ-मेना काँइ-काँइ करैत खोंता दिस पड़ाएल जा रहल छेलइ। गोसाँइ घरमे दियावाती भुकभुकाए लगल छेलइ।

चबूतरा लग तीन-चारिटा पटिया बिछा देल गेल छेलइ। लालटेनक मधिम इजोतमे सबहक मुँह ठीकसँ नहि देखाइत रहइ। गाम-घरमे बिजलीक कोन काज। चौबीस घण्टामे कखनो काल एक आध घण्टाक लेल आबि गेल तँ लोक तिरपित भऽ जाइत अछि।

किछु लोक पटियापर बैसल छेलै तँ किछु कातेमे फुसराहटि कऽ रहल छेलइ।

मधुमाछी जकाँ घनघनाइत स्वर। स्पष्ट रूपें नहि सुनाइ छेलइ।

किछु लोक निरंतर उपेक्षित आ दबावमे रहलाक कारणे सबहक सोझहामे बजबाक साहस नै कऽ पबैत अछि। ओहन बेकती सभ काते-करोटमे बाजि-भुकि कऽ संतोख कऽ लैत अछि। सभ ढंगक बेकतीकेँ समाजमे जरूरतो तँ रहबे करै छइ।

किछु जन-मजदूर सभ राजेसरकेँ कातेमे घेरि लेने छेलइ। अपन-अपन उपदेश झाड़ि रहल छल।

स्वार्थक तँ रूपे तेतेक होइ छै जे के चीन्ह सकत। कखैन केना कऽ परगट हएत आ कखैन लुप्त भऽ जाएत, कहनाइ कठिन। ओ अपना अनुरूपें नाच नचबैत रहैत अछि। आ बेकती अपनाकेँ बिसैर नचैत रहैत अछि। सबहिं नचावत सुआरथ गोसाँइ।

“सुनि ले राजेसर! अपन गप्प कहैमे डेरा जेबही तँ जुलुम भऽ जेतौ।”

"हँ, उनटे भुखनाकेँ जरिमाना लगि जेतइ।"

"डेरेतै किएक? कोनो की कोइ बाघ छिऐ।"

"हँ, अखनीसँ धाक टुटल रहतौ तब ने मुखिया पदसँ लड़बीहीं।"

"हे रौ, ओहो सभ कोनो काला पहाड़ नै छिऐ। छूच्छे हवा-पानि देने रहै छइ।"

"रौ, अपना सभ गरीब छिऐ तँ की कण्ठ मोंकि देतइ।"

"हौ, राजेसरकेँ बजैक छमता छइ। के एकरा गप्पकेँ काटि सकतै?"

"चलू बहादूर डर नै राखू।

पाँछा छी हम सभ तैयार।"

"रौ, एना राजेसराकेँ गरपर नै चढ़ाबीही,चारि दिनक बादक तँ सभ कमाइले बाहर चलि जेबही आ बेचारा असगरे सबहक चोटपर चढ़ि जेतइ।"

"अखनी की नजैरपर नै चढ़ल छै, केतेक बेर मुँहपुरखा सभकेँ मुहेँपर गारि-बात देने छइ। लाठी चमकौने छइ। ओ सभ छोड़ि देतै?"

"सएह हौ, गरीबक एकता आ बालुक बान्ह। हौ काका, एके धक्कामे चारि फक्का। केतेकोकेँ तँ चढ़ौआ छागर बना कऽ परान लेलहक आ ऐबेर...।"

"चुप रह, मौगा-मरद अहिना बजै छइ।"

"ठीके, ओकरा सबहक काजमे जे बारम्बार अड़चन करतै तेकरा...।"

"तरेतर राजेसरापर सभ गुम्हैड़ रहल छइ।"

"चुप, चूड़ी पीन्ह कऽ घरमे बैस रह। की करतै? गिर लेतै?"

आपसी घेंघौज शुरू भऽ गेल छेलइ। सभकेँ शान्त करबाक लेल

राजेसरकेँ बाजए पड़ल- "अहाँ सभ चिन्ता नइ करू। अन्याय नै हेतइ। हम जवाब देबै। चलू लगमे बैसै छी।"

गाछ तर पंच सभ बैस गेल छल। चारूभर तकैत प्रमुख पंच बजला-

"यौ, मलकेसर बाबू एला?"

"आबि रहल अछि।" नेंगराइत मलकेसर पहुँचल। ओ कुहरैत पटियापर बैस गेल।

"भुखना कहाँ अछि यौ?"

"आबि गेलौं पंच साहैब। हम कोनो पछुआइबला मरद नै छी।"

भुखना गमछासँ मुँह बन्हने छल।

"सभ गोरे तँ आबिए गेल आब शुरू कएल जाए।"

"रौ भुखना, तूँ मुँह किए झँपने छेँ। उघारि कऽ देखा।"

भुखनाक मुँह फुलि कऽ कुप्पा भेल छेलइ।

"पहिने तँ मलकेसरसँ पूछल जाए- जे की भेल छेलइ।"

"हँ-हँ, पहिने मलकेसरजी सँ पूछल जाए।"

धरमलाल आँखि नचबैत बाजल।

मलकेसर देह-हाथ सोझ करैत बाजल-

"यौ सरपंच साहैब, जन-मजदूरकेँ मने बढ़ि गेल छइ। तइमे लबका छौड़ा सभ तँ पानियोँ मे आगि लगबै छइ। देखियो ने, भोरमे हम जनकेँ हाक दइ छेलिऐ। भुखना ओनए-सँ आबि कऽ हमरा अधला बात सभ कहऽ लगल। हम ओकरा डाँट-डपट देलिऐ तँ ओ हमरा पथ्थलपर पटैक देलक। डाँड़ सरैक गेल अछि।"

"ई तँ जुलुम भेलइ। एहेन-एहेन डकलीलामी।"

-कुलानन्द आँखि उनटबैत बजल।

“चुप रहबै तँ अहिना कपारपर चढ़ि कऽ लगही करत।”

“नहि यौ, कसि कऽ डण्ड-जुरिमाना कएल जाए।”

“एहेन अगिमुत्ता सभकेँ तँ मुइलाह बापसँ भेँट करबा दइके चाही।”

“धड़फड़ नइ करियौ, कनी भुखनोसँ बात बुझियौ। ‘कुछ बुझा न समझा आ फरमा दिया फाँसी।’ एना नइ करियौ।”

मलकेसरसँ राजेसर करजा नेने रहइ। सोचलक,राजेसर हमरे दिस बजत किने। तँए मलकेसर कुहरैत बाजल-

“भुखनासँ पुछबै। ओ तँ अपने दिस बजत। राजेसरो ओहीठाम रहै, ओकरासँ पुछियौ।”

कुलानन्द फरकैत बाजल-

“रजेसरा किए बजतै? ऐ बीचमे ओकर बात किए मानल जेतइ?”

“किए नइ बजतै? ओ हमरा सबहक मुँहपुरुख छिया।”

“एकेबेर एना नै बजियौ। मलकेसरजी जँ अपने कहै छैथ जे राजेसर ओइठाम रहै तँ ओकर गप सुनए पड़त। कहि कऽ सुनाबह हौ राजेसर केकर गलती रहइ।”

राजेसर ठाढ़ भऽ कऽ बाजल-

“यौ पंच लोकैन! हम जे देखलौं से कहि दइ छी। ठीके मलकेसर बाबू जनकेँ जोर-जोरसँ हाक दैत रहथिन। तखैने भुखना जोर-जोरसँ बोकराकेँ हाक दैत ओमहरसँ एलइ। मलकेसर बाबू खिसिया कऽ लाठीक हूराठसँ भुखनाक मुँह फोड़ि देलखिन। पहिलुक गलती तँ मलकेसरे बाबूसँ भेलैन। बाता-बातीमे लाठी नै चलेबाक चाही। तैपर भुखना बँचैले पाछूसँ टाँग पकैड़ घींच लेलकैन। चुट्टीओकेँ चीपबै तँ काटबे करत।”

मलकेसर खिसियाइत बाजल-

"भुखना हमरा देख कऽ बक छू-बक छू करै छल हमरा गारि पढ़ै छल। ओकरा लग बकरी कहाँ रहइ।"

भुखना फानि कऽ बाजल- "बकरी हमरा हाथसँ छूटि कऽ भागि गेलइ। तँ हाथमे केना रहितै?"

"तूँ हमरासँ बोता बारेमे पुछलैं किएक नहि? तब ने हाक दैतही।"

"आब लिअ। मूतबै आकि घरमे सुतबै। बजबै-भुकबै आकि नहि। पहिने मलकेसर बाबूसँ औडर लिअ पड़त। हे, आब ई जेठरैती नै चलत।"

"दाबी देखबैत अछि। जेना कोय गुलाम रहइ।"

कुलानन्द बाजल-

"हम तँ पहिने बुझैत रहिऐ जे रजेसरा सबहक मगज उनटा देतइ।"

"काज करै छी तँ मजदूरी भेटैत अछि। कियो मँगनी नै दइ छइ। राजेसरक सभ गप्प साँच छइ।"

"तँ की मलकेसरजी झूठ बजै छै? सभ तँ पंचे छिऐ। केकरा के रोकत। दुनू दिससँ भारी घेंघौज शुरू भऽ गेल छेलइ।"

"कोय धनीक अछि तँ अपना-ले अछि। कमाइ छी तँ ठाठसँ खाइ छी। केकरोसँ माङऽ नै जाइ छिऐ। दाबी कथीक देखा रहल अछि।"

"तँ तोरा सभ गामसँ उजारि देबहक। बुढ़-पुरानकेँ परतिष्ठा घिना देबहक।"

गमछा कपारमे बान्हैत एक-गोरे फनकल-

"झगड़े-लड़ाइ करैक विचार छौ तँ फरिया ले।"

"हे मुँह सम्हारि कऽ बात कर। एनए कोइ कमजोर नइ छइ।"

परभुदास गामक संत छैथ। हाँ..हाँ... करैत ओ आगू एला।

"कहू जे ई पंचैती छिऐ आकि युद्ध। पंचैतीमे जँ अन्याय हेतै तँ हजारो समस्याक जनम भऽ जेतइ। देखलिऐ कहियो लड़ाइ-मारिसँ विकासक काज होइत? गामक संस्कारकेँ एना नै बिसरू। बात आगू बढ़त तँ सभटा राखल-उसारल धन पानि जकाँ बोहि जाएत।"

लबराकेँ नहि रहल गेलइ। बिच्चेमे टपैक उठल-

"रौ भाय बगरा

नहि कर झगड़ा।

खोंताक बच्चा

सेहो छौ कच्चा

सेवलहा अण्डा

सेहो हेतौ गण्डा।

मन थिर कर

नहि तँ हेतौ वितण्डा।"

ताल ठोकैत फेर बाजल-

"आबि जो फरिया ले

नहि तँ गरिया ले।

तूँ उनचास

तँ हमहूँ पचास।

रौ भाय बगरा

हम छी लबरा।"

केते गोरेकेँ हँसी लगि गेलइ। लोक सभ किछु शान्त जकाँ भऽ गेल छल।

“यौ सरपंच साहैब। बात बिगड़ल जाइत अछि। एना नहि हएत।”

“ऐठामसँ पाँच पंच उठि कऽ बाहर जाउ। एकान्तमे विचार करू। आ फैसला सुना दियौ।”

“ठीक छै सएह कएल जाए।”

“देखलीही बँचा लेलियौ।”

“हमरा की बँचाएब ओकरा बँचा लेलिऐ।”

पंचैतीसँ पाँच पंच बाहर निकैल गेल छल। निर्णए की होइत की नहि। सबहक धियान ओम्हरे चलि गेल छेलइ। आपसी कनफुसकी शुरू भऽ गेल छेलइ।

लालकान्त पाछूमे बैसल छल। उचित अवसर देख आगू आएल आ ठाढ़ भऽ बाजए लगल-

“यौ पंच भगवान! हमरा एकटा पंचैती कऽ दिअ।”

झपसूलालक देह सिहैर गेल छेलइ। कातेसँ टपैक उठल-

“अखनी दोसर गोरेक पंचैती नइ हेतौ।”

लालकान्तक आँखि ललिया गेल छेलइ।

“किए ने हेतै? पंचैतीए करैले ने पंच सभ बैसल छैथ। तूँ रोकनिहार के?”

बात आगू बढ़ितै तइसँ पहिने एकटा पंच बाजल-

“अच्छा झगड़ा नै करू। बाजह हौ लालकान्त,की बात छै?”

“की बजबै यौ पंच साहैब। बजितो लाज होइए।”

“बजबहक नै तँ बुझबै केना?”

लालकान्त नजैर उठा कऽ झपसूलाल दिस देखलक आ बाजल-

“पुछियौ झपसूकेँ जे अधरतियामे हमरा अँगना कथीले गेल रहए?”

झपसू बातकेँ काटैत बाजल-

“देखियौ, केकरा ऐठाम के नहि जाइ छइ।”

लालकान्त आँखि गुड़रैत बाजल-

“झपसू, तूँ हमरा बातमे टोक नै दऽ सकै छेँ। हम पुछै छी-अधरतियामे हमरा अँगना की करैले गेल रहए?”

“कोनो चीज चोरा लेलियो? हम कोनो चोर छी?”

“की करैले गेल रही?”

पंच टोकलक-

“जवाब दहक झपसू। कथीले गेल छेलहक?”

झपसू छीना काटैत बाजल-

“हमर अँड़िया बछा रातिमे खुलि गेल रहए। तेकरे ताकैले गेल रहिऐ।”

लालकान्त तामसे ठाढ़ भऽ कऽ बाजल-

“रौ झपसू, झूठ किए बजै छेँ। पंचक सोझहामे..। बजर खसतौ।”

“तँ तोहीं कहऽ जे साँच की छै?”

“तूँ हमरा स्त्रीकेँ किए सोर पाड़ैत रही?”

“झूठ गप्प। तोहर पत्नी स्वीकार करतौ ई बात। ओ तँ साँझोमे हमरे अँगनामे बैसल रहौ। कहै छेलौ हमरा खेतमे हर जोति दिअ।”

“हमरा इज्जतकेँ उघार करबेँ। देखबीही?”

“देखबै की? तोरासँ हम कमजोर थोड़े छी।”

पंच रपटैत बाजल-

“अहाँ सभ मुँहकेँ बन्न करू।”

मनधत्ता धड़फड़ाइत पहुँचल आ जोरसँ हल्ला करैत बाजल-

"हौ जुलुम भऽ गेलै हौ।"

"की भेलै हौ?"

मनधत्ता राजेसर दिस ताकैत बाजल-

"रौ रजेसरा तोहर भाए जागेसर दुनियाँसँ चलि गेलौ रौ।"

"केना भेलै हौ।"

मनधत्ता कानैत बाजल- "हौ, हम आ जागेसर एके नाहपर चढ़ि धार पार करैत रहिऐ। धारमे बाढ़ि आएले रहइ। नाह डुमि गेलइ। केतेक-गोरे डुमि कऽ मरि गेलइ।"

"तूँ केना बचलीही?"

"हमरा एकटा नहवरिया छानिकेँ ऊपर केलक। केतबो तकलिऐ जागेसरक लहाशकेँ, केतौ ने भेटल।"

मनधत्ता फेर कानए लगल।

किछु कालक लेल सभकेँ जेना बघजर लगि गेल होइ। निःशब्द...।

सभकेँ आँखिक सोझहामे जेना जागेसरक मुखाकृति नाचि उठल...। जेना एक-एकटा ओकर गुण मन पड़ि आएल होइ।

मुइलासँ पूर्व लोकमे दोष-गुण केतबो होइ मुदा मुइला उपरान्त लोककेँ ओकर गुणे बेसी स्मरण होइ छइ। जेना सभटा अवगुण मृत्यु अपना संगे नेने चलि जाइ छइ।

तइमे गौआँ-घरूआकेँ जागेसरसँ बेसी फैदे भेटल छेलइ। हरक्षण दसगरदा काजले तैयारे। केकरो ऐठाम कोनो कठिन समस्या आबि जाइ छेलै तँ राति-बिराति हौउ चाहे पानि-पाथल झहरैत हौउ, जागेसर ओइठाम तत्काल पहुँच जाइ छेलइ। कहियो समाजकेँओकरासँ हानि नइ भेल छेलइ। एहेन लोकक मृत्युसँ सबहक आँखि नोरा जाएब

सोभाविके...।

किछु-गोरे एक-दोसरक मुँह ताकि रहल छल आ किछु-गोरेक आँखिसँ दहो-बहो नोर बहि रहल छेलइ।

मुदा किछु एहनो बेकती होइ छै जेकरा अनकर उन्नतिसँ दुख होइ छइ। अपना दिस धियाने नहि रहै छइ। ओइठाम किछु एहनो लोक छल जे मुँह नेरौने दुखितक नाटक कऽ रहल छल।

राजेसर सभसँ कातमे बैस गेल छल। ओ निरंतर उत्तरे मुहेँ ताकि रहल छल। जेना आँखिमे असीम पीड़ा भरि गेल होइ। भीतरे-भीतर औनाइत दुखक धुइआँ। मुहसँ बोल नै फुटै छेलै मुदा कुहैर रहल छल। 'मिले न जगत सहोदर भ्राता।'

राजेसरपर लोकक धीरज भरल शब्दसँ कोनो परभाव नहि पड़ि रहल छेलइ। ओ असथिरेसँ उठल। बुझेलै टाँगमे कोनो शक्ति नइ अछि। तैयो धीरे-धीरे घर दिस टाँग बढ़ि रहल छेलइ।

मलकेसर ठाढ़ होइत बाजल- "रौ तँ हमर पंचैती केना हेतै?"

कालीकान्त रपैट कऽ कहलक-

"ईह, ओनेए वेचारापर दुखक पहाड़ खसि पड़लै आ एकर पंचैती हुसल जाइ छइ।"

सरपंच ठाढ़ होइत बजला-

"अखनी पंचैती नै हएत। वेचाराकेँ जुआनी मौत भऽ गेलइ। पहिने पाँच गोरे जाउ आ धारक कातसँ जागेसरक लहाश ताकि-हेरि कऽ लाउ। अन्तिम संस्कार कएल जेतइ।"

एकाएकी सभ विदा भऽ गेल छल। राजेसरक अँगनासँ कनबाक स्वर आबि रहल छेलइ। रातिक अन्हार जेना आरो सघन भऽ गेल छल।❑

सात

धारक कछेर। पसरल बाउल। केतौ-केतौ कास-पटेरक झाड़-झाँखुड़। ओहीठाम राजेसर ठाढ़ भेल छल। बताह सन दशा। सोचि रहल छल।

'सभ किछो अछि ओहिना,

जहिना छल तहिना।

मुदा ई की भेल,

हमरा लेल, सभ किछु बदैल गेल...?

संगे आएल गौआँ सभ जागेसरक लहाश ताकि-हेरि रहल छल।

चारूभर अगाध बालुका-राशि। केतौ हरियरीक लेश नहि। जेना नदी उजरका साड़ी पहिरने होइ। कात-करोटमे केतौ किछु नै। जेना नदीक नोरसँ सभ किछु दहि-भँसि गेल होइ। चहुँओर पसरल सुन-मसान, ने कोनो बोली ने कोनो गान।

राजेसर सोचलक- एहने दशा आब हमरा भौजियोकेँ होएत। अहिना विधबा स्त्री जकाँ उजरा साड़ी पहिर, आँखिसँ नोर बहबैत, पहाड़ सन जिनगीकेँ नपैत-जोखैत...।

अकुलाएल मनकेँ बहटारैले कनी आगू बढ़ल मुदा फेर ठमैक गेल।

यएह तँ ओ जगह छी। अहीठाम जागेसर भैया कहने रहैथ-

"हौ बौआ, जागि-बेरागि कऽ सुतिहऽ। घरो काते-करोटमे आ रातियो अन्हरिये। बुझिते छहक गामक गेल आ निन्नक सूतल। हमरा बेसियो समय लगि सकैत अछि।"

बेसी समय की लगतै ओ तँ सदा-सदाक लेल छोड़ि कऽ चलि गेला। जेना बोली, बानि, क्रियाकलाप द्वारा मृत्यु समयसँ पूर्वे सूचना दैत

रहै छइ।

राजेसर डबडबाएल आँखिकेँ पोछि लेलक।

छीटपर मुँह उठौने- नाहक भग्न अवशेष। लगै छेलै जेना गोहि शिकारकेँ पकड़ैले लक लगेने होइ।

भविसक बोझ जेना राजेसरकेँ दबने जा रहल छेलइ। मन तरे-तर काछुर काटि रहल छेलइ। माथासँ घामक टघार चूबि रहल छेलइ। ओ धड़फड़ाइत धारक पानि दिस बढ़ि गेल।

“एना धड़फड़ीमे कोनो काज नै करी। आब तूँ जुआन भेलह।”

जेना केतौसँ भाइक स्वर ओकरा कानसँ टकरेलै। आशासँ भरल ओ चारूभर चकोना भेल। मुदा केतौ किछु नै देखा रहल छेलइ। जेना अन्तरमे किछु उधुक्का मारलकै। ओ हिया फाड़ि कऽ कानए लगल।

भाइक संग बितौल एक-एक क्षण मन पड़ि रहल छेलइ। जेकरा परतापे ओ ने डेराइत छल आ ने करवनो चिन्तित होइ छल। मुदा आइ ओकरा बुझाइ छेलै जे ओ असगर भऽ गेल अछि। विल्कुल बेसहारा। सभ किछु बदलल। मन खाली खाली सन। माथपर हाथ लेने ओहीठाम बैस गेल। भविसक भूत सभ आगूमे नाचए लगलै।

केतबो ताक हेरि केलक मुदा लहासक केतौ अता-पता नै चललै। गौआँ सभ असोथकित भऽ कऽ राजेसर लग बैस रहल छेलइ। भूख-पियाससँ सबहक मन आँटो-आँट भऽ गेल छल। कछमछी लगल छेलै मुदा जाएत केना। समाजिक भारसँ घेराएल छल।

कालीकान्त कातेमे बैसल छल, एकगोरे पुछलकै-

“यौ कालीकान्त बाबू, आब कोन उपाए लगतै? दाह संस्कार केना हेतै?”

गमछासँ मुँह पोछैत कालीकान्त बजला-

"आब मरलाहा संगे मरि जाएब से हएत। एते तका-हेरी केलौं मुदा लहाशक केतौ पता नै लगल। साइत धारक पेटमे चलि गेल।"

"उपाए की हेतौ यौ?"

"एहेन स्थितिमे तँ कुशपुतर बना कऽ दाह संस्कारक बेवस्था होइ छेलइ। गामपर चलह। जाति-समाजसँ पुछि लिहक। जेना कहतह तेना करिहऽ।"

"तँ आब चलबाक चाही।"

"हँ, दुपहरिया बीतल जा रहल छइ। आ बाट केहेन अछि से बुझिते छहक।"

मुदा राजेसर किछो नै सुनलक। जेना ओ गप-सप्पसँ बहुत दूर छल। सोचक सागरमे निमग्न। मुँहपर पीड़ा नाचि रहल छेलइ। चुपे-चाप अपनहि नोरकेँ पी रहल छल।

कनी काल तक कालीकान्त ओकरा मुँह दिस तकैत रहला। जेना अपना आँखिसँ राजेसरक हृदैक पीड़ाकेँ नापैत होइ। मुदा आनक पीड़ा आन नहि जान। दुखक पसरैत छाँहकेँ कालीकान्त देख रहल छला। ओ राजेसरक बाँहि पकैड़ हिलबैत बजला-

"रौ राजेसर, एना वौराएल किए छीही। तोरेपर तँ आब पलिवारक सभटा भार छौ। एना जँ करबीही तँ पलिवारक आन लोकक की दशा हेतौ। मनकेँ थीर कर। ऐठामसँ उठ। चल गामपर।"

राजेसर उठैक कोशिक केलक। मुदा टाँग थरथराए लगलै। सौंसे शरीर केराक भालैड़ जकाँ डोलैत रहइ। आँखिक आगू अन्हार। ओइ अन्हारमे लाल-पीअर रेखा...। ओ लुद दऽ बैस रहल।

कालीकान्त समझबऽ-बुझबऽ लगला-

"रौ, संसारक चक्र अहिना चलै छइ। जे ऐ मृत्युभुवनमे आएल

अछि ओकरा एक दिन ऐठामसँ जाए पड़तै। जन्म आ मृत्यु होएब तँ लीला अछि। ऐ लीलामे मनुखकेँ अपन-अपन काज करए पड़ै छइ। भागि कऽ केतए जेबही? लीला केकरा बुत्ते रूकत। राजा, रंक, फकीर कोय मृत्युसँ नहि बँचि सकैत अछि।"

संत परभुदास लगमे आबि कऽ बाजल-

"यौ सदा न फूलै तोड़ी, सदा न सावन होय।

सदा न जौवन थिर रहे, सदा न जीबे कोय।

जे ऐ संसारसँ चलि गेल से आपस नै आबि सकैत अछि। सभ गोरे मिलि कऽ कानब तैयो घूरि कऽ नै आउत।"

राजेसर नोर पोछैत बाजल-

"हे यौ, अहूँ सभ ठीके कहै छिऐ। मुदा सभ किछुकेँ एकटा समय होइ छइ। समयसँ पहिने एहेन बेथा भऽ जाएत से कहियो मनमे नै आएल रहए। अहीं सभ सोचियौ, पलिवारक भार, धिया-पुताक भार आ भौजीक दशा देखै छिऐ तँ मोन होइए जे हमहीं मरि जैतौं से नीक होइत।"

परभुदासकेँ बजए पड़लै-

"जिय बिनु देह नदी बिनु वारि,

वैसहिं नाथ पुरुष बिनु नारी।

ओकरा तँ ठीके भारी विपैत पड़ि गेलइ।"

कालीकान्त सम्हारैत बजला-

"से तँ हमहूँ सभ बुझै छिऐ जे जुआनीक मौत बड़ अधला। मुदा की करबहक। ऊपरबलाक जे इच्छा छेलै से भेलइ। ओइ सर्वशक्तिमानक सोझा केकर वश चलतै। संतोष तँ करइ पड़त।"

किछु काल सभ कियो गुम पड़ि गेला। जेना एक-दोसरक पीड़ाकेँ नापि-जोखि रहल होथि।

कालीकान्त ऊपर मुहेँ तकैत बजला-

“चलह, बड़ बेर भऽ गेलइ। आगूक गप्प गामपर सोचल जेतइ।”

परभुदास पाँजमे पकैड़ राजेसरकेँ ठाढ़ केलक आ बाजल-

“मनकेँ थिर करह आ डेग उठाबह।”

“होहिं वही जो राम रचि राखा।”

आगू राजेसर आ पाछूसँ गौआँ सभ मुँह लटकौने विदा भऽ गेल छल।

मनुखक ह्दैमे दुख सहबाक असीम क्षमता रहिते अछि। केहनो भारी दुखकेँ रसे-रसे सहि लैत अछि।

राजेसर सोचि रहल छल आ उड़ैत धूराकेँ देख रहल छल। पता नै लगि रहल छेलै जे हवा संगे धूरा अछि आकि धूरा संगे हवा। मुदा धूराक मध्य बनैत आकृति तुरन्तेमे बिगैड़ जाइ छेलइ। ओइ बनैत आकृतिक मध्य राजेसर अपनाकेँ तकैत-तकैत हेरा गेल छल। ❑

आठ

भोरेसँ चारूभर अनघोल भऽ रहल छल। पुरुखमे आपसी चरचा आ स्त्रीमे फुसराहैट। पूरे गाम दलमलित। लोक सभ गामपर सँ ससरल जा रहल छल। चुपेचाप, अनठौने। गाम-घरक कोनो घटना बड़्ड तेजीसँ पसरैत अछि। जेना आगिक कुकुआहा एक घरसँ दोसर घरकेँ अपना लपेटमे लैत बढ़ैत अछि। तहिना एक कानसँ बियाबान, सबहक पेटमे बात थोड़े पाचै छइ। केते-गोरेकेँ तँ पेटमे बात बसात जकाँ औनाए लगै छइ। जँ जल्दी नहि निकलौ तँ...।

कालीकान्त अपने दलानपर ओंगठल छला। धिया-पुता ओकरा देहपर लटकल छल। किन्तु ओकर धियान ओइ औरतियाक गपपर छेलै जे लगेमे बैसल छेलइ।

केतेको गप पंचकेँ एकान्तीमे कहल जाइ छइ। खुशामद आ पैरवी केलापर पंचो न्याय-अन्याय करैले तैयार भऽ जाइ छइ। जखैन पैरवी केनिहार पंचक मनोनुकूल हुअए तखैन तँ...।

कालीकान्तकेँ किछु एहने सरस गप औरतिया सुना रहल छेली। तखैने सरपंच साहैब आबि गेला। कालीकान्तक आँखिक इशाराकेँ औरतिया बुझि गेल। ओ चट-दे नुका कऽ कोनटामे ठाढ़ भऽ गेल।

कालीकान्त खखसैत कनी जोरसँ बजला-

"यौ सरपंच साहैब, भोज-काजक इन्तिजामे राजेसरकेँ दिक्कत भऽ रहल छइ। कनी ओम्हरो धियान दियौ।"

सरपंच साहैब ठमकैत बजला-

"यौ, ओनए गाम दलमलित भेल छइ। अहाँकेँ भोज छूटि रहल अछि। अहाँकेँ तँ धियाने दोसर दिस अछि।"

चकित होइत कालीकान्त बजला-

"हमरा किछो पता नै अछि। की भेलै से?"

"लरेनाक स्त्री बीख खा लेलकै, रातियेमे मरि गेलइ। थाना खबैर पहुँच गेल छइ। थोड़े काल मे दरोगा गामपर पहुँचत।"

"नेता लरेना ऐठाम यौ?"

"हँ यौ, अहीबेर तँ सभ नेतपनी घोंसड़तै।"

"यौ नेता फनकबाज छइ। केहेन-केहेन अफसरकेँ मुट्ठीमे रखने छइ। देखै दिऐ जे बड़का लोकक गाड़ीकेँ हाथक इशारासँ रोकि दइ छइ।"

“धूर ई कोन बड़का बात छइ। घूसखोरसँ काज करबौनाइ तँ सबसँ असान... ।”

“नइ यौ सरपंच साहैब। ओना जे कहियौ मुदा नेतबा छै बड़ा सोरसियल।”

“जँ सोरसियल अछि तँ मुखिया जीक कथी लऽ पमोजी करैत अछि।”

“की करतै अपना बुते नै सम्हरल हेतइ।”

“तब कोन सोरसियल भेलै?”

“अखनी केतए अछि नेता?”

“साइत डागदर संगे फदर-फदर कऽ रहल अछि।”

“डागदरकेँ देखै छी पच्छिम मुहेँ जा रहल अछि।”

“पूछताछसँ बचबाक लेल केतौ चलि देने हएत।”

“यौ सरपंच साहैब, अहूँ तँ साइत ओही डरे ससरल जा रहल छी।”

“नै यौ, हम तँ पूबरिया बाधक खेत देखैले जा रहल छी।”

तीन-चारिटा जुबककेँ जाइत देख दुनू गोरेक धियान ओनए चलि गेल। पढ़ल-लिखल बेरोजगार युवक सभ छुट्टीमे गाम आएल छल। आपसमे गप लड़बैत चौक दिस जा रहल छल।

“एकटा गप नै बुझलिऐ यौ। लरेनाक स्त्री बीख खा लेलकै आकि अन्न-पानिक संगे खुआ देलकै?”

“खेलकै आकि खुआ देलकै, जे भेल होइ। मुदा मरि गेल से तँ साँच छइ। एकर दोखी तँ लरेना आ ओकर पलिवारे भेलइ।”

“जँ अपने खेने होइ तब केना कऽ दोखी हेतै?”

“परिवारमे तँ परोछ रूपसँ तेतेक दुख आ कष्ट दइ छइ। बारम्बार प्रताड़ित करै छै जे महिलाकेँ बेवस भऽ कऽ आत्महत्या करए पड़ै छइ।

जँ एहेन परिस्थिति पैदा केने होइ तँ दोख केकर भेलै?”

“ठीके, पुरान विचारक लोक सबहक नजैरमे महिलाक कोनो मोल नहि छइ। ओहन लोक हरदम महिलापर दाब-चाप देखबैते रहै छइ।”

“ऐ शोषण आ अत्याचारक कारणे केतेक उपद्रव होइ छै आ समाजो पछुआ जाइ छइ।”

युवक सबहक गप सुनि कालीकान्त तमसाइत बजला-

“अपना सभकेँ देख कऽ केहेन अँतड़ीमे लगैबला बात बजै छइ। सुनै छिऐ आकि नहि?”

सरपंचो साहैब तमसाइत बजला- “सुनबै की, ई सभ गाममे केकरो मनुख बुझै छइ। ई छौड़ा सभ अपनाकेँ सभसँ बड़का काबिल बुझै छइ। आ जाने छै ढोंढ़क मनतरो नहि।”

भुखना कम पढ़ल-लिखल रहितो देश-विदेशक बात बुझै छल। ओ बाटक कातमे ठाढ़ भेल सभ गप सुनि रहल छेलइ। नै रहल गेलै तँ बाजल- “ई सभ किछो नहि बुझै छै तँ आइ.ए; बी.ए. पास केना केलकै यौ?”

कालीकान्त नै बजला मुदा सरपंच चट-दे लोकैत बजला-

“रौ, परीक्षा पास केनेसँ कियो काबिल नइ भऽ जाइ छइ।”

“तब कथी केलासँ होइ छै?”

कालीकान्तकेँ बजऽ पड़लै-

“बड़ काबिल छै तँ एना बौआएल किए घुरै छौ। कोनो नीक नोकरी करितौ ने।”

“अहाँ नोकरी केनिहारकेँ काबिल बुझै छिऐ। ईह! ई कहियौ जे हमर बेटा नै पढ़लक तँए मने-मन जरै छी।”

“हमरा सभ किए जरबै। कोय अपना बरदकेँ नाँगैरेमे

केकरोपनाथत ओइसँ लोककेँ की बिगड़तै।"

सरपंच साहैब बातकेँ आगू बढ़बैत बजला- "हे यौ, दू साल जँ उपजा नै होइ तँ सभ नवावी घोंसैर जेतइ। उपजा जँ होइत रहै तँ पढ़ौनाइ कोन बड़का बात छइ।"

भुखना पट-दे बजल- "जँ एतेक सस्ता गप छै तँ अहूँ अपना बेटाकेँ पढ़ा लैतौं किने।"

सरपंच साहैबकेँ जेना भीतर तक छुबि देलकैन तँए ओ गुम्हरैत बजला- "ई छौड़ा सभ अकासेपर चलता। हे रौ, तोरा कोइ बजेने छेलौ जे लबर-लबर करै छेँ?"

कालीकान्त फटकारैत बजला- "हे रौ, तूँ ऐठामसँ जेबेँ की नहि।"

"जाएब किए नै। साँच बात अहिना लगै छइ।"

"ई किएक जाएत हमहीं चलि जाइ छी।"

कहैत सरपंच साहैब तेजीसँ बाध दिस विदा भऽ गेला। पदचापसँ निकलैत क्रोध! जोड़ लगैत परबा डेरा गेल आ फड़फड़ाइत उन्मुक्त अकास दिस उड़ि गेल।

मुदा सरपंच साहैबक धियान ओमहर नै छेलैन। ओ अपना मनसँ लड़ैत बढ़ल जाइ छला। ❑

नौ

गाम कनी शान्त जकाँ भऽ गेल छल। तैयो लोक मने-मन डेराएले छल। भितरिया डर निकैल जेना असान थोड़े छइ। ओ तँ भीतरे-भीतर कुही करैत रहै छै आ थकुचल जिनगी चलैत रहै छइ। संगे हहास मारैत

सभ किछकेँ झँपने बढ़ैत रहै छै, बहादूर सभ।

ओना अही बीचमे तीन-चारि बेर थानेदार आएल छल। मुदा केकरोपकैड़ नै पौलक। घटनोक दिन सिपाहीक एलासँ पहिनहि लहास जरि गेल छेलइ। मुदा जरलोहो हड्डी सिपाही सभ बीछि कऽ नेने गेल छल।

डर तँ सभकेँ बनले छेलै जे केकर नाम दारोगाक डायरीमे नोट छै आ केकर नहि। एहने समयमे लोक सभ मनमे सैंतल दुसमनी सधबैत अछि। ऐ कारणे सभ मने-मन आतंकित।

साँझ पड़ैमे किछु पल शेष छेलइ। गोसाँइ डुमानी-बेर। राजेसरक दुआरिपर लोक सभ जमा भऽ गेल छल। आइए जागेसरक सराधी भोज छेलइ।

ओना राजेसरक स्थिति भोज करबाक जोग नै छल परन्तु सर-समाजक उड़न्ता गप सुनलकै। कोइ सोझहामे तँ कोइ परोछमे। वेवश भऽ कऽ भोज करए पड़लै। जाति-समाजसँ भागियो तँ नै सकै छल।

लोक सभ लोटा लटकौने पैछला भोजक चरचा करैत आबि रहल छल। राजेसरक दुआरिकेँ खरड़ासँ साफ कएल गेल छेलइ। एक-गोरे कुकुर आ कौआकेँ लाठीसँ भगा रहल छल।

किछु भोजक पंच सभ कोणटामे ठाढ़ भऽ कऽ गप लड़ा रहल छल।

“दुआरि नीकसँ साफ नै केलकै। हौ, सकरता नहि छेलै तँ कथीले भोज केलकै।”

“हे यौ, की कहब कण्ठ मोकि कऽ भोज लेलकै। किछ मुँहपुरुखा सबहक विचार भेलै जे ऐ भोजमे एकरा डाँड़ तोड़ि दहक। सभ नेतागीरी अपने छुइट जेतइ। जन-मजदूर पाटी लऽ कऽ बड़ी जोरसँ गरजैत रहै छइ। भोजमे करजकेँ बोझ पड़तै आ ओकरे सधबैत जिनगी बीत जेतइ।

मुखिया बनबाक सपना कहियो पुरा नहि हेतइ।"

दोसर-गोरे बाजल-

"हौ, जे भोज नै करए से दालि खौब सुड़कए। लोगक ऐठाम जे भोज खेने छै से करजा कहिया सधौते। भोज नहि करतै तँ उद्धार केना हेतै?"

"हँ, हँ...। भोज तँ सभकेँ करबाके चाही। आखिर मुक्ति केना मिलतै।"

"हँ यौ, समाजोक तँ एकटा निअम-काइदा छै तेकरा तोड़बाक नहि चाही।"

"एना पुरान लकीरक फकीर बनल रहब तँ मरैत रहू ओही तरमे आ लदने रहू। बचबाक अछि तँ परिवर्तन करू।"

"झगड़ा नै करू। बैसैले चले-चलू।"

जातिक मानिजन हाथमे लोटा नेने पंच सबहक बीचमे आबि कऽ बाजल-

"की यौ, सभ-गोरे आबि गेलौं?"

मलकेसर टाँहि दऽ बाजल-

"हमरा सभ ठीकेदारी नेने छिऐ- सबहक। जे नहि आएल से पाछू खाएत।"

"हँ, ठीके छइ। सभ किछो तैयारे छइ। बैसू पाँतिसँ।"

सुनिते, सभ-गोरे चटाचैट बैस गेला।

लरेना नेता कातेमे ठाढ़ भऽ कऽ सरपंच साहैबसँ कनफुसकी कऽ रहल छल। गप सुनैले डाक्टर लगमे सहैट कऽ गेल।साधारण दुख-बेमारीक इलाज करै छल। अंगरेजी जानै छल तँए गामक लोक ओकरा डाक्टरे साहैब कहै छेलइ। लरेनाक स्त्री जखैन मरैत रहै तखैन डाक्टरोकेँ

बजौल गेल रहइ। मनमे डर पैसल रहै जे कहीं मोकदमा मे नाम ने पड़ि गेल हुअए। शंका समाधान करैले लरेनासँ पुछलकै-

"की यौ नेताजी, केशक की हाल छै?"

डेराएल रहलाक कारणे नेता मिरमिराइत बाजल-

"अखैन तँ ठीके छइ। दरोगाजी किछ डिमण्ड केने छइ।"

"यौ, सौस-ससुरसँ मिलानक गप करू। ठीक रहत।"

"देखियौ तँ आगू की होइ छइ।"

सरपंच साहैब बैसल लोक दिस नजैर उठबैत बजला- "यौ भात परसल जा रहल छइ। कोनो नीकठाम अपनो सभ बैसू।"

पंच सभ पाँतिमे बैस गेल छल। बारीक सभ भोज्य पदार्थ परसैत अपसियाँत। भात-दालि, तीमन-तरकारी, पापर-अँचार आ चटनी।

लोक सभ भोजनक सुआद लऽ रहल छल। लरेना नेता किछ बाजए चाहलक तखैने मनधत्ता दौगैत आगूमे पहुँच गेल। मनधत्ता चौकपर साग-सब्जीक छोट-छीन दोकान करैए। ओ अपसियाँत होइत लरेनाकेँ कहलक-

"यौ नेता, जल्दी भागू नहि तँ पकड़ा जाएब। दरोगाजी एक दरजन फौरसक संग आबि रहल अछि।"

लरेना फानि कऽ ठाढ़ होइत पुछलक- "कोनेसँ रौ?"

"पच्छिमसँ गाम लग आबि गेल अछि।"

लरेना अँइठे हाथे नुआँ समटैत पूब मुहेँ भागल।

कोइ कातसँ टाँहि दऽ बजल- "चाहे छुटए संग साथ, नहि छोड़ी आगूक भात।"

लरेनाकेँ भागैत देख ओकर दियाद भेलवा आ पीअर बाबाक कान ठाढ़ भऽ गेलइ। भेलवा अपना बगलमे बैसल पीअर बाबाकेँ पुछलकै-

“हौ बाबा, नेतबा किए भागलै?”

पीअर बाबा मुँहक भात घोंटैत बजल-

“आबैत काल टीटही लगल रहइ। हमरा शंका होइ छौ। साइत पुलिस-दरोगा आबि रहल छइ।”

“साँचे हौ? अपनो सभकेँ पकड़तै?”

“हँ रौ, लहास जरबैमे तँ अपनो सभकेँ संग केने रहइ। केशमे नाम हेबे करतौ। सुनै छिऐ- थानापर बड़ पिटान करै छइ। जान नै बँचतौं। कोनो तरहेँ भाग ऐठामसँ।”

भेलवा हरमुठाह लोक। आगू-पाछू सोचैबला कोनो बुधि नै। डरसँ आँखि नोरा गेलइ। फनफनाइत ताकत घटि गेलइ। किछु दिन पहिने ओही गामक सुपड़िया चोरकेँ पकैड़ थानापर लऽ गेल रहइ। राति भरि नंगी मरचायक मसालासँ ओकरा सेवा कएल गेल रहइ। ई गप भेलवाकेँ बुझले छेलइ। ओ मनेमे सोचलक- चण्डलबा जँ आइ हमरा पकड़त तँ नै जानि जे कोन दशा करत।

डरसँ ओकरा आँखिक आगू अन्हार भऽ गेल छेलइ। कोने भागत बाट सुझबे ने करइ। ओ सोझे पाँते दिस पड़ाएल। केतेक-गोरेक पातपर लात दैत,भातकेँ खिचाड़ैत मलकेसरक लग जा कऽ धाँइ-दे खसल। ओकर ठेहुन मलकेसरक मुहेँमे लगल। मलकेसर चितंगे खसल, मुँह पकैड़ बपराहैड़ काटए लगल।

लोक सभ हो-हल्ला करए लगला। भेलवाकेँ बुझेलै- साइत दरोगाजीआबि गेल।ओ फुरफुरा कऽ उठल आ लरेनाक पछोड़ धेने भागल।

मलकेसर कुहरैत उठल आ गरियबैत बाजल-

“के छेलै रौ सार, हौ बाप, जान नहि बाँचऽ दैत। किछ दिन पहिने तँ एकटा अगत्ती भुखना डाँर सरकौने छल। आइ मुहोँ भंगठा देलक सार

भेलवा।”

गरदा झारैत फेर बजल-

“हे रौ फतरिंगा सभ, सामरथी नै रहै छौ तँ बौहकेँ बीख खिया कऽ किए मारै छीही। हे रौ सार, रही घुरघुरा आ उखाड़ी बिचलाघर खाम्ह।”

भारी घोल-फचक्का होए लगल। ओही हल्ला-फसादक मध्य केतेक-गोरे ससरए लगल। जेकर केशमे नाम हेबाक शंका रहै ओ दोगे-दोग बिला गेल। पीअर बाबा पोखैर दिसक लाथ लगा विदा भऽ गेल। ओकरा पाछू डाक्टर साहैब गप लड़बैत चलि देलक।

पाँतमे जगह-जगह स्थान रिक्त भऽ भऽ गेल छल। बँचल लोक सभ भोज खा रहल छल। मुदा बीच-बीचमे ओइ खाली जगहकेँ देखैत कुता सभ आपसमे गुम्हरए लगल। जाबे लोक ‘हाँ-हाँ’करै ताबे कुकुर सभ पाँतमे ढुकि गेल। नष्ट-नष्ट कहि सभ-गोरे फानि कऽ ठाढ़ भऽ गेल। धिया-पुता पातमे लात दैत भागि गेल। गधकिचन मचि गेल। किछसँ किछ बजैत लोक सभ घर दिस विदा भऽ गेल छल।

राजेसर दुआरिक कातमे ठाढ़ भेल छल। वेचारा केतेक करजा-बरजा करैत भोजक ओरियान केने छल। सेहो समाजकेँ पाइठ नहि भऽ सकलै। ओकरा आँखिसँ दहो-बहो नोर खसि रहल छल। मुदा ओइ नोरकेँ देखैबला कियो नहि छल।

एक-गोरे बाजल-

“भोज की करत। जश नहि भेटलै।”

दोसर-गोरे टोनलक-

“ऐमे केकर दोख?”

रोजेसरक देह जेना काठ भऽ गेल छल। ओ शून्यमे निहारि रहल छल। ❑

दस

लोक सभ जा रहल छल- गहवर घर दिस। असनान केने हाथक डालीमे फूल-अछत,लड़ू-पान भरल। आइ भगतपर गोरैयाक सवारी हेतइ। ई बात सुनिते लोककेँ छुटलो दुख-बेमारी फेरसँ जेना उपैक गेलै, भीड़सँ तहिना लगै छल।

परिवारक पढ़ल-लिखल, नव लोक सभ रोकि रहल छल। 'ई पुरनका विचारकेँ छोड़ू। ओझहा-धाईममे फँसि कऽ रोगीक जान मारि देबइ।'

मुदा कोइ नहि सुनै छेलइ। ओकरो सबहक अपन तर्क रहइ।

'ईह, कहै छै जे- लव लव जोगीकेँ...। हौ, केतेक बेर तँ जे बेमारी डागदरसँ नै ठीक भेलै तेकरा ओझहा-धाईम ठीक केलकै। ओते टको-पैसा रहै तब ने ओते महग दवाइ कीन सकब। एने घरमे घिंचै छै मुसरी डन आ ओनए...।'

राजेसरो अपना भतिजाकेँ कान्हपर लाधने जा रहल छल- गहवर दिस। केतेक दिनसँ ओकर बेमार भातिज कौहैर काटि रहल छेलइ। आब तँ आँखियोक रंग बदलल सन बुझाइ छेलइ। साधारण दवाइ-विरोसँ कोनो असैर नै होइ छेलइ। ठीक ढंगसँ इलाज केना करत। टका-पैसाक बिल्कुल अभावे। टका तँ टटके भोजमे उड़ि गेल रहइ।ओ बुझै छल- जे ओझहा-धाइमसँ किछो नइ हेतइ। मुदा दोसर उपाए की करत। अभावक कारणे नीक डागदरसँ इलाज केना होएत? वेवश भऽ गेल छल। ऊपरसँ माए आ भौजाइक अनुरोधकेँ केना टारैत।

बरिसोसँ बीनल जालकेँ तोड़नाइ की असान छइ। ओ तँ तेतेक

मजगूत भऽ गेल रहै छै जे ओकरा तोड़ैत तोड़ैत बेकती स्वयं टुटि जाइत अछि।

गहवरक अँगनीमे सभ गोरे जमा भऽ गेल छल। एक कातमे भगैतिया सभ मिरदंग आ झालि लेने तैयार। भीड़मे स्त्रीगणक संख्या पुरुषसँ बेसी। बगलमे किछ गोरे हाथ जोड़ने थरथरा रहल छल। जेना तरे-तर कियो ओकरा सबहक देहकेँ हिला रहल छेलइ।

बरिसोंसँ ठमकैत आ दौगैत बिसवासक आवरणकेँ विच्छिन्न करब की असान छै? ओकरा तँ मात्र हिलबै आ डोलबैले ज्ञानक जोरगर बसात चाही। नहि तँ चलैत रहत तरे-तर जेना मन्द पवनसँ डोलैत पात।

आइ गहवर घर चिकनि माटिसँ निपल-पोतल छल। एकटा कोनमे फूल-अछत आ दीपक ढेरी। दूधक ढारसँ भीजल-चिपचिपाइत निचला भूमि।

धियान लगौने बैसल भगत। देवताक आवाहन कऽ रहल छल। भगतकेँ आँखि खुललै। एक चुरु गंगाजल देहपर छिट लेलक। आँजुर भरि फूल गहवर दिस चढ़ौलक आ फेर ध्यानस्त भऽ गेल।

मिरदंग आ झालि बजए लगल।

'तृंग धिग ध तृंग धी... ।'

भगैतिया सभ भगैत शुरू कऽ देलक।स्त्रीगणक गीत वायुपर चढ़ि आसमान दिस चलि देने छल।

"कोन दिन हे काली, तोरो जनम भेल
कोन दिन भेल छठिहार।
शनि दिन हे काली, तोरो जनम भेल
ओकरे छबे भेल छठिहार।
करिया कुकुरिया हे काली

बाटे सुतै छै डेढ़िया
चली गेल बिजुवन शिकार।
एक बने झोरलह हे काली
दोसर वने झोरलह
तेसर वने उठल शिकार।
हरिनो नै मारै काली तितिरो नै मारै
बीछि-बीछि मारै छै मयूर।
हकन्न कानै हे काली वनकेँ मयूरनी
बारि वयस हरै छैँ सिनूर।
जानो नहि मारबौ मयूरनी
परानो नहि हतबौ
पंखा लेबौ गोरैयाक सनेश
से हरने जेबौ सबटा कलेश...।"

भगतपर देवताक सवारी भऽ गेलइ। ओ देह-हाथकेँ ऐंठी-मोचार केलक आ मिरदंगक तालपर कुदए लागल। कुदैत-कुदैत ठाढ़ भऽ गेल आ हाथ उठा कऽ भारी अवाजमे बजल-

"हैत बाबू, सत्त जवाब पड़ै छह।"

लोक सभ चुप भऽ गेल छल। भीड़मे ठाढ़ भेल मुँहपुरुख सभ चटदनी आगू आएल। किछ-गोरे हाथ जोड़ैत बाजल-

"हौ महराज, कनी हमरो सभपर धियान राखहक। वाड़ी-फूलवारीकेँ असिरवाद देने जाहक।"

भगतकेँ मुहसँ कठोर शब्द निकलल-

"विनाश कऽ देबौ। अगराही लगा देबौ।"

मनधत्ता मुड़ी डोलबैत बाजल-

“बड़ खिसियाह छइ। कोन देवता छिऐ यौ?”

दोसर-गोरे बाजल-

“केतेक गनबहक। बेरा-बेरी सभ देवता औते।”

“हँ यौ, लोगे जकाँ देवतोक जनसंख्या तँ बढ़ले हेतइ।”

एक-गोरे कल जोड़ने थरथराइत आगूमे आएल-

“यौ महराज, एतेक किए खिसियाएल छिऐ?”

हाथ फड़कबैत भगत बाजल-

“तूँ सभ कोठा-सोफामे रहै छेँ आ हमरा-ले टुटली-मरैया। हमर ताल देखबीही?”

एके स्वरमे केतेको-गोरे बाजल-

“नहि यौ महराज, एना नै करियौ। गलती-कुगलती माफ करियौ। अहूँक घर बनि जेतइ।”

भरल बाटी दूध। भगत गट-गट पीबए लगल।

भुखना कातमे चुक्की माली बैसल छल। आँखि निरारि कऽ तकैत बाजल-

“रौ तोरी-के, भगता सौंसे बाटी दूध पी लेलकै।”

मोचन लाठीक हुराठ ओकरा पीढ़ीपर लगबैत बाजल-

“बजैक होश नै छौ। कही ने जे बाबा छाँकी लेलकै।”

भुखनाकेँ रीश उठि गेल छेलइ। ओ फोंफियाइत बाजल-

“बड्ड पकिया भगता छौ तँ हमरा मुठ्ठीमे की छै- कहि देतौ।”

“हे बेसी फट-फट नहि करी। जँ कहि देतौ जे तोरा मुठ्ठीमे गहुमन साँपक पोआ छौ। तब की हेतौ?”

"तइसँ की भऽ जेतै?"

"मुठ्ठीमे राखल चीज बदैल कऽ गहुमन साँप बनि जेतौ आ डँसि लेतौ। तब बुझबीही जे अरारि केलासँ की होइ छइ।"

"की हेतै? तू मरबहक?"

"हँ हौ, कहे भगता पुराबै देवता।"

किछ-गोरेक देह सिहैर गेल छल। केते-गोरे बिच्चेमे ठाढ़ भऽ गेल छल मुदा आँखि चारूभर घुमि रहल छेलइ। भलचनकेँ दूटा स्त्री छेलै तँए केते-गोरे दू बहुआ कहइ। ई गप्प सुनिते भलचनक देहमे जेना आगि लगि जाइ। तँए वेचारा कातेमे ठाढ़ भऽ सोचि रहल छल।

'पहिल स्त्रीमे धिया-पुता नहि भेल तँए ने दोसर स्त्रीसँ चुमौन करए पड़ल। ओकर जवानीक सुन्दरता देख लोक जरैए किए?

मुदा भलचनक मन आ देह बुढ़ा गेल रहइ। जवान स्त्रीक चलब-लड़ब देख मनमे हरदम शंका बनले रहइ।

होइत रहै छै मनमे बेवधान,

शक्ति, शंका आर समाधान।

आइ भलचनक लवकी स्त्री डाली लगौने छेली।

हल्ला–गुल्लाक कारणे लोक सभ उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेल छेलइ। भलचनक लवकी स्त्री गमकौआ तेल लगौने बिच्चेमे ठाढ़ भेल छल। कुलानन्द सहटैत-सहटैत लग चलि गेल। ओ भलचनक स्त्रीकेँ पाछूसँ सटि ठाढ़ भऽ गेल छल। अनठौने, अनबुझु जकाँ दोसर दिस तकैत। बुझै जे भीड़मे के देखत। ओनए दुनूकेँ सटिया कऽ ठाढ़ भेल देख भलचनक पारा गरम हुअ लगलै। ओकरा बुझेलै- जे औरतियोकेँ यएह मन छै तब ने देहमे एतेक सटल छै आ किछो नहि बजै छइ। गमकौआ तेल लगबैक मतलब की?

भलचन तामसे थरथराइत लोककेँ ठेलैत-ठालैत अपना स्त्रीक लग चलि गेल आ लपैक कऽ ओकर झोंटा पकड़लक आ मुक्का दैत बाजल-

“गे बेहया, तोरा कोन बियाधि छुबने छौ। निकल ऐठामसँ नइ तँ गत्तर तोड़ि देबौ। तोरा की बुझि पड़ै छौ जे हम किछो नइ बुझै छिऐ।”

कहैत तरातैर चमेटा मारि रहल छल। कुलानन्दकेँ नहि रहल गेलै ओ भलचनकेँ कण्ठ पकैड़ पटैक देलकै। भलचन केंकिया उठलै। राजेसर सभ खेला देख रहल छेलइ। ओकरा बरदाससँ बाहर भऽ गेलइ। पाछूसँ गेल आ कुलानन्दकेँ उठा कऽ पटैक देलकै। जाबे लोक हाँ-हाँ करै ताबे चारि चमेटा लगा देलकै। दुनू गोरेकेँ पकैड़ लोक सभ हाटोलक।

समाजक बीचमे कुलानन्दकेँ मारि लगि गेल छेलइ। ओकरा बुझाइ छेलै जे इज्जत उतैर गेल। बाघ जकाँ गुम्हड़ैत बाजल-

“रजेसरा,गौआँक सोझहामे जे हमर बेइज्जती केलही। एकर बदला हम लेबे करबौ। एहेन दशा करा देबौ जे इएह गौआँ-समाज तोरापर थूक फेकतौ।”

राजेसर बाजल-

“सुनै छिऐ यौ एकर गप्प। समाजक बीचमे एकटा बुढ़-पुरान बेकतीकेँ मारै छेलइ। कुकरमी किरदानी केहेन करै छेलै, कहै छी- एकरा कहियौ, ऐठामसँ चलि जाएत नै तँ बात बढ़ि जाएत।”

“ऐबेर तोरा मुइलहा सभसँ भेँट करा देबौ। चिन्ह ले हमरा।”

कुलानन्द ओइठामसँ चलि देलक।

किछु लोक भलचन आ ओकरा स्त्रीकेँ शान्त केलक। लोक रंग-बिरंगक विचारमे डुबि गेल छल। अपन-अपन तर्क-विचार।

भगतजीक अवाज सुनिते लोक सभ शान्त भऽ गेल छल। एकाएकी गोहारि हुअ लागल। गीतहारि सबहक गीत फेर शुरू भऽ गेल

छेलइ।

“आजुक दिनमाँ सुदिन या गे माय
मधुपुर भऽ गेल उछाही
कि गोरैया जसो मंत्र हे
कोन काते कात रहे बाँसक बिटिया गे माय
कोन काते चिरब कामी
कि गोरैया जसो मंत्र हे... ।”

जेकरा सबहक गोहारि भऽ गेल छेलै ओ सभ एका-एकी विदा हुअ लागल। गामक शिक्षित बेरोजगार संतू आ फुलेसर ओही बाटे चौक दिस जाइ छल। लोकक भीड़ देखते दुनू गोरे ठमैक गेल। तखैने राजेसरो अपना भातिजकेँ लेने भीड़क मध्यसँ निकलल।

ओकरा देखते फुलेसर सहैट कऽ लग गेल आ हँसैत बाजल-

“ही... ही... ही... की हौ राजेसर, तहूँ ऐ पुरना बातपर बिसवास रखने छहक। लोक केतए-सँ –केतए पहुँच गेलइ।”

राजेसर वेदना भरल आँखिसँ ओकरा दिस तकैत बाजल-

“की करबै यौ? केना हेतइ?”

फुलेसर बिच्चेमे बाजल-

“पता नै ई अंध-बिसवास गाम-घरकेँ कहिया तक घेरने रहतै आ अपटी खेतमे लोक परान दैत रहतै। हौ अनका की कहबे हमरा तँ अपने काकी ईहे कारणे आन्हर भेल छइ। एनए मेडिलक विज्ञान केते ऊपर पहुँच गेल छै से तँ बुझिते छहक।”

“सभटा बात बुझै छिऐ यौ फुलेसरजी, मुदा की करबै। टका-पैसाक अभाव छइ। डागदर लग छुछे मुहेँ काज चलतै।”

“लोक तँ जन्म लैत अछि- संघर्ष करैले। कोनो रोजगर ठाढ़ करए

पड़तह। ओना काज थोड़े चलै छइ।"

"खेती-पथारीक हाल देखते छिऐ। दोसर बिन पाइकेँ कोन रोजगार करबै ऐठाम?"

"सुनै छिऐ- बाहरोसँ लोक बहुत टका-पैसा कमा कऽ अनैतअछि।"

-कहैत फुलेसर चौक दिस चलि देलक। राजेसर गुनधुन करैत अँगना दिस विदा भऽ गेल। मुदा मनमे शंका, समस्या आ समाधान लाधल छल। ❑

एगारह

कृष्ण पक्ष। चारूभर अन्हरिया पसरल छल। किन्तु किछ एहनो घर छेलै जेकर इजोत देख अन्हार दूरेमे ठमकल छल।

चाहे रूप परिवर्तन जेतेक भऽ जाए मुदा अन्हार आ इजोतक संघर्ष चलिते रहै छइ। अन्हार अपना जीतपर अट्टाहास करै छै आ मदमे डुमि जाइ छै किन्तु इजोतक धियान जीत आ हारिपर नहि रहै छइ। ओ तँ अनवरत संघर्ष करैत रहै छइ। उजियारीक लेल जरैत रहै छइ। आ कहैत रहै छै-

"हम जरैत रहब, हम मरैत रहब मुदा अहाँक लेल, इजोत करैत रहब।"

सरपंचक दुआरिपर कृष्ण अष्टमीक मेला लगल छेलइ। ओकरे दरबज्जापर नाचो हेतइ। अन्हार रहितो लोक ओनैभर ससरल जा रहल छेलइ।

धान रोपल भऽ गेल छेलइ। धनरोपनीक बाद लोक अपनाकेँ निचेन जकाँ बुझै छल। नाच देखैले सभ जा रहल छल। मरद-पुरुख गप छाँटैत आ औरतिया सभ संगोर करैत।

मपैतलालक स्त्रीकेँ सभ डाइन कहै छेलइ। ओकरा कोय नै संग करै छेलइ। दोसर कारण बजैमे सेहो ओ चरफड़ आ झनकाहि। संगे मपैतलाल पूजिगर लोक। दस-गोरेमे उठै-बैसेबला मुँहपुरुख। अही सभ कारणे अरिपुरवालीकेँ मुँहपर कोय डाइन कहैक साहस नहि करै छेलइ।

परोछमे तँ रजो-महराजाकेँ लोक गारि पढ़ै छइ। कलेजाबला तँ ओ अछि जे सोझहामे साँच गप कहै छइ। चाहे कानमे लगौ वा कपारमे। ओना एकर फल नीक-अधला दुनू होइ छै मुदा पहिने तँ कर्म हेबाक चाही। सुच्चा कर्म!

अरिपुरवाली असगरे चलि देने छल। मने-मन गारि पढ़ैत, भिनभिनाइत। जाबे पहुँचल ताबे लोक सभ बैस गेल छल। नाचक वन्दना शुरू भऽ गेल छेलइ। ढोलक-हरमुनिया माहटरक हाथसँ बेसी मुड़ी तालपर गतिशील।

अभाव आ दुखमे कटैत जिनगीक मध्य जँ कोनो नाच-तमाशा वा उत्सव होइ छै तँ किछ क्षणक लेल जिनगी ओइ प्रसन्नतामे डुमकी मारि लैत अछि। पुन: नव शक्तिक संग समस्यासँ लड़ए लगैत अछि।

अरिपुरवाली लोकककक पाछूमे ठाढ़ भऽ कऽ चारूभर तकलक आ फलिगर जगह देखते बैस गेल। ओकरा पते नइ छेलै जे आगूमे नरहेलपुरवाली अपना दलक औरतिया सबहक संगे बैसल अछि।

अरिपुरवालीसँ नरहेलपुरवालीकेँ पुरान झगड़ा छेलइ। दुनूटा एक दोसरक छाँहमे नहि चलै छल। नरहेलेपुरवाली ई हवा उड़ौने छेले जे अरिपुरवाली हक्कल डाइन अछि। तइ कारणे अरिपुरवाली पुरे टोलमे बदनाम भेल छल। केते-गोरे एकरा दोखियो बनौने छल।

नरहेलपुरवालीपर नजैर पड़लासँ पहिने अरिपुरवाली ओकरा पाछूमे बैस गेल छल। आब तुरन्ते बिना बहाना केने ओइठामसँ उठियो केना जाएत।

कुसंजोगसँ छनहि बाद नरहेलपुरवाली उनैट कऽ तकलक। अरिपुरवालीकेँ देखते ओकरा सौंसे देहक रूइयाँ कटो-काँट भऽ गेलइ। बगलमे बैसल अपना दलक औरतिया सभकेँ कानमे फुसुर-फुसुर करए लगली-

“गइ भइखौकी! की तकै छीही, उठ ऐठामसँ। जान नहि बँचतौ। देखै छीही, डनियाही सहैट कऽ लगमे बैसल छौ!”

सुनैत सभ-गोरे फनफना कऽ ठाढ़ भऽ गेली। जेना लगमे साँप चलि आएल होइ। नरहेलपुरवाली-संगे सभटा औरतिया दोसर कोणपर जा बैस गेली। ओइठाम असगरे अरिपुरवाली बैसल रहि गेली। भिनभनाइत, गारि पढ़ैत, एकरबा बानर जकाँ।

नाच देखैले कालीकान्तो आएल छल। मुदा ओ कातेमे ठाढ़ भऽ कऽ भुटन रायसँ गप करै छल। तेकर कारण रहै, ओकरा संगेआएल झबरा कुत्ता। बड्ड प्रेमसँ वेचारा ओकरा पोसने अछि। ओ केतौ जाए तँ कुकुर ओकरा संग लगि जाए। ओ सोचने छल- कातेसँ कनी काल देखबआ आपस भऽ जाएब। बीचमे गेलासँ कुताक कारणे कोनो विवादो ठाढ़ भऽ सकैत अछि। थोड़े पता छेलै जे केतबो सम्हरल रहब तैयो विवाद करखनो केतौ भऽ सकैए। ओ तँ बिनु बजौल अतिथि सदृश सेहो होइत अछि।

अरिपुरवाली अपना लग चारूभर खलिया गेल जगहोकेँ देखए आ नाचो देखैत रहए।

कालीकान्तक कुत्ता ससैर कऽ अरिपुरवालीक लग चलि गेल। पाछूसँ जा कऽ ओकरा सूँघि लेलक। अरिपुरवाली पूजा-पाठ केनिहार।

कुकुरकेँ सुंघैत देख फानि कऽ ठाढ़ भऽ गेली। चारूभर तकलक। भुटन राय पाछूसँ लाठीकेँ ठेकना लगौने कालीकान्तसँ गप करिते छल। अरिपुरवाली शीघ्रतासँ भुटन राय लग गेली। पाछूसँ सट्ट-दे लाठी खींच लेलक। लाठी खैंचते भुटन राय गदाक-दे खसल। मुदा अरिपुरवाली ओम्हर तकबो नहि केलक। ओ लाठी लऽ कऽ कुकुरकेँ तड़तड़बए लगली। कुकुर नेंगराइत केंकियाइत।

भुटन राय फुरफुरा कऽ उठल आ फनकैत बजल-

“देखलिऐ यौ कालीकान्तजी। डनियाहीक किरदानी? जँ हमरा किछो हेतै तँ अहाँ गवाही रहब।”

कालीकान्त ओकर बातपर धियान नहि देलकै। ओकरा पोसा कुत्ताकेँ मारि लगल छेलइ। ओ तरेतर फोंफिया रहल छल।

हल्ल-गुल्ला भेलासँ लोक सभ जमा भऽ गेल छल। जइमे सरपंचो साहैब छला। देखतै कालीकान्त फनकए लगल-

“यौ सरपंच साहैब, अहाँ सभकेँ केते बेर कहलौं जे ओझहाकेँ मंगाऊ आऐ समस्याकेँ जड़ि-मूलसँ हटाऊ। मुदा अहाँ सभ धियाने ने दइ छिऐ। देखियो जे अखनी नाँहकमे हमरा पोसा कुकुरक जान लइ छल!”

सरपंच साहैब गम्भीर होइत बजला-

“शांत रहू कालीकान्तजी। कोनो रस्ता तँ लगबै पड़तै।”

“केना शान्त रही! अहाँ सभ नहि बुझै छिऐ जे ओ डाइन अछि?”

“हँ से तँ बुझै छिऐ। मुदा कोनो काज तँ तरीकेसँ हेतै किने।”

भुखना लोक सभकेँ ठेलैत आगू आएल आ चद-दे बाजल-

“की बुझै छिऐ? केकरोपर झूठ-मूठ दोख नइ लगाबियौ। डाइन तँ होइते ने छइ। मुरुख जकाँ आइयो पुरना बातकेँ धेने छी!”

बात आर बढ़ैत तइसँ पहिने नाच पाटीक मेम्बर सभ सभकेँ

बैसबए लगल।

तखैने नीता ओमहरसँ आएल। लुच्चा छौड़ा सभ कातेमे ठाढ़ छल। ओकरा देखते छौड़ा सभ आपसमे आँखि मटकबए लगल। एकटा मुँह दाबि बाजल-

“मुखड़ा चान का टुकड़ा।”

दोसर फेर बाजल-

“चाँद सार लऽ मुख घटना करू, लोचन चकित चकोरे।”

मुदा नीता केकरो गपपर धियान नहि देलक। ओ आगू बढ़ि गेलि। ओकर आँखि तँ राजेसरक खोजमे लगल छल। पएर बढ़ैत, चकौना होइत, मन उड़ैत-फिड़ैत।

किन्तु मनमे होइ जे कहुना लुच्चा छौड़ा सबहक नजैरसँ परोछमे चलि जाइ जइसँ एकरा सबहक धियान हटि कऽ दोसर दिस चलि जाएत।

शौभाग्यसँ ओ जे सोचै छेली तहिना भेलइ।

तखैने नाचक मंच लग हल्ला भेलै-

“हौ दौड़ह हौ! डकैत घेरलक!”

सभ ओम्हर ताकए लगल।

फुचकुनमा ओमहरसँ अपसियाँत होइत आएल आ बजल-

“यौ सरपंच साहैब! देखियौ, मंचक पाछूमे दूटा डकैत हथियार लेने ठाढ़ छइ। ओ हमर सभटा टका छीन लेतइ। हमरे दिस बधुआ कऽ तकै छेलइ।”

भुटन राय पुछलकै-

“हौ, टका लऽ कऽ टहलल घुरै छहक। तेकर मतलब बेसी टका रखने छहक। कोनो दाउ सुतार लहक की?”

"नै यौ भाय, हमर बेटा अपन बौह-बेटी छोड़ि कऽ दू सालसँ बाहर खटि रहल छइ। ओकरा माएकेँ मरैत काल मुँह नहि देखल भेलइ। देह टूटि गेलइ। मुदा कोनो तरहेँ एक लाख कमा कऽ लौलक। जमीन खरीदक गप कने भेल रहइ। जमीनबला जुवान बदैल लेलक। दर-बरमे झगड़ा भऽ गेलइ। आब टका केकरा लग राखब। सभ तँ बेइमाने। इमानदार अनकर काल अपना कपारपर किए लेत। तँए रातिकेँ डाँरेमे खोंसने रहै छी।"

"बैंकमे किए ने रखि देलहक?"

"धुर बैंकोमे खाता खोलेनाइ कोनो असान गप छइ। देखै नै छिऐ, केतेक कागत-पत्तर माँग करै छइ। हम मुरुख छी तैयो एते तँ बुझै छी- जे जमा करै काल एतेक परेशानी तँ निकालै बेरमे कोन ठेकान।"

फुचकुनमा सरपंच साहैब दिस घुरैत आगू बजल-

"ई टका अहाँ राखू सरपंच साहैब।"

"हमरोसँ डकैत छीन लेत तब हम केतए-सँ देब।"

"केना करबै यौ। ईहो एकटा काल भऽ गेल अछि। नीनो जेना भागि गेल अछि।"

एकटा लुचबा छौड़ा लग आबि बाजल-

"यौ फुचकुन काका, ऊ डकैत नै छेलइ। नाचक एक्टर छेलइ। डकैतक पाट खेलैले मेकप केने छइ। डेराउ नइ, बैस कऽ नाच देखू।"

"आब लिअ, जोड़ी देख कऽ साँपक डर।"

छौड़ा सबहक नजैर नीतापर सँ हटि गेल छल। नाच जमि गेल छेलइ। देखनिहार सभ नाचक रसमे डुमि गेल छल। आ ओइ रससँ धुआँइत अन्तरक मैल आँखिक बाटसँ जलकण बनि बहि रहल छेलै...।

सभ अपनाकेँ बिसैर जेना दोसर लोकमे भ्रमण कऽ रहल छल।

संगीतक ध्वनि सूतल रातिकेँ सिहरा रहल छल।

नीता चकोना होइत ओइठामसँ निकैल गेल छलि मुदा मनक चोर पछोड़ धेनहि छेलइ। ❑

बारह

नीतक पएर जइ गतिसँ चलि रहल छेलै ओही गतिसँ ओकर विचारोक क्रम बढ़ि रहल छल।

राजेसरसँ मिलैक पियासकेँ ओ केतेको दिनसँ ठकैत आ दबैत आबि रहल छल। मुदा आइ ओ इच्छा तीव्र भऽ गेल छेलइ।

ओ साँझेमे विचार केने छल जे नाचक मंच लग जरूर भेँट होएत, मुदा असफल भऽ गेल।

असफल भेलासँ केते-गोरे थिरे रहि जाइत अछि किन्तु केते-गोरे क मनमे सफलता प्राप्त करबाक तेतेक जोर मारि दइ छै जे ओ ओइ दिशामे आरो तीव्रताक संग काज करए लगैए। तहिना नीताक मिलनक इच्छा आरो तीव्र भऽ गेल छल। रहि-रहि कऽ मनमे जेना किछ उधक्का मारए लगलै।

नीता अधीर भऽ गेल। मनक चैन जेना हेरा गेल छेलै, तहिना लोक लाजक डर आ घर-परिवारक प्रतिष्ठा आदि सभ किछ बिसरए लगल। पएर राजेसरक घर दिस स्वत: बढ़ैत गेलइ, बढ़ैत गलइ। भावनामे डुमल नीता राजेसरक दुआरिपर करवन पहुँच गेल तेकर पतो ने लगल।

डेढ़िया लग ठाढ़ भऽ कऽ ओ कनी काल तक अकानैत रहल। कोनो प्रकारक शब्द नहि सुनि अँगना दिस हुलकी मारलक। सभटा टटघर बन्न। साइत सभ सुति रहल छल। ओना, राजेसर अँगनामे राखल

चौकीपर ओंगठल छल। घरक गरमी आ मच्छरक डरे ओ बारहरेमे सुतै छल। ओसारक कोणपर एकटा डिबिया भुकभुकाइत रहइ। जेकर इजोत अन्हारसँ लड़ैमे असमर्थ छल। तैयो अस्पष्ट, मद्धिम इजोत चारू-भर पसरल छेलइ।

नीता निशबद मारने, पएर दाबने रसे-रसे लगमे चलि आएल। मुदा राजेसरकेँ तेकर अभासो ने भेल। जे कियो ओकरा लगमे आबि ठाढ़ अछि। हेबो केना करितै, राजेसर तँ अपनहि धुइनमे अन्हार दिस देखैत किछ सोचि रहल छल।

पिताक जीवन कालमे तँ ओकरा कोनो तरहक सोचे-फिकिर ने भेल छेलइ। कहुना किछ पढ़ियो-लिखियो नेने छल। मुदा पिताक मृत्यु होइते पढ़ाइयो छूटि गेलइ। भाइक काजमे संग दिअ लगल।ओहो निष्ठुर भऽ संग छोड़ि परलोकवासी भऽ गेला। आब तँ सभटा भार अपनहि कपार, भेल सवार।

काजक पाछू दौगैत-दौगैत कमजोर तन ऊपरसँ बेथित मन। आइ ओ बेसी डेरा गेल छल। कारण छेलै, चारि बर्खक भातिज। जे आइ बेसी बेमार भऽ गेल छेलइ। छौड़ा दरदसँ केतेक छटपटाइत रहइ! कनैत-कनैत बेहवाल। कनी काल पहिने कहुना कऽ निन्न पड़ल। आइ जँ छौड़ाकेँ किछ भऽ जइतै तखन भौजी केना कऽ धीरज बान्हैत। कोनो उपाय नहि भेट रहल छल! ने घरमे एकोटा पाइ छल आ ने कियो देबा लेल तैयार रहए। घरमे जे अन्न-पानि बँचलौ छेलए सेहो सभटा श्राद्ध-कर्ममे बिकाइये गेल। कोनो सहारा नजैरक सोझमे नहि आबि रहल छल...।

नचार स्थितिक विषयमे सोचैत-सोचैत राजेसरक आँखिमे हाहा कऽ नोर आबि दुनू आँखिकेँ सिमसा देने रहइ।

लगेमे ठाढ़ नीताक एक मन कहै, राजेसर सूतल अछि। किएक तँ मुड़ी ने डोलबैए। लगले दोसर मन कहलकै, नै-नै जगले अछि।

मुदा प्रतीक्षोक तँ एकटा सीमा होइते छै किने। ओना, ओहो काल आ परिस्थितिक अनुसार बदलैतो रहैए।

नीताकेँ नइ रहल गेलै तँ टोकलक-

“एना किए अनठौने छिऐ, यौ?”

जेना राजेसरक कानमे प्रेम-रस पड़ि गेलइ, तहिना मुड़ी उठौलक आ नीता दिस ताकिते रहि गेल। टुटैत मनकेँ सुखद सहारा। छातीक भीतर जेना किछ फुरफुरा उठलै।

दुखद स्थितिमे अपना प्रेम-पात्रकेँ निकट देख राजेसरक आँखिसँ फेर नोर ढबढ़बाएल।

ढबढ़बाइत नोर देख नीताक सिनेह बदरिया अन्दरेमे उमड़ए-घुमड़ए लगलै। धुक-धुकी तेज भऽ गेलइ।

ओ लगमे सटि कऽ बैस गेल आ रसे-रसे राजेसरक माथ हौंसतैत बाजल- “की भेल! एना किए कनै छी?”

राजेसर गमछासँ नोर पोछैत बाजल-

“कानब नहि तँ दोसर उपाय की। कानबो तँ सन्तोखक उपाय छिऐ। अहाँ तँ सभ किछ जनिते छी।”

“की करबै। देवी माय फेर सभकिछ नीक कऽ देती। धीरज धरू।”

“लगै छै जेना हमरा भागमे मात्र दुखेटा अछि। आइ फेर हमरा भातिजक हालत बेसी खराप भऽ गेल अछि। घरमे एकोटा पाइ नहि अछि। कानब नहि तँ की करब।”

“कोनो उपाय तँ हेबे करतै। अहीं जँ एना कानब तँ माए आ भौजीक की हालत हेतैन। अहींपर ने सभ आस छैन।”

“कोन उपाय हेतै? गिरहत किछ देबा-ले तैयार नै अछि। समय तेहेन भऽ गेल जे आने कियो मुँहपर माछी बैसए देत। सभ धनिकाहा एके

जूति बनौने अछि। हमरा तँ मन होइत अछि जे फँसरी लगा कऽ मरि जाइ। मुदा माए आ भौजीक मुँह देखते मन मारि कऽ रहि जाइ छी।”

“आ हम तँ एकोबेर याइदो ने अबैत हएब। हँ-हँ, हम मने किए पड़ब।”

“अहींक याद करैत तँ हम कहुना जीब रहल छी।”

“हमरा नहि बिसरीहक। जँ बिसरबाक मन हेतह तँ ओइसँ पहिने मारि दिह हमरा।”

कहैत-कहैत नीताक आँखिसँ नोर बहए लगल। ओकरा आँखिक नोरकेँ देखते जेना राजेसर अपना दुखकेँ बिसैर गेल। सिनेह दूना वेगसँ बहए लगल। ओ भरि पाँच-के पकैड़ नीताकेँ चुप करए लगल।

नीता राजेसरक छातीमे मुँह सटा कऽ हुचैक-हुचैक कानए लगल।

दुनू एक दोसराक धीरज बन्हबैत। सिनेह स्पर्श करैत। प्रेमक सागरमे डुमकी मारए लगल। केतेक काल बीतल तेकर पता दुनूमे सँ केकरो नहि छल। तेकर कारण छेलै दुनू ऐठामसँ दूर बहुत दूर सुखक संसारमे विचरण कऽ रहल छल।

सबहक परियास रहै छै जे दुखक लगसँ पलायन करी आ सुखसँ आलिंगन करी। मुदा मनक बात पूर्ण थोड़े होइ छइ।

दू जोड़ी आँखिक सोझा सपनाक सतरंगी संसार नृत्य कऽ रहल छल।

बच्चाक कानबसँ दुनूक निन्न टुटल। नीता फुरफुरा कऽ ठाढ़ भऽ गेल।

पछुआरक बँसबिट्टीमे बौगुला सभ ‘कँए’ ‘कँए’ करै छेलइ। सुरमे-सुर मिलबैत कोयली ‘कुहू’ ‘कुहू’ करए लगल।

नीता बाजल-

“हे यौ, साइत राति बीत गेल। देखै छिऐ भोरूकबा तारा।”

“हँ, तहिना बुझाइत अछि।”

“हँ, लोकक उठबाक बखत भेल जाइ छइ। किनसाइत कियो देख लेत।”

“किए, लोकक डर होइत अछि?”

“डर तँ नहि होइए। मुदा समाज... ।”

“डर नइ होइए तैयो छोड़ने छी। आसपर लोक केतेक दिन जिअत?”

“बिसवास राखू।”

“बिसवास नहि रहैत तँ जीबतौं केना।”

नीता जोरसँ निसाँस खींचैत फेर बाजल- “हे यौ, कुलानन्दक चालि-चलन बड़ खराप छइ। आ हमरा तँ नचार भऽ कऽ ओकरे ओइठाम काज करैले जाए पड़ैए।”

“चिन्ता नइ करू। किछ दिन औरो धीरज राखू। आखिर समाजमे विरोध करैले किछ सामरथियो चाही। फेर देखै छी जे हमरा के रोकैत अछि, ऐ बिआहसँ।”

बिआहक नाओं सुनिते नीता लजा गेल। मुँह सिनुरिया आम सन भऽ गेलइ। ओ मुड़ी निच्चाँ केने रसे-रसे आँगनसँ विदा भऽ गेल।

तखैने दुआरिपर कियो खोंखी केलक। दुआरिपर जाइते नीता मुड़ी उठा देखलक। सात-आठ-गोरे नाँच देख आपस जा रहल छेलइ।

नीताक आनक अँगनासँ निकलैत देख सभ ठमैक गेल। आपसी इशारा आ कनफुसकी करए लगल।

“चढ़ि गेल छौ चोटपर।”

“पकैड़ ले अहीठाम।”

“नइ रौ। विचार कऽ ले पहिने। तब खेला करिहें।”

“कुलानन्द कोनए गेलौं रे?”

“ओनए कुलानन्द सोर पाड़ै छौ। पहिने बुझि ले।”

नीताक पएरमे जेना पाँखि लगि गेल छल। द्रुत गतिसँ अपना घर दिस जा रहल छल। ❑

तेरह

आइ सुरुज अन्तिमो पहरमे कड़कड़ौआ रौद उगलैते छेलइ। खुरपेरिया बाट सुन-मसान छल। मेघक एगो टुकड़ी दौगैत आबि रहल छेलै मुदा केतेक काल रोकि सकत ओ एहेन अगिलगौना रौदकेँ।

राजेसर एकपेरिया धेने टीसनदिस बढ़ल जा रहल छल। संगी-साथी सभ आगू चलि गेल छेलइ। तँए हड़बड़ाएल सन, नमहर डेग। घुमि-घुमि गामो दिस तकै छल। जेना किछ बिसैर गेल होइ वा किछ छूटल जा रहल होइ।

आइ भोरेमे ओ सोचि नेने छल जे गामपर रहने आब गुजर नहि चलत। करजाक भार, बेमार भातिज, पलिवारक खरच, सभ चीजकेँ देखैत जेना ओ डरे भीतरसँ थरथरा गेल छल।

भुखना सभ किछ बुझने छेलै तँए बोल-भरोस दैत कहने छल-

“भाय एनामे काज नहि चलत। अपना पएरपर ठाढ़ हुअ पड़त।”

मुदा ठाढ़ होइले किछु टका-पैसा तँ चाही। अही सबहक विषयमे सोचैत ओ दिल्ली, पंजाब जाइबला जन-मजदूरक पछोर धऽ नेने छल।

किछ पूजी जँ हाथमे रहत तँ खेतियो नीकसँ कऽ सकब। मने-मन

सोचैत आ डेग बढ़बैत।

मुदा घरक मोह जेना आगूमे रहि-रहि कऽ ठाढ़ भऽ जाइ छेलइ।

बचपनसँ लऽ कऽ आइ धरि ओ कहियो एतेक दूर नहि निकलल छल। दिल्ली-पंजाबक नामेटा सुनने छल तँए मनमे डेराओन सन बुझाइ छेलइ। केतेको प्रकारक शंका सभ मनमे उठि रहल छेलइ। बचपनसँ जइ गाम-घरमे कुदैत-फानैत जवान भेल छल तेकरा छोड़ैत मोह उठि रहल छेलइ। संगी-तुरियाक संग बाजब-भुकब, हँसब-खेलब सभटा यादि आबि रहल छेलइ। मुदा परिस्थितिक आगू नचार।

निरूपाय! सभटा बन्धनकेँ तोड़ैत ओ दौगैत स्टेशनपर पहुँच गेल छल। ❑

चौदह

सैकड़ो परिवार मिल कऽ एकटा गाम आ समाज बनै छइ। दसटा लोक एकठाम रहतै तँ आइ ने काल्हि झगड़ा हेबे करतै आ झगड़ा-लड़ाइ हेतै तँ पंचैती करै पड़तै। पंचैतीक बाद पुन: शान्तिक आगमन होइ छइ। मुदा पंचैती जँ उचित ढंगसँ नहि होइ छै तँ फेर झगड़ा शुरू भऽ जाइ छइ। अही कारणे पूर्बकालसँ लड़ाइ, पंचैती आ शान्तिक एक दोसरकेँ पछोड़ धेने दड़बड़ मारि रहल अछि।

ओना, पंचैतियो केते तरहक होइ छइ। सौंसे गामक पंचैती, टोलक पंचैती, दसगामा पंचैती, दस घरिया पंचैती, जातिक पंचैती, जाति-परजातिक पंचैती, जेतेक पंच तेतेक तरहक पंचैती..!

आइ राजेसरक टोलपर जातिक पंचैती भऽ रहल अछि। राजेसरक अँगनासँ नीताकेँ निकलैत देख जेना कुलानन्दक दहमे आगि लगि गेलै

छेलइ। तरवैनेसँ ओ अपन षडयंत्र चालू कऽ देने छल।

अपन इच्छित वस्तु दोसरकेँ प्राप्ति होइत देख मनमे तामस उठनाइ सोभाविके छइ। चाहे ओ जइ रूपमे प्रगट हुअए। मुदा अन्तरमे तँ धधकैत ईर्ष्या रहै छइ। जे ईर्ष्या केनिहारेकेँ सभसँ बेसी जरबै छइ।

कुलानन्द अपन जाल फेक देने छल। राजेसर टोलक छौड़ा सभकेँ सिखा-पढ़ा कऽ तूल-तैयार कऽ देने छेलइ। राजेसरक हित करैबला संगी-साथी सभ दिल्ली-पंजाब चलि गेल छल। कुलानन्दक लेल नीक अवसर छेलइ। किछु लोककेँ टका-पैसाक लोभ देलक तँ किछुकेँ खाइ-पीबैक। लोभक आगू सभ नचार। कुलानन्दक सभसँ नीक विचार।

दुआरिपर पंचैती शुरू भऽ गेल छेलइ। जातिक सभटा प्रमुख लोक! किछ गोरे ठाढ़ किछ गोरे बैसल छल। कुलानन्द सभकेँ पाछूसँ बिठू काटि रहल छेलइ।

जातिक मैनजन हाथ उठा कऽ पुछलक-

“असल बात कहू जे कीभेलइ? झुठेसँ घेंघौज नइ करू।”

“झुठेसँ घेंघौज? एनए जातिक आ गामक इज्जत माटिमे गड़ल जाइ छै आ अहाँकेँ झुठे बुझाइत अछि!”

“अहीं कहू ने जे की छै साँच बात?”

“साँच बात ई छै जे रजेसरा गामक इज्जत बेरबाद कऽ रहल छइ। जाति आ खनदानकेँ सात हाथ तरमे गाड़ि रहल छइ। देखनिहारे सभ बजू की भेल छेलइ।”

“हेतै की। मटरूवाक बेटी नीता राजेसर लग सुतल रहै छइ। नीता राति-राति भरि रजेसरे लग बितबै छइ। एनामे गाम आ जातिक कोनो बन्धन रहतै?”

“के देखने रहइ?”

“अही पाँचो गोरेसँ पुछियौ। राजेसराक घरसँ नीता भोरे उठि कऽ जाइत रहइ। पाँचो गोरे टोकलकै तँ उनटे ओ गारि दिअ लगलै।”

“एतबे नहि, रजेसरो लाठी चमका कऽ गारि पढ़ै छेलइ। कहै छेलै- हमरा जे मन हेतै से करबै। कोन सरबेकेँ साहस छै जे हमरा रोकत।”

“डन्ड हेबाक चाही। जँ एना होइत रहतै तँ केकरो बौह-बेटी सुरक्षित नहि रहतै।”

“हँ, ठीके बात। अहाँ दोसरकेँ इज्जत खराप करबै तँ अहूँक इज्जत दोसर खराप करत! एनामे तँ जाति-जातिक बीच संग्राम शुरू भऽ जेतइ।”

“बहुत गलत गप्प। कोनए छै रजेसरा। पंचक बीच बजा ओकरा आ पाँच जूता मार कपारपर। एहेन अधला काज करत!”

भुखनाकेँ नइ रहल गेलै तँ बाजल-

“हे यौ, के अधला काज नइ केने छी? सबहक चरित्तर तँ सभ बुझिते अछि। सभ एक तरफा किए बजै छिऐ।”

तैपर कुलानन्द फनकैत बाजल-

“भुखना तूँ बाजि नहि सकै छेँ। तोरे सन-सन लोक रजेसराकेँ सनका देने छइ। एनामे गाम आ जातिक कोनो बन्धन रहतै।”

“अछि केतए रजेसरा, पहिने ओकरा सोझहामे आनल जाए।”

“ओ तँ पंच आ समाजक डरे गाम छोड़ि कऽ भागि गेल।”

“आब केना हेतइ?”

“रजेसराक माए आएल छइ।”

“आ नीताक बाप मटरूवा कहाँ छै?”

“ओकरा गपकेँ छोड़ि दियौ। ओकरा जातिमे अपने पंचैती बेसौल जेतइ।”

डन्ड-जरिमानाक गपपर पंचक बीच घेंघौज शुरू भऽ गेल छल।

"कुलानन्द तँ दोसर जातिक छिऐ ओ किए एते बजै छइ।"

"ओ कोनो अधला गप थोड़े बजै छइ।"

बड़ी कालक बाद मैनजन अपन निर्णए सुनौलक- "राजेसरा बड्ड अधला केलक। एना जँ चलैत रहतै तँ जाति आ समाजमे कोनो बन्धन नहि रहतै। आखिर बौह-बेटी तँ सभकेँ छइ। जरिमाना तँ एकरा भारी हेबा चाही।"

मुदा एकर घरक स्थितिकेँ देखैत पंचक निर्णए ई भेल जे एकरा पूरा जातिकेँ भोज दिअ पड़तै।

फुचकुनमा सहैट कऽ राजेसरक माए लग गेल आ कहलक- "हे गइ बुढ़िया, कही ने कहिया देबही भोज? बेटा तँ डरे पड़ेलौ आ तूँ कातमे सुटकल छेँ।"

बुढ़िया थरथराइत ठाढ़ भऽ बजली-

"यौ बाबू सब! रजेसरो तँ अही समाजक बेटा छी। ओ कथी केलक से तँ हमरा नइ बुझल अछि। मुदा जे ओ अधला काज केलक तँ ओकरा कान पकैड़ कऽ चारि चमेटा मारू नीक रस्ता देखैनाइ तँ अही समाजक काज अछि ने।"

"ऊ सभ किछो नहि। तोरा भोज लगबे करतौ। बुझही जे आइसँ जाति तोरा ढाठि देलकौ।"

बुढ़िया कनैत बजली- "यौ बाबू! हमरा मारि दिअ चाहे काटि दिअ। हम भोज नहि दऽ सकब। घरमे मुठियो भरि अन्न नहि अछि। हम भोज केतए-सँ देब।"

फुफकारैत मैनजन बजला-

"तँ आइसँ तूँ जातिसँ बाहर। तोरा ऐठाम कियो नइ जा सकैत अछि आ तहूँ केकरो अँगना-घर नइ जा सकै छेँ। बोला-चाली बन्न।

जहिया तक भोज नहि देबही तहिया तक, सब किछ बन्न। पंचक बात जे काटतै तेकरा बुझा देबइ। चलै चलू।"

"जे बात काटतै ओकरो बाइर देबइ।"

सभ एका-एका विदा भऽ गेल। रहि गेली असगरे बुढ़िया। थरथराइत देह। नोरसँ भीजल आँखि। सुनहटक बेसुरा स्वर। ❑

पनरह

काल केकरो प्रतीक्षा नहि करैत अछि। के केकर प्रतीक्षा करै छै? गति कम हुअए वा बेसी सभ किछु गतिशील तँ रहबे करै छइ। आगू दिस वा पाछू दिस मुदा कालक पहिया गतिशील तँ ऐछे। सुख आ दुखक अनुभव तँ जीव-जन्तुकेँ होइ छइ। तँए ओ पलभरि ठमैक जाइ छइ। मुदा समय तँ निरन्तर गतिशील रहबे करतै।

राजेसर कमाइले बाहर चलि गेलइ। ओकरा जाइते परिवारक दुख आर बेसी बढ़ि गेलइ। पंचक डरे ओकर माए आ भौजाइकेँ किए कियो जनमे खटौत। घरमे अन्नक अभाव। भूखल पेट केतेक दिन..? आन गाम जा कऽ काज टोहियौलक। एक दिन सौस तँ एक दिन पुतौह, आने गाममे काज करए लगली। बेमार बच्चाकेँ असगरे केना छोड़ितैथ। गामक लोक तँ बाइरे देने रहैन। ओकरा परिवारसँ कोन मतलब। मरल तैयो ठीक जीयल तैयो ठीक।

दुखक पोटरी केकरो की कम भारी रहै छै जे अनकर पोटरी उठौत।

आइ भोरेसँ राजेसरक भातिज बपराहैर काटए लगल। ओकरा पेटमे वएह पुरना दरद जोर-जोरसँ हुअ लगलै।

राजेसरक भौजाइ सिमानपुरवाली केतेक गोरेक अँगना गेली मुदा कियो ओकरा ऐठाम अबैले तैयार नहि भेलैन। ओझहा-धाइम देखते मुँह घुमा लेलक। बिना पैसाक डागदर-वैद लग केना जाएत। वेचारी सभ किछुसँ हारि गेली। चारू भर अन्हारे-अन्हार लगैन। कोनो अबलम्ब नहि। वेवश भऽ आँखिसँ नोर बहबैत ईश्वरसँ अभ्यार्थना करए लगली। मुदा 'सबल सहाय सभ होत है, निरबल न कोय सहाय...।'

ईश्वरो तँ सबलेकेँ सहायक होइ छथिन। निर्वलता तँ अभिशाप छी। सिमानपुरवालीकेँ सहयता करए कियो ने आएल।

..छौड़ाकेँ कछमछी बेसी बढ़ि गेलइ। सिमानपुरवाली ओकरा मुँह दिस तकैत, कनैत रहली। मुदा रसे-रसे छौड़ा निचेन भऽ गेल।

सुतल बच्चा दिस तकैत सिमानपुरवाली सोचैत रहली।

जाबे धरि पति जीवित छेलैन, दुखोमे सुखे बुझाइत रहैन। तैसंग गौंओं-घरूआ सहेता करैले तैयारे रहै छल। मुदा पतिकेँ मरिते कियो हुलकियो मारैले नइ अबै छैन। तुरन्तेमे दुनियाँ केतेक बदैल गेल।

सौंझका अन्हार चारूभर पसरए लगल छेलइ। सिमानपुर-वालीकेँ बुझेलैन जे ओकरो जिनगीमे दुखक अन्हार पसैर रहल अछि। शंका होइते कोरक बच्चाकेँ हिलौलक। कथीले एकोरत्ती बच्चा सुगबुगाएत..! बच्चा तँ निपरान भऽ गेल छल, देहसँ बोलता पुरुख निकैल गेल रहइ।

सिमानपुरवाली तेना अवाक् भऽ गेली, जेना माटिक मुरुत। फड़फड़ाइत ठोर। आँखि लाल। मुदा बोल नहि फुटैत। विचित्र दशा। हेबो केना ने करतै। वेचारी किछे दिन पूर्व तँ विधवा भेल छल। एकटा सम्बल छेलै- बेटा। ओहो आइ दुनियासँ चलि गेलै..!

सिमानपुरवालीकेँ भीतरे-भीतर सौन-भादोक घटा जकाँ दुखक बदरिया उमड़ए-घुमड़ए लगलै। मुदा बरसबो केना करत, आँखिक नोर तँ सोलहन्नी सुखा गेल छेलै..!

बच्चाकेँ कोरामे नेने सिमानपुरवाली एकटक फाटल भीत दिस ताकि रहल छेली। अँगनामे कियो नहि।

मुदा कनी कालक पछाइत राजेसरक माए अपन झूकल देहक भार लाठीपर देने टुघरैत पहुँचलै। मोतियाबिनक कारणे कम सुझै छैन। तैयो टेबैत-टेबैत लगमे चलि गेल आ बच्चाक देह-हाथ हँसौंथए लगल। देहक ठंढापनक अनुभव करैत बजली-

“सिमानपुरवाली! बच्चाक देह तँ ठंढाएल छह। साइत बोखार उतैर गेलइ।”

किन्तु सिमानपुरवाली किछु ने बजली। दुखक अधिकताक कारणे बोलती बन्न भऽ गेल छेलइ। आँखि तेना लाल रहै जेना नोरक बदलामे लेहू भरल होइ। मुँह दिस तकलासँ मनमे उठैत भुमकमक अनुमान सहजे लगौल जा सकै छल।

बुढ़िया किछु काल तक पुतौहक मुँह दिस तकैत अँटकर लगबैत रहली। अँटकर लगिते जेना भ्रम दूर भऽ गेलै। सभ किछु एकदम साफ..!

बुढ़िया बुझि गेली जे ओकर पोता ऐ दुनियासँ चलि गेल। बुझिते, काटल गाछ जकाँ अँगनामे खसि पड़ली आ बपहारि काटए लगली-

“रे बौआ रे बौआ...। केकरा देख कऽ धीरज बन्हबै रे बौआ..।”

मुदा हुनकर कानबक स्वर सुनलाक उपरान्तो गामक कियो ने आएल। सिमानपुरवाली ओहिना एकटक शून्य दिस तकैत रहली।

झलफल साँझ भेलापर भुखना नुकाइत पछुआर दऽ कऽ पहुँचल। ओइ ठामक परिस्थिति देखैत ओकरा गौंआँपर बड्ड तामस लहरलै। मुदा वेचारा करता की। डेराएलो छल जे कहीं कियो देख ने लिअए, जँ देख लेत तँ डण्ड-जरिमाना कऽ देत। आँखिक नोर पोछैत भुखना अपन मनकेँ थिर केलक आ सिमानपुरवालीकेँ भोल-भरोस दिअ लगल। मुदा सिमानपुरवाली जेना किछु ने सुनैत तहिना निर्निमेष भीत दिस तकिते

रहली।

अन्तमे भुखना मनकेँ मजगूत केलक आ सिमानपुरवालीकेँ कोरसँ मुइल बच्चाकेँ निकालि लेलक। फेर ओ बुढ़ियाक संग केलक आ असमसान दिस विदा भऽ गेल।

किछु काल धरि सिमानपुरवाली ओहिना बैसल रहली। फेर चौंकैत आ देह-हाथ तानैत उठली। माथक सभटा केश छिड़िया गेल छेलइ। आँखि लाले लाल भऽ गेल रहइ। नुआँ-बस्तरक कोनो सोह-सुरता नहि। चारू भर तकैत अँगनासँ बहरा चिचियाइत दौड़ए लगली।

“नहि! कियो नइ छीनि सकैत अछि, हमरा बच्चाकेँ। केतए नेने जाइ छहक हौ। लाबह हमर बच्चा। आपस लाबह। माए गइ माए। सभटा चन्डलबा छौ ऐठाम। ला हमर बच्चा। ठाढ़ रह। हम कहि दइ छियौ।”

अर्र-दर्र किछु-सँ-किछु बजैत सिमानपुरवाली बताह जकाँ केने असमसान दिस भागल जा रहल छेली। भुखना अनुमान लगौलक जे सिमानपुरवाली साइत पूरा पगला गेली। की हएत की नहि। ..सोचैत भुखना शीघ्रतासँ असमसान दिस डेग बढ़बए लगल।

कुत्ताक कानबाक स्वरसँ अन्हार बेसी डेरौन भऽ गेल छल। ❑

सोलह

दुपहरियाक रौद चारूभर पसरल छल। चारि फूही पानि फेर टह-टहौआ रौद। पत्तो नहि डोलइ। आन दिनसँ आइ बेसी गरमियोँ छेलइ।

धरमलालक घरमे चाउरक बोरा उझलल छेलइ। चाउरक ढेरी। कातमे बैसल नीता। मुड़ी डोलबैत नीता चाउर फटैक रहल छल।

जखन चारूभरसँ समस्या घेर लइ छै तँ सबलो बेकतीकेँ झूकए पड़ै छइ। विरले बेकती ओहन धीरजवान होइए जे केहनो परिस्थितिमे संघर्ष करैत रहैए।

राजेसर जहिया गामसँ चलि गेल तहिए-सँ नीता अपनाकेँ बेसहारा सन बुझए लगल। ऊपरसँ बापक आग्रह। एनए घरमे अन-पानिक अभाव। परिस्थितिक आगू नचार भऽ कऽ वेचारीकेँ धरमलालक अँगना काज करए जाए पड़लै।

ओ बुझै छेलै जे ओकर बेटा कुलानन्दक चरित्र ठीक नइ छइ। मुदा दोसर उपैयो तँ नहियेँ छेलइ। वेवश हुअ पड़लै। मनमे सोचि नेने छेलै जे अपना सतरकी राखब तँ के की कऽ लेत।

नीताक देखते कुलानन्दक आँखि नाचए लगै छेलइ। नीताक लगमे जेबाक बहाना खोजए लगै छेलइ। किन्तु माए-बाबू हरक्षण अँगनेमे रहै छेलै तइ कारणे कुलानन्द छटपटा कऽ रहि जाइ छल। मुदा आइ संयोग नीक छेलइ।

भोरेमे धरमलाल गाए कीनैले हटिया चलि गेल छेलइ। तँए कुलानन्द अँगनेमे घुमि-फिर कऽ रहल छल। मनमे कछमछी लगल छेलइ। केतेक दिनसँ पोसल इच्छा आइ पुरा होइबला छेलइ। मुदा एकटा खोटका छेलै ओकर बुढ़िया माए। कुलानन्द ऐ कोशिशमे लगल छल जे कोनो भाँजे बुढ़िया अँगनासँ बाहर चलि जाए।

ओनए बुढ़ियाक मनमे दोसरे बात। ओकरा मनमे होइ छेलै जे अँगनासँ बहरा जाएब तँ नीतिया चाउर चोरा लेत। अँगनाक सुनहट केना छोड़ब।

कुलानन्दक कछमछी बढ़ि रहल छेलइ। एक घरसँ दोसर घरमे लुच-लुच केने घुरै छल।

बुढ़िया माए सोचलक-

"छौड़ा अँगनेमे छै ताबे लबटोलवालीसँ सूप लऽ अनै छी। ओइ टोलापर जाइक छुटियो नहि भेटैत रहैत अछि।"

सोचैत बुढ़िया बाहर निकलल आ बेटाकेँ शोर पाड़लक।

कुलानन्द घरसँ बाहर आबि कऽ पुछलक-

"की बात माए?"

बुढ़िया अँगनासँ बहराइत बजली-

"रौ बौआ, तूँ अँगनामे रह। हम कनी सूप नेने अबै छी।"

कुलानन्द आनन्दित होइत बाजल-

"ठीके छै, हम अँगनेमे रहबै।"

मनमे विचारल बात जँ तुरंते पूर्ण भऽ जाए तँ खुशी भेनाइ सोभाविके छइ।

कुलानन्दकेँ आब कनियोँ सन्देह नहि रहि गेलइ। सभ अड़चन समाप्त। बुढ़ियाकेँ अँगनासँ बहराइते ओइ घर दिस विदा भेल, जइ घरमे नीता चाउर फटकै छेलइ।

कुलानन्दक छाती धुकधुका रहल छल। वासनाक वेग। शरीरमे कम्पन जकाँ भऽ रहल छेलइ। तैयो ओ अपनाकेँ सम्हारैत नीताक निकट पहुँच गेल छल। किछु पल तक ओ नीताक शरीरक संचालनकेँ निहारैत रहल। कुलानन्दकेँ नीता नहि देखने रहै तँए ओ अपना काजमे तल्लीन रहए। कुलानन्द सहैट कऽ ओकर बगलमे बैसैत बाजल-

"हे, एनए सुन। किएक तूँ अपना फूलसन देहकेँ बरबाद करैले तुलल छेँ। हम जे कहै छियौ से सुन। जँ हमर बात मानबीही तँ तोरा कोनोटा काज नहि करए पड़तौ।"

नीता हाथ रोकि कुलानन्द दिस आँखि गुड़ैर कऽ तकलक आ पुन: चाउर फटकए लगल। ओ मनमे सोचलक- अँगनामे तँ एकर माए छइ।

माइक सोझहामे की कऽ सकैत अछि- हमर।

नीता किछु नहि बाजल तइसँ कुलानन्द आर बेसी उत्साहित भऽ गेल। आगू घुसैक कऽ ओ नीताक बाँहि पकड़ैत बाजल-

“हमर इच्छाकेँ तूँ पूरा कर नीतू। फेर तरो जइ चीजक जरूरत हेतौ हम सभटा पूरा कऽ देबौ। बिसवास राख हम सप्पत खा कऽ कहै छियौ।”

कहैत-कहै ओ नीताकेँ भरि पाँज कऽ धऽ लेलक।

नीताक एहेन आशा नहि छेलइ। आशाक विपरीत बात होइत देख ओकरा किछु पलक लेल कमजोरी सन बुझेलै। मुदा तामस बढ़लासँ जेना फेर शक्ति बढ़ि गेल होइ। ओ बाँहि झमाइर कऽ छोड़ौलक आ कसि कऽ दू चमेटा मुँहपर लगा देलक।

कुलानन्दकेँ अनुमानो नहि छल जे नीता एतेक तक कऽ सकैत अछि। ओकरा भेलै जे शाइत परेममे एहिना दुलार-मलार करैत होएत। ओ हिम्मत बान्हि कऽ दाँत निपोरैत फेर जाल फेकलक-

“हे गे, एना छमकाहि जेकाँ किए करै छेँ। हम कोनो रजेसरासँ अधला छी। देखही तँ... ।”

कहैत ओ फेर ओकरा पाँजमे पकड़बाक कोशिश केलक। नीता तामसे थरथर कँपैत उठल आ कुलानन्दक कण्ठ पकैड़ पाछू दिस जोरसँ धकेल देलक। हड़बड़ा कऽ कुलानन्द चौकैठपर ठाँहि-दे खसल। नीता सूप ओकरा दिस फेकैत बाजल-

“निरलज्जा, बेशर्मा तोरा लाज नइ होइ छौ- एकोरत्ती। धनक गुमान भऽ गेलौ। जाइ छियौ बपैहियाकेँ कहबौ। दस गोरेकेँ लाबि खाल खिचबा देबौ। आइ देखा देबौ तोरा... ।”

चोट लगलासँ कुलानन्दकेँ क्रोध बढ़िगेल छेलइ। ओ बुझि गेल छल जे आब ई काज सम्हैबला नइ अछि। माथ हौंसतैत बाजल-

"हमरा विषयमे जँ तू केकरो कहबीही तँ तोरा जिनगीकेँ हम खराब कऽ देबौ। बुझै छियौ हम जे तूँ गर्भवती छेँ। रजेसराक बच्चा तोरा पेटमे छौ। अखनो हम कहै छियौ जे तू सम्हैर जो। अहू बातकेँ हम कहुना झाँपि देबौ। नहि तँ बुझि ले जे आगू की हेतौ।"

ऐ सँ आगू किछु आर होइत तखने दुआरिपर सँ धरमलालक अवाज आएल-

"कुलानन्दक माय! एक लोटा पानि नेने आउ।"

बापक अवाज सुनिते कुलानन्द सकपका गेल। नीता तामसे थरथर कँपैत। आँखि लाले-लाल। ओ टाँग पटकैत अँगनासँ बाहर निकलल। धरमलाल ओकरा देखते टोकलक। नीता आँखि गुड़ैर कऽ ओकर दिस तकलक आ कनैत अपना घर दिस विदा भऽ गेल।

धरमलालकेँ सन्देह भेलइ। ओ अँगना दिस गेल। किछु पलक पछाइत दुनू बापूतक बीच उतरा-चौरी शुरू भऽ गेल छेलइ।

किन्तु नीताक धियान ओनए नहि छेलइ। ओकरा आँखिसँ दहो-बहो नोर बहि रहल छल। ओ तीर लगल चिड़ै जकाँ अपना घर दिस भागल जा रहल छल। ❑

सतरह

कुलानन्दक पएर बढ़ि रहल छल आ मनमे पिता धर्मलालक कहल एक-एकटा बात आबि रहल छेलइ।

"कुकरम केलौं तँ डण्ड भोगैले तैयार रहू। भाग्यक बली छी जे रजेसरा गाममे नहि अछि, नहि तँ एके मिनटमे पता चलि जाइत। डेढ़हथीसँ माथ फोड़ि देने रहैत। रजेसरा नहि छै तँ की भेलइ। नीताक

बाप मटरूवा तँ गामेमे छइ। आगि लगौलौं तँ मुझेबाक उपाय खोजू। कोनो रस्ता नहि भेटत तँ झड़ैक कऽ मरब।”

ई बात सुनलाक बाद कुलानन्दकेँ छड़पटी बढ़ि गेल छेलइ। केतेक पडयंत्र ओकरा मनमे जन्म लैत छल आ केतेक मरि जाइत छल।

एक गलतीसँ बँचबाक लेल लोक हजारो गलती करैत अछि। अन्तत: पछताइत जिनगी बीत जाइत अछि।

कुलानन्द मने-मन भँजियाबए लगल जे मटरूवासँ गाममे केकरा-केकरा झगड़ा भेल छइ। ओ सभ कोन तरहेँ हमरा पक्षमे रहत।

सुआरथी आ लोभी तँ सभ होइते अछि। केकरो टका-पैसाक लोभ देलक तँ केकरो आन चीजक।

ऐ तरहेँ नीता घरक आस-पासक लोककेँ अपना पडयंत्रक जालमे फँसा लेलक। अपन बँचाउक सभ रस्ता बना लेलक। मटरूवाक अपन जातियो कुलानन्दे दिस बजए लगलै।

जखन कुलानन्द घर दिस घुरल तखन ओकरा मुँहपर मुस्की नाचि रहल छेलइ। आँखिमे भरल छेलै पडयंत्रक छाँह। ❑

अठारह

सामूहिक धक्का बड़ जोरगर होइ छइ। बिहाड़ि सन। केतेको घर-परिवार ओइ धक्कासँ उजैर कऽ नाश भऽ जाइ छइ। मुदा जे छली-परपंची अछि ओ समाजक धक्काकेँ चुटकी बजा कऽ उड़ा दइ छइ!

आइसँ नहि पहिनौंसँ अहिना होइत आएल अछि जे समाजक धक्का दीन-हीन आ दबल बेकतीकेँ बेसी लगै छइ। पैघ आ मुँहगर लोक तँ

एहिसँ बँचले रहै छइ। कारण ओ सभ छल-परपंच रूपी कवच पहिरने रहैत अछि।

धरमलाल समाजक पैघ लोक। परपंची जाल फेकैमे बेसी तेजगर। तँए बेटोमे ऐ गुणक मात्रा पूर्ण।

कुलानन्द पहिने पता लगा लेलक जे भूमासँ मटरूवाकेँ झगड़ा रहै छइ। मटरूवाकेँ पड़ोसिया भूमा। दुनू एके जाति।

कुलानन्द टोह लैत भूमाक दुआरिपर बैस रहल। भूमा केतौसँ घुमि-फिर कऽ आएले छल। कुलानन्द ओकर कान भरए लगल। नीताक विषयमे जेतेक धरि भऽ सकल अकट-बकट कहैत रहल। सँगे पाँच साए टाका हाथमे चुपेचाप धरा देलकै। अन्तमे ईहो कहलकै जे सँग-साथ देबाक लेल तोरा जातियेक आर लोक तैयार रहतौ। केते गोरेसँ गप्प भऽ गेल छौ।

भूमा दुसमनीक कारणे मटरूवापर बिगड़ले रहै छल। ऊपरसँ पाँच साए टाकाक लोभ ओकरा आरो उत्साहित कऽ देलक।

उठैतकाल कुलान्नद ईहो कहि देलकै-

“रौ भूमा, तोरा जातिक सवाल छौ। जातिक बेटी। तेकर इज्जत। ओइ इज्जतकेँ दोसर जातिक छौड़ा नाश कऽ देलकौ। पौभरिक रजेसरा। जातिकेँ लाजे नहि छौ। तूँ आब जान। तोरा जे कहैक छेलौं से कहि देलियौ।”

भूमा डेढ़हत्थी हाथमे लैत फड़कैत बजल-

“अहाँ जाऊ ने यौ। आखिर जातिक सवाल छइ किने। मटरूवाकेँ कारिख-चुन नहि लगाबी तँ हमर नाम भूमा नहि। ई बेशरमी खेल-खेलता तँ जातिसँ निकालि देबैन।”

कहैत ओ मटरूवाक घर दिस विदा भऽ गेल। कुलानन्द कुटिल मुस्की दैत चलि देलक। ❑

उन्नैस

झलफल अन्हार भऽ गेल छल। धरमलाल बाटक कातमे बैसल सोचि रहल छल- कोन चालि चलब जे ‘साँपो मरि जाए आ लाठियो ने टुटए।’

ऐसँ पहिने ओ तीन बेर मटरूवाक बारेमे पता लगबैले गेल छल। मुदा मटरूवासँ भेँटे नइ भेलइ। कारण मटरूवा बजार चलि गेल छेलइ।

धरमलाल सोचि रहल छल जे पहिने मटरूवासँ गप्प कऽ ली। बाप-बेटीक बीच जँ गप्प भऽ जेतै तँ हमर कुचालिकेँ बुझि जाएत। तँए मटरूवाक कान बाटेमे भरि दी से ठीक होएत।

उचितमे साथ दइबला पिता तँ होइते छइ। अनुचितोमे साथ दइबला पिता होइ छइ।

बापक जाल अलग बेटाक जाल अलग। मुदा उदेस एकेटा।

किछुकालक बाद मटरूवा कपारपर मोटा लादने ओही बाटे आबि रहल छल। धरमलाल ठाढ़ होइत बाजल-

“रौ मटरूवा! कनीकाल ठाढ़ हो। तोरासँ एकटा गप करैक अछि।”

“हे यौ, अरबैन तँ कपारपर भारी समान अछि।”

“एकेरती ठाढ़ ने रह। दू टपकीए गप छइ।”

मटरूवाकेँ अनसोहाँत लगलै। मुदा धरमलाल बाबूक बात केना टारत। बढ़ल पएर घुमा लेलक। लगमे जा कऽ पुछलक-

“कहू, की कहबाक अछि? सुनै छी हमर जमाइयो गामपर गेल अछि। पानियोँ-बैसक कियो ने देने हेतइ।”

कनीकालक लेल धरमलाल चुप भऽ गेल छल। जेना प्रपंचक तीर मनमे तैयार कऽ रहल होइ। फेर माथ कुड़ियबैत बाजल-

"रौ, कहबाक इच्छा तँ नहि होइत अछि। मुदा नइ कहबो तँ बनत केना। जेहने तोहर बेटी तेहने हमर बेटी। बेटी तँ पूरा गामक होइ छइ।"

मटरूवा चौंकैत पुछलक-

"यौ गिरहत, साफ-साफ कहू ने। नीतियासँ की कोनो गलती भऽ गेलइ?"

"हे रौ, तूँ एकरा गलतीए कहै छी। तोहर बेटी तँ समाज आ जातिक नाक काटि रहल छौ।"

"की बात भेलै? हमरा तँ किछो ने बुझल अछि।"

"हेतौ की। नीतियाक चालि-चलन खराब भेल जाइ छौ। किछ-दिन पहिने तँ रजेसरा आ नीतियाक विषयमे हो-हल्ला भेले छेलौ।"

"ऊ बात झूठे छेलै गिरहत। बुझै नहि छिऐ। समाजमे तँ हित आ मुद्दै सभकेँ छइ। तिलकेँ ताड़ बना देलकै।"

"तूँ सभकेँझूठे बुझै छीही। मुदा ऐसँ सभ बात थोड़े झँपा जेतौ। किछु एहनो बात भऽ गेल छौ जे झँपा नइ सकै छौ। पुछबीही तब ने पता चलतौ।"

मटरूवाकेँ तामससँ मुँह लाल भऽ गेलै तेकरा दबैत ओ बाजल-

"अहाँ केना बुझै छिऐ?"

"बुझल छै तब ने कहै छियौ। आइ तँ आर विचित्रे बात देखलियौ।"

"की विचित्र बात?"

"कहबाक विचार तँ नइ छल, मुदा कहबौ नहि तँ बुझबीही केना। आइ कुलानन्दक सँगे ओ कोनो अधला गप्प करै छेलौं। दू चमेटा लगा

ओ नीतियाकेँ भगा देलकौ। हम दुआरिपर सँ सभ किरदानी देखै छेलियौ।”

मटरूवाकेँ माथपर सँ मोटा ससैर गेलइ। ओकरा सम्हारए लगल। धरमलाल जाइसँ पहिने फेर बाजल-

“अखनो समे छौ। समैट-ले अपन धिया-पुताकेँ। समाज जँ बिगड़तौ तब बुझबीही।”

मटरूवा अपना टोलमे धाख बनौने छल। जरूरतसँ किछ बेसीए कमा-खटा कऽ जमा कऽ लैत छल। परिवारो छोटे छेलइ। स्त्री चारि बरिस पहिने मरि गेल छेलइ। दूटा बेटी मात्र रहइ। जेठकी बेटी बिआह-दुरागमनक बाद नहियेँ अबै छेलइ। बाप आ बेटीक छोट-छीन परिवार कमा-खटा कऽ चलि रहल छल। मटरूवाक आस-पड़ोसमे हरदम झगड़ा होइते रहै छल। सभटा फसादक फैसला मटरूवे करै छल। तँए ओ अपनाकेँ इज्जत-प्रतिष्ठाबला बुझै छल। मुदा धरमलालक गप सुनला पछाइत आइ ओकरा बुझि पड़लै जेना चारूभरक धरती हिल रहल अछि। बनल बनाएल इज्जत जेना खण्ड-परखण्ड भऽ रहल अछि।

तामसे ओकर सौंसे देह थर-थरा रहल छेलइ। माथक मोटाकेँ सम्हारैत मटरूवा लपकैत घर दिस विदा भऽ गेल। ❑

बीस

अपन टोल लग आबि मटरूवा बड़ीकाल तक सोचैत रहल।

जइ बरदकेँ पानि नहि ऊ कोनो बरद छी। जइ मरदकेँ आनि नहि ऊ कोनो मरद छी। नीतिया सभ इज्जत-पानि उतारि देलक। लोक सभ कहबे करत- ‘इह, पंच बनल छल। आब करौ अपन पंचैती। लोक लग

कोन मुहसँ बजब? के बाजए देत? किए बजए देत?

सोचैत-विचारैत जाबे घर लग पहुँचल ताबे राति भऽ गेल छेलइ। ओकर पड़ोसिया भूमाक दुआरिपर लोक सभ बैसल छल। आपसमे घोल-फचक्का भऽ रहल छेलइ।

लालटेनक भुकभुकाइत इजोतमे कीड़ा-फतिंगा फानि रहल छल। ओहिठाम ओकर जमाय मुँह लटकौने बैसल छल।

मटरूवाकेँ देखते एक गोरे टोकलक-

“ओनए अँगना दिस केतए जाइ छिऐ। एनए आऊ चोटपर।”

मटरूवाक टाँगमे जेना पथ्थल बन्हा गेलइ। रसे-रसे लग आबि कऽ ठाढ़ भऽ गेल। भूमा ओकरा नहि देखलकै।ओ जोर-जोरसँ बाजि रहल छल-

“ई बेहयापन हम अपना जातिमे नहि हुअ देबइ। केयो खुश रहै वा नाखुश। एनामे तँ लोकक कथा-कुटमैती सभटा मारल जेतै ने। यो डिगडिगिया भाय, बजै नहि छिऐ।”

डिगडिगिया एहेन लोक जे मालिक-मालिक कहि कऽ केकरो ठकि लैत अछि। ओइ टोलपर मुँहपुरखी करबाक ओकर पहिनेसँ इच्छा छेलइ। मुदा कहियो पंचैतीमे जोरसँ बाजि कऽ पंच बनबाक कोशिश करै छल तँ मटरूवा ओकरा मुहेंपर चट-दे कहै छेलइ-

“रौ लवपर बबाजी भेल तँ दालिकेँ कहलक- बेकुंठी।”

ई सुनिते बेचारेक मुँहक बात मुहेँ रहि जाइ छेलइ।

आइ सौभाग्यसँ समय भेटल छल। मटरूवा आइ मुँहपर केना बजत। डिगडिगिया जोरसँ बजल-

“ठीके कहै छिऐ भूमा भाय। हम अपना जातिकेँ बिना लगामक नहि रहै देबइ। दोसरा टोलक छौड़ा सभ तब ने कहै छै जे ऐ टोलक

इज्जतकेँ कोनो ठेकान नहि। हम तँ कहै छी जे अखनी एकरा बेटीकेँ ऐ टोलपर सँ निकालि दियौ। ई तँ जेकरा संगे रहतै ओकरा खराप करतै।"

कहैत डिगडिगिया जेबीमे हाथ देलक। कुलानन्दक देल टका हाथमे ठेकलै तँ फेर बाजल-

"यौ, अहाँ सभ बजै किए नहि छिऐ?"

जुबक सभ एके साथ डिगडिगिया आ भूमाक समर्थन करए लगल।बुढ़बो सभकेँ हामी भरए पड़लै।

"बातकेँ नहि मानत तँ मटरूवाक मुँहमे कारिख-चुन लगौल जेतइ। से बुझि लिअ।"

मटरूवाकेँ तँ पहिनेसँ मर्माहत चोट लगले छेलइ। ओइठामक स्थिति देख ओ अर्द्धविक्षिप्त जकाँ भऽ गेल। माथ परक मोटा एक कात रखि थुस-दे बैस रहल। ओकरा देखते भूमा कहुनीसँ इशारा केलक। डिगडिगिया पाछू मुहेँ तकलक आ मटरूवाकेँ देखते बाजल-

"की हौ मटरूवाकाका, बजै ने किए छहक?"

मटरूवा ओकरा दिस तकैत बाजल-

"कहबीही तब ने। की कहै छी?"

डिगडिगिया लोक दिस तकैत बाजल-

"हे लिअ आब। कहै छै ने- सौंसे रमायण सुना देलौं आ सुननिहार छल बहीरा।"

बातकेँ काटैत भूमा कहलक-

"एना झँपने-तोपने काज नहि चलत। सभ गप खोलि कऽ कहियौ।"

डिगडिगिया एकबेर मटरूवाक जमाए दिस तकलक। ओकरा जमाइक आँखि लाले-लाल भऽ गेल छेलइ। ओ मुड़ी गोंतने छल।

कुटुमक सोझहामे मटरूवाक बेइज्जती होइत देख भूमाकेँ खुशी भेलइ। ओ बजल-

"यौ मटरूवा काका! हम तँ किछ दिन पहिने चेता देने रहूँ जे नीतियाक चालि-चलन खराप भऽ गेल अछि। ओकरा हम रजेसराक अँगनासँ रातिकेँ निकलैत देखने रहिऐ। ओइ दिन तँ सभ गोरे हमरा लुलकारि देलिऐ। आइ लिअ ने, सभटा पाप डिरियाइत देखार भऽ गेल। आब झँपनेसँ कोन बात झाँपल जाएत।"

भूमाकेँ चुप होइते डिगडिगिया टपकल-

"हे यौ, आइयो कहाँदन कुलानन्द सँगे कोनो अधलाह गप्प भेलइ। लिअ ने, केते सम्हारब।"

भूमा बजल-

"हँ यौ, कुलानन्द तँ अपने हमरा कहैले आएल छल। आइ धरि हमरा सभ चुप रहलौं मुदा आब नहि रहब। आब टोलमे मटर काका रहए वा हमरा सभ रहब। मानिजन एकर निरनय अखनी दिअ।"

सभ ऐ बातक समर्थन करए लगल। बड़ीकाल धरि धमर्थन होइत रहल। अन्तमे निर्णए सुनौलक-

"सुनै जाउ। हमर निर्णए ई भेल जे मटरूवा अपना बेटीकेँ ममहर वा कोनो आन सम्बन्धी लग भेज दौ। ऐ टोलपर नीतिया रहतै तँ देखा-देखी दोसरोक बेटी ओकर चालि-चलन सीख लेतइ। तँए ऐ टोलपर नहि रहि सकै छइ। आने गामसँ ओकर बिआह-सादी कऽ दौ। जँ नीतिया घुरि कऽ मटरूवाक अँगना औत तँ मटरूवोकेँ कारिख-चुन लगा कऽ जातिसँ बाहर करि देबइ।"

मानिजनक निर्णए सुनि सभसँ बेसी खुशी भूमा आ डिगडिगियाकेँ भेलइ। किएक नहि हेतै,दुनूक जेबीमे पँच-पँच साए टाका कड़कड़ा रहल छेलइ।

मटरूवाक जमाए फनैक कऽ विदा होइत बजल-

"हम आब ऐठाम अन्नजल नहि कऽ सकै छी। जा रहल छी- गाम।"

"एना धड़फड़ाउ नहि।"

मटरूवा मुड़ी गोंतने बैसले छल। तामस आ लाजसँ ओकरा मुँहक विचित्र स्थिति बनल छेलइ।

भूमा ओकरा लगमे जाइत बाजल-

"पंचक निरनय तँ सुनि लेलिऐ। आबो ओइ कुलछनीकेँ निकालबै की नहि?"

मटरूवाक जमाय जाइत-जाइत उनैट कऽ बाजल-

"जइ मरदकेँ लाजे ने छै ओ तँ...।"

मटरूवाक क्रोधमे जमाइक बात जेना आगिमे तेलक काज केलक।

सम्बन्ध, सिनेह आ बेवहार सभटामे जेना क्रोधक आगि लगि गेलइ। बुधि आ विचारक विनाश भऽ गेलइ।

डुबैत इज्जत-प्रतिष्ठा देख ओकरा आँखिक आगू अन्हार सन लगलै। ओ फड़कैत उठल। एक गोरेक काँखतर सँ डेढ़हत्थी घींच लेलक आ धम-धमाइत अँगना दिस विदा भऽ गेल।

नीता भूखल-पियासल घरमे दुबकल छेलइ। जखनसँ कुलानन्दक अँगनासँ आएल तखैनसँ नोर बहि रहल छेलइ। मुदा नोर पोछत के? केकरा दिलक बात कहत? एने तँ एहेन षडयंत्रक जाल फैला देने छेलै जे केकरा कहतै, जे सुनतै सएह लतियेतै। एहेन समयमे तँ सहारा एक मात्र बापेटा छेलइ। सेहो गामपर नहि छल। तँए अपनाकेँ बेसहारा बुझि एकटा कोनमे बैसल कानि रहल छेलइ।

सोचने छेलै- जे बाबूकेँ अबिते सभटा गप्प खोलि कऽ कहि देबइ। गरीबक पास इज्जत नहि होइ छइ। आइ सभटा धनिकपना घोंसाइर देबइ। पंचैती बैसा कऽ बेदशा करबा देबइ।

मुदा ओकरा की पता छेलै जे ओनए दोसरे नाटक रचल जा रहल छइ। टोलपर होइत हल्ला-गुल्लासँ अनभिज्ञ ओ घरमे नोर बहा रहल छेलइ।

एनए डेढ़हत्थी नेने मटरूवा केबाड़ लग पहुँच गेल छल। पिताकेँ अबैत देख नीता जोरसँ कानए लगल।

अत्यधिक दुखमे कोनो आत्मीय जनकेँ देखते वेदना आर उफान मारए लगै छइ। आँखिसँ स्वत: नोर बहए लगै छइ।

नीताकेँ तँ एक मात्र सहारा बापेटा छेलइ। बापकेँ देखते ओ बोम पाड़ि कऽ कानए लगल-

"बाबू यौ बाबू।"

मुदा नीताक कानब मटरकेँ ढाल पसारब सन बुझेलै। ओकरा माथपर तँ क्रोधक भूत नाचि रहल छेलइ। इज्जत-प्रतिष्ठा दाउपर लगल छेलइ। समाज कुटुम सभ छुटि रहल छेलइ। ओ तामसे तेतेक आन्हर भऽ गेल छल जे नीताक बातो नहि सुनै लगल। 'फटाक-फटाक' डेढ़हत्थी नीता देहपर बजाड़ए लगल। कोमल देहपर वज्र सन डेढ़हत्थीक चोट! करूण क्रंदन करैत नीता। चोटसँ केतेको जगह चमड़ी फाटि गेलइ।बुझबे नइ केलक वेचारी जे आखिर बात की छइ। किए डेढ़हत्थीक चोट ओकरेपर गिर रहल छइ। तैयो अपनाकेँ सम्हारैत पुन: बजैक कोशिक केलक-

"कोन गलती भेलै यौ बाबू?"

किन्तु फेर मटरूवा डेढ़हत्थी देहपर गिरबैत बजल-

"गै कुलबोरन! तूँ हमरा केतौ नहि रखलेँ। जँ बुझितियौ एहेन हेबेँ तँ

नून चटा कऽ जनैम्ते मारि दैतियौ।”

नीता अवाक् भेल बापक मुँह दिस ताकि रहल छल। मारिसँ देहक तेहेन दशा भऽ गेल छेलै जे उठनाइ असंभव।

मटरूवा डेढ़हत्थीसँ हूड़ मारैत फेर बाजल-

“गै कुलछनी, ममहर चलि जो। जल्दी निकल घरसँ। नहि तँ समाज हमरा निकालि देत। जो डुमि कऽ मरि जइहें।”

कहैत-कहैत मटरूवा कनै लगल। आ कानैत बजल-

“जल्दी निकैल जो हमरा सोझासँ। बुझही तोहर बाप मरि गेलौ। तूँ मरि गेलें हमरा लेल। जँ घुरि कऽ एबही तँ हमरा मरल देखबें।”

कहैत मटरूवा डेढ़हत्थी अँगनामे पटैक देलक।आ तेजीसँ बहरा दिस चलि देलक।

बड़ीकाल धरि नीता बदहवाश भेल पड़ल रहल। जाबे ओकर मन थिर भेलै ताबे आधा राति बीत गेल छेलइ। ओ कुहरैत उठि कऽ बैसल। चारूभर तकलक। केतौ कियो नहि। फेर नजैर आसमान दिस गेलइ। अकासमे भुकभुकाइत तरेगन देखलक। सौंसे टोल निशबद भऽ गेल छेलइ। केतौ-केतौ कुता कानि रहल छेलइ। बाधमे नढ़िया ‘हुआ हुआ’ करै छेलइ। चारूभर जेना अन्हारक चद्दैर तना गेल छल।

ओ उठि कऽ ठाढ़ भेल साँस छोड़ैत घर दिस देखलक। केबाड़ लगल छेलइ। अँगना शून्य। केतौ कियो नहि। ओ घर दिस डेग उठौलक। बापक कहल बात चट-दे मन पड़ि गेलै- ‘बुझही तोहर बाप मरि गेलौ। तूँ मरि गेलें हमरा लेल! जँ घुरि कऽ एबही तँ हमरा मरल देखबें।’

नीताक मनमे आएल। हम केतए जाएब? बापक सिवा हमर के? जनमदते घरसँ किए निकालि देलक? कोन कुकरम केलिऐ? कोन बातक दण्ड? केकरोसँ सिनेह नहि कऽ सकै छै कियो? प्रेम भेनइ की केकरो वशमे छइ?

अनेको प्रश्नक बीच नीताक मन औनाए लगलै। औनाइत नीताक कान लग पिताक कहल दोसर वाक्य सनसनेलै- 'जो डुमि कऽ मरि जइहेँ।'

ओ सोचलक- जे ओकरा रहलासँ सभकेँ दुखे-तकलीफ छै तँ मरि जाएब से नीक होएत। मुक्तीए भेट जाएत।

सोचैत ओ विदा भऽ गेल। डेग बढ़बैत गामसँ बाहर भऽ गेल। घुरि कऽ एकबेर गाम दिस तकलक। मोहक एकटा लहैर मनमे उठलै। मुदा अपमान आ पीड़ाक चोटसँ मोहक लहैर तुरन्ते उड़ि गेलइ। आँखिक नोरकेँ पोछलक आ शीघ्रतासँ विदा भऽ गेल बाध दिस।

धारमे खूब जोरगर बाढ़ि आएले छेलइ। चारूभर पानि हड़हड़ा रहल छल। ओ सोचलक- अही धारमे डुमि कऽ मरि जाएब।

तखैने पाछूसँ किछ अवाज सन बुझेलै। 'छपर... छपर...।'

ओ घुरि कऽ तकलक। मुदा किछो नहि देखाए पड़लै। मनक भ्रम बुझि फेर आगू बढ़ल।

आगूमे हुहुआइत धार। उफान मारैत पानि। काँट-कुश, गाछ-पात दहाइत भँसैत...।

धारक कछेरपर किछुकाल तक ठाढ़ रहल नीता। राजेसरक सिनेह ओकरा मन पड़ि गेलइ। मुदा ओ तँ बहुत दूर छल। लचारीक नोर ओकरा आँखिसँ टघैर गेल।

मरैतकाल मनमे केतेक विचित्र चित्र सभ अबैत रहै छइ। तहूमे जेकरा मन अपन खास लोक बुझै छै तेकर स्मरण भेनाइ सोभाविके अछि।

राजेसरक यादि अबिते नीता भीतरसँ हिल गेल। नोर पोछैत बाजल- "अहाँक आ हमर सिनेह केकरो नहि सोहेलै। तँए हम जुल्मी दुनियासँ जा रहल छी। सँग-साथ नहि देलौं। माफ कऽ देब।"

ओ डुबैक उदेससँ साड़ीकेँ समेट धारमे कुदबाक चेष्टा केलक। तरवैने कियो पाछूसँ भरि पाँजमे पकैड़ लेलक। नीता घुरि कऽ तकलक। सिमानपुरवाली राजेसरक भौजाइ जेकरा लोक बतही कहै छेलइ। ओ नीताकेँ पाँजमे पकड़ने छेलइ। सिमानपुरवालीक आँखिसँ नोर बहि रहल छल। ठोर फड़फड़ा रहल छेल। जेना किछु बजैक कोशिश कऽ रहल होइ।

नीता सिमानपुरवालीकेँ देखते कानए लगल। सिमानपुरवाली सेहो ओकरा गला-मे-गला जोड़ि बोम पाड़ि कऽ कानए लगल।

नीताक एकटा बातसँ अचरज भऽ रहल छेलइ। सिमानपुरवाली जहियासँ बताहि जकाँ करए लगले तहियासँ ओकरा कियो कानैत-बजैत नहि देखने रहइ। मुदा आइ एतेक परिवर्तन केना भऽ गेलइ!

ओकरा मुँह दिस तकैत नीता कनैत बाजल-

“हमरा मरए दिअ। आब हम जीविये कऽ की करब? ऐ दुनियाँमे हमर के अछि?”

कहैत ओ बन्धनसँ छुटबाक कोशिश केलक। सिमानपुरवालीक फड़फड़ाइत ठोरसँ स्वर निकलल- “हम अखनी जिअत छी। जाबे हम छी ताबे अहाँक मरए नहि देब। हमरा सभटा बातक पता लगि गेल अछि। अहाँ किछोक चिन्ता नहि करू।”

“हमरा लेल मरनाइ नीके होएत। आब हम केतए रहबे? जखैन बापे हमर नहि भेल तँ दोसर के सहारा देत।”

अपनासँ बेसी दुखित बेकतीकेँ देखलासँ सोभाविक रूपे लोककेँ अपन दुख घटि जाइ छइ। ऐ कारणसँ सिमानपुरवालीमे एतेक परिवर्तन भऽ गेल छेलइ। ओ नीताकेँ अपना दिस घिंचैत बाजल-

“अहाँ जँ मरि जेबै तँ हमर दिअर कथी लऽ कऽ धीरज बान्हते। हम की जवाब देबइ ओकरा। चलू अहाँ हमरा घर-अँगनामे रहब।”

“समाज द्वारा हमहूँ तँ प्रतारिते छी। सभ तँ बारने अछि। देखबै,जे हमरा रोकैले के अबै छइ। हमहूँ ओकरा अपन तागत देखा देबइ। बजनिहारकेँ मुँह नोचि लेबइ। हम कमजोर नहि छी।”

नीता फेर जोर-जोरसँ कानए लगल। सिमानपुरवाली अपना आँचरसँ ओकर नोर पोछैत बड़ीकाल धरि बोल-भरोस दैत रहल। सिनेह स्पर्शसँ नीताक अपन माए मन पड़ि गेलइ।

केतेक काल तक दुनू प्रेम रसमे डुबल रहल पता नहि चललै।

दुनू गोरे जखैन घर दिस विदा भेल ताबे भोरुकवा तारा उगि गेल छेलइ। मटरूवा बाधे-बोन बड़ीकाल धरि वौआइत रहल। जखैन ओकरा माथपर सँ तामस किछ निच्चाँ उतरल तब नीताक विषयमे सोचए लगल- केतए गेल हेतै केतए नहि, एहेन बेवहार नइ करबाक चाही। आखिर अछि तँ बेटी।

फेर बापक सिनेहअन्तरमे जन्मए लगलै। जेना किछ भीतरमे औंढ़ मारलकै। आँखिमे नोर भरि गेलइ। फुरफुरा कऽ ठाढ़ भऽ गेलइ। घर-अँगनामे खोजलक। केतौ किछु पता नहि। अन्तमे पछताइत बाध दिस विदा भेल।

ताबे सिमानपुरवालीक संग नीता आबि रहल छल। नुका कऽ मटरूवा दुनूक गप्प सुनलक। सुनि कऽ मन थीर भऽ गेलइ। सोचलक- एगो रस्ता लगि गेलै से नीके भेल। कम-सँ-कम चैनसँ रहि तँ सकैत अछि। मरत तँ नहि। समय एलापर सभ किछु ठीक भऽ जेतइ। समय सभ किछुकेँ ठीक कऽ दइ छइ।

मटरूवा संतोषक साँस लेलक आ चुपेचाप अन्हारमे नुका रहल। अन्हार सभ किछु देखैत-सुनैत चुप रहल। ❑

एक्कैस

समय बीत रहल छल। समय तँ बितते रहै छइ।

सिमानपुरवालीक बतहपनी छुटि गेल छेलइ। नीता आब ओकरे ओइठाम रहि गेल छल। सिमानपुरवाली आ नीता दुनू गोरे काज-उदम करैले दोसर गाम चलि जाइ छेलइ। कमा-खटा कऽ साँझ तक किछु लऽ अनै छल। राजेसरक प्रतीक्षामे राति कटि जाइ छेलइ।

गौंआँ सभ कए बेर हुड़दंग मचौलक जे नीताक गामसँ बाहर निकालि देल जाए। मुदा बुढ़-पुरान रोकलक आ कहलक- ई बात अनुचित होएत। ओ आखिर आगि-पानि ढाठल परिवारमे रहि रहल छइ।

तैयो एक दिन जुवक सभ डेढ़ियापर जा कऽ हड़कम्प मचौलक। मुदा सिमानपुरवाली हँसुआ लेने आगूमे अड़ि कऽ ठाढ़ भऽ गेल। ओकर रौद्र रूप देख गारि-बात दैत सभ आपस भऽ गेल। आखिर ढाठल-बान्हल परिवारमे ऐसँ बेसी की कऽ सकै छल। डरो छेलै जे बात बेसी बढ़ेलासँ कोनो घटना नहि घटि जाए।

राजेसरक घरमे नीताक महिनासँ बेसी बीत गेल छल। किन्तु रातिकेँ एतेक कछमछाहट कहियो नइ भेल छेलइ।

पहर राति बीत गेल छेलइ। बरसातक समय। टिप-टिपाइत पानिक बून। चभच्चा सभमे बेंगक टर्र टर्र...। ओइ स्वरसँ मिलैत झिंगुरक संगीत। ठरल बसातक झोंकसँ सिहरैत देह।

ओना तँ सुतैतकाल राजेसरक यादि अबै जाइ छल मुदा आई बेसी...। नीताक निन्न आइ बैरिन भऽ गेल छल। ओ डेढ़ियापर आबि कऽ बैस गेल छल।

दिनुका गप्प रहि-रहि कऽ ओकरा मनकेँ चोट पहुँचा रहल छेलइ। बाधक एकपेड़िया धेने ओ आबि रहल छल। दू-तीनटा औरतिया रस्ताक

कातमे ठाढ़ छेलइ। नीताकेँ देखते ओ सभ आपसमे आँखि मटकबए लगल। मुदा ओतबेसँ ओकरा सभकेँ सतोख नइ भेलै तँ एकटा बाजल-

"आ गै दाय गै दाय। एहेन दिदगर। बाप निकालि देलकै तँ बिन बियाहले साँयक घर चलि गेलइ। गै देखही, एकोरत्ती लाज-धाख होइ छइ!"

दोसर औरतिया टोन देलक-

"हे ऐ काकी, लाज-धाख होइतै तँ जीविते रहितै। हमरा एहेन दशा भेल रहैत तँ बिख खा कऽ मरि गेल रहितौं। लोकक सोझहा निकलै छै केना!"

तेसर आँखि नचबैत बाजल-

"जातिक लोक सभ तँ बड़ हुड़दंग मचौने रहै, मुदा सिमानपुरवाली, ऊ डनियाही अड़ि गेल रहइ। ओकर गुड़रल आँखि देख सभ दुआरिपर सँ भागि गेलइ।"

पहिल औरतिया फेर बाजल-

"भागितै नहि तँ की करितै? अनका खातिर मरि जइतै? कोन ठेकान, ऊ मौगिया कहीं जादू-टोना चला दइतै। देखलीही पहलमान सन साँएकेँ चिबा गेलइ।"

दोसरकेँ फेर बाजए पड़लै-

"हे ऐ काकी, हमरा तँ बुझि पड़ैत अछि जे नीतियोक डायन-मंतर सिखा देने हेतइ। देखबै, कहियो रजेसरोकेँ चिबा कऽ खा जेतइ।"

ई गप-सप्प जखैनसँ नीता सुनने छल तखैनसँ ओ बेचैन भऽ गेल छल।

पुन: ओइ दिनक घटना ओकरा स्मरण भऽ गेलै- जहिया बाप मारि-पीट कऽ घरसँ भगा देने रहइ।

ओ मनमे सोचए-विचारए लगल- केहेन बेदर्द भऽ कऽ बाबू मारने रहइ। की भऽ गेल रहै ओइ दिन। हमर गप्पोटा सुनैले तैयार नहि रहए। निसचिते छै जे कुलानन्द कोनो जाल फैलेने हेतइ। ठीके कहैत रहै ओ-

"तोहर जिनगी बेरवाद कऽ देबौ नीता।"

मुदा हमर बाबू ओकरा जाल-फरेबकेँ नइ बुझलकै।

छनेमे लोक केतेक बदैल जाइ छइ। बाप-बेटीक मजगूत बन्धन छनेमे केना टुटि जाइ छइ। आइ जँ हमर माए रहैत तँ एहेन दिन नइ देखए पड़ैत। ओ जरूर हमरा बातकेँ सुनैत। कहियो जँ बेमार पड़ि जाइ छेलिऐ तँ माए भरि-भरि राति जागि कऽ ओगरने रहै छल। आखिर दुलरुआ बेटी छेलिऐ किने। मुदा पुरुखक हृदय केतेक कठोर होइ छइ। आखिर हमर बाबूओ तँ एकटा पुरुखे अछि।

ओ अपना आँखिसँ बहैत नोरकेँ पोछलक आ पुन: सोचमे डुमि गेल।

"ठीके कहै छल- गियानावाली। वास्तवमे बिनु बिआहल एना अनका घरमे रहनाइ केतेक अधला गप्प छइ। ठीके हमरा लाज-धाख एकोरत्ती नहि अछि। दोसर गोरे रहितै तँ मरि गेल रहितए। हम बड़ कठजीव छी। ओ जँ घुरि कऽ गाम औता तँ हम केना जेबे सोझहा? की कहत ओ मनमे? अखैनो तँ हम बोझे बनल छिऐ- सिमानपुरवालीपर। भरि दिन वेचारी परेशान रहै छइ।"

तखैने ओकरा देहपर हाथक हल्लुक स्पर्श सन बुझेलै। ओ चौंकैत ओम्हरे ताकलक। हाथमे बड़ीटा झोरा नेने राजेसर ठाढ़ छेलइ।

नीताकेँ सपना सन बुझेलै। ओ आँखि मिड़ैत फेरसँ देखलक। भरम दूर भऽ गेलइ। रसे-रसे ओ उठि कऽ ठाढ़ भेल।

राजेसर एकटक ओकरे निहारि रहल छल। ओकरा मुहसँ निकलल- "नीतू! अहाँ..?"

नीता जेना स्वप्न लोकसँ निच्चाँ उतरल होइ। बहुत दिनसँ पियासल मनकेँ जेना स्वच्छ सरोवर भेट गेल होइ तहिना मनमे एकटा उफान सन एलइ आ आँखिसँ झमझमा कऽ नोर खसए लगलै। ओ आगू बढ़ि राजेसरकेँ पाँजमे पकैड़ लेलक आ जार-जार कानए लगल। राजेसरोक आँखि भीजल छल तैयो ओ नीताकेँ रसे-रसे हँसोतैत बोल-भरोस दऽ रहल छल।

नीता किछ बात कहबो केलक आ किछ नहियोँ कहलक मुदा राजेसर सभटा बुझि गेल। जेना एक-दोसराक आँखिक मिलन सभ किछु समझा-बुझा देलकै।

कनीकालक पछाइत राजेसर पुछलकै-

"माए आ भौजी कहाँ अछि?"

अवाज सुनलासँ सिमानपुरवालीकेँ निन टुटि गेल छेलइ। लग आबि दुनूक मिलन देखलक तँ ओकरो आँखि खुशीक नोरसँ भरि गेलइ।

राजेसरक माए लाठी टेकैत पाछूसँ पहुँचल। बेटाकेँ देखते जेना किछ भीतरसँ उमड़लै। सूप सन कलेजा भऽ गेलइ। सिनेहक नोर हाहा कऽ झहड़ए लगलै।

दुखक समुद्रमे दहाइत-भँसियाइत सुखक कनियोँटा सहारा मनमे आशाक संचार काइये दइ छइ। लगैत रहै छै जे सभ किछमे परिवर्तन भऽ गेल छइ।

घर-परिवार आ सर-समाजक स्थितिक विषयमे सभ गोरे राजेसरकेँ सुनबैत रहली।

बिच्चेमे एकबेर राजेसरक माएकेँ बाजए पड़ल-

"हौ बौआ, समाज तँ मानतै नहि। मुदा भगवानक नजैरमे तँ सभ बरबैर छइ। भोरमे मन्दिर चलि जा आ नेम-धरमसँ नीताक सिनुरदान कऽ दिहक आ असिरवाद लैत आपस घर नेने अबिहक।"

गप-सप्प होइत-होइत राति बीत गेल छल। राजेसरक संगी भुखना घरक आगू होइत जा रहल छेलइ।

राजेसरक अवाज सुनि भुखनाकेँ मिलैक इच्छा भेलइ। मुदा डर होइ जे कियो देख लेत तँ जुरमाना ने लगि जाए। तँए आगू-पाछू देखए लगल। केकरो नइ देखलकै। निश्चिन्त भऽ कऽ अँगना गेल। ओकरा देखते राजेसर सत्कार करैत ओसारपर बैसौलक। दुनू गोरेमे जाति आ समाजक स्थितिक बारेमे गप्प हुअ लगल।गप्प करैत-करैत भुखना बिच्चेमे बाजल-

“जल भँवर जकाँ समाजोक एकटा जाल होइ छै जइमे अहाँ फँसि गेलौं। एकरा तोड़ैले अहाँकेँ लड़ए पड़त।”

राजेसर थिर भऽ बाजल-

“लड़ाइक बदला शान्ति नइ भऽ सकै छइ? अपकारक बदला उपकारसँ नइ देल जा सकै छइ? नहि तँ एकर अन्त केना हएत?”

“सभ किछु भऽ सकै छइ। मुदा..?”

दुनू गोरे गप्प करिते रहल। तैबीच पूबमे नवका किरिण उगि गेल छल। ❑

बाइस

भादो मास अपन रंग आ ताल देखौनाइ शुरू कऽ देने छल। ऐ बेर बरखो तँ किछ बेसीए भेल छेलइ। तँए पहिनेसँ पोखैर-झाँखैर, डबरा-इनार, नदी-नाला सभटा डबडबाएल, पानिसँ भरल।

धनरोपनीक बाद गामक लोक सभ निचेन जकाँ भऽ गेल छल।

काज नीकसँ पूरा भेला बाद जँ फुरसैत होइ छै तँ मनमे खुशी होइते छइ। काजक सुफल भेटैक आशा रहै छै, तँए फुरसैतक पल हँसी-खुशीसँ बितै छइ। मुदा जँ काज ठीकसँ नइ होइ छै तँ बेचैनी बढ़ि जाइ छइ। गिरहतीक चुकल तँ साल भरिक बादे ने सुधार भऽ सकै छइ।

बैसारीमे गामक लोक अपना-अपना खेतक फसलकेँ देख खुश होइत अछि वा आपसमे गप हाँकैत अछि। साँझ-प्रात एकठाम जमा होइते गपपर गप चलबे करतै।

“हौ, रजेसरा गाम एलै तँ केना की केलकै?”

“हमहूँ तँ गाममे नहियेँ छेलौं। सुनै छी जे राजेसर आ नीताक बिआह मन्दिरेमे भऽ गेलै। रजेसरा अपना संगी-साथीकेँ भोजो खुऔलकै।”

“ढाठल पलिवारक भोज के सभ खेलकै यौ?”

“धुर, कियो देखलकै। जे देखलकै सेहो भोज खेलकै। गवाही के देत?”

“इजोतमे होइते तब ने। अन्हारमे सभ किछ नुका कऽ भेलइ। के सभ छेलइ। केना बुझितै।”

“ठीके, केकरा ओतेक फुरसैत छै जे भँजियौने घुरतै। सभ अपना-अपना काज-धन्धामे लगल रहै छइ।”

“लेकिन दोसर भोज वा पंचैती हेतै तहिया सभटा झंझट उखैड़ कऽ सोझा एतइ।”

“हँ-हँ, चाउर सिझा कऽ पहपैट। देखने छी, केतेकठाम। एने भोजन तैयार रहै छै आओनए पंचैती होइत रहै छइ।”

“की हेतइ। केते पलिवारमे तँ ऐसँ बड़का बात सभ भेलइ। कहाँ किछो भेलइ। कुम्हड़ेपर सितुआ चोख होइ छइ।”

“आन्ही-बिहाड़ि केतेकाल रहै छइ। कनीकालक बाद समय फेर ठीक भऽ जाइ छइ।”

“हँ यौ, आब रजेसराक बेवहारोमे अन्तर आबि गेल छइ।”

“ठीके कहै छी। हम सोचै छेलिऐ जे गाम अबिते कूद-फान करतै। कुलानन्दसँ झगड़-झाँटि हेतइ। मुदा से सभ किछो नहि भेलइ। बड़ी शान्तिसँ सबहक संगे बात-विचार करै छइ। जेना किछो भेबे ने केलइ।”

“हँ यौ, अँगूलीमाल जकाँ लोक बदैल सकैत अछि। परिवर्तन तँ संसारक नियम अछि। तँए प्रकृति हरक्षण बदलैत रहै छइ।”

“साँझ पड़ल जाइ छै यौ। घरो दिस चलू ने। आकि चौबटियेपर गप छाँटैत रहब।”

“मनधता केतए दौगल जाइ छै यौ? हौ की बात छइ?”

मनधता अपसियाँत होइत बाजल-

“हे यौ, धारमे पानि बड़ी जोरसँ बढ़ि रहल छइ। बुझि पड़ै छै कसगर बाढ़ि एतइ।”

“अच्छा, फेर पानि घटि जेतइ। केतेक बेर एना होइ छइ। ई कोनो बड़का बात थोड़े छइ।”

“नहि हौ, स्थिति समान्य सन नहि बुझि पड़ै छइ। पानिक रूखसँ बुझि पड़ै छै जे गामक स्थिति खराप करतह।”

“तँ की करबाक चाही?”

“हम तँ कहै छी- घर-दुआरिकेँ छोड़ि दियौ। इसकूलक ऊँचका जगहपर चलू।”

“हौ बाबू, केतौ जेबहक, कपार जेतह संगे। घर छोड़ि घरमुड़िया खेलब। जे हेतै, देखल जेतइ। लोक संकटकालमे घर दिस भगै छै आ हम बाहर जाएब।”

“ठीके छइ। पानिसँ घेरा जाएब तँ औना कऽ घरेमे मरब। पहिने जान बँचा लिअ। जान बँचए तँ लाख उपाय।”

“हौ, तूँ सभ ऐठाम बतकट्टी करैत रहबहक। ओनए अँगना-घरमे बाढ़िक पानि ढुकि गेलह। माल-जालक बोमी सुनै छहक।”

सभ अपना घर दिस दौगल।

बाढ़िक पानि दुआरिपर पहुँचल। फेर अँगनामे हुलकी मारलक आ देखते-देखते घरमे जबरदस्ती ढुकि गेल ओकरा के रोकत? ओना, ओतेक वेगकेँ रोकलो केना जेतइ।

दुआरि-बथान, अँगना-घर सभटा पानिसँ एकटार। भीतर-बाहर पानि भरलासँ घर टाट, दिवार जँहिपटार ओंघरा-ओंघरा कऽ गिरए लगल। लगै छेलै समुंद्र उधिया गेल होइ। सभ किछोकेँ पानि गिरने जा रहल छेलइ। अन-पानि सभ भाँसए लगल। समान सभ जेते ऊपरमे राखै ओते ऊपर तुरन्तेमे पानियोँ पहुँच जाइ।

जे हाथ से साथ। टोलक लोक अपन-अपन समान लऽ कऽ भागए लगल। पहिने कागज-पत्तर आ छोट धिया-पुताकेँ लाधि कऽ भागल। फेर माल-मवेशीकेँ ऊँचका स्थलपर पहुँचा आएल। सभ अपने समांगकेँ बँचबैमेअपसियाँत।

जेकरा पानिकअन्दाज रहै आ पानिसँ डुमल बाट भँजियौल रहै से सभ गामक पच्छिम होइत स्कूलक ऊँचका जगह दिस भागल। जेकरा नहि बुझल रहै ओ पूब होइत निकलल आ वेगयुक्त धारक पानिमे भँसियाइत कहुना कऽ पार भेल। पार होइते घरक देवताकेँ सुमिरन करैत सुखल जगह दिस भागल। कथी-ले कियो आनो गोरे दिस ताकत आ दोसरो गोरेक जान बँचौत।

एकमात्र राजेसर दोसरोकेँ मदैत कऽ रहल छल। तँए लोको सभ एहेन विकट समयमे राजेसरेकेँ सोर पाड़ै छेलइ।

राजेसर अपना समांगकेँ पहिने स्कूलक ऊँचका जगहपर रखि आएल छल। नीता बुढ़िया सभकेँ हाथ पकैड़ पार उतारै छल आ राजेसर बुढ़, बेदरा, नेंगराक ऊपर रखि-रखि अबै छल।

राजेसरकेँ देह-हाथक कोनो सोह-बोह नहि। ओ जी-जानसँ लोककेँ बँचबैमे लगल छल। सौंसे देह थाल-कादो सटल रहइ। देह-हाथमे खोंच लगल। कपड़ा-वस्तर फटल। बून-बून खून निकलैत रहइ। कपारमे थाल लगल रहइ। ठोर सुखि कऽ फाटि गेल छेलइ। तैयो कमजोर लोककेँ रेतसँ पकैड़ ऊपर लऽ जाइ छल।

पानिक ऊपरमे अन्हार पसरए लगलै। चारूभर जले-जल। स्कूलक अँगनीक अलावे चारूकात जलमग्न। लगै छेलै जेना जलप्रलय होइ।महासंमुद्रक मध्य अँगनी-स्थल भाग सन लगै छेलइ। जलक बिछौनापर अन्हार सन-सना रहल छेलइ।

बाढ़िक पानि संगे हरहरा रहल छेलइ। मेघसँ टप-टप चुबैत बून। लगै छेलै- महाविनाश आबि गेल होइ। इजोत करबाक प्रयासमे हवा अवरोधक बनि रहल छल। कनियोँटा भुकभुकाइत रोशनीकेँ देखते अन्हार दौगैत छल आ अजगर जकाँ एकेबेर ढप-दे गिर लइ छल। लोक सभ अपना-अपना देवताक नाओं लऽ लऽ सुमैर रहल छल।

लोक देखा-देखी जीबैत अछि आ संघर्षो करैत अछि। एक-दोसराकेँ देखलासँ डरो भागि जाइत अछि। संगे सभकेँ डेराएल देखलासँ डर उपस्थितो भऽ जाइत अछि।

हिम्मतगर लोक सिरिफ बातसँ नइ बल्कि कर्मसँ संकटकालमे नायक बनै छैथ। तौलैबला नजैर देखैत रहैत अछि जे केकर मानसा-वाचा आ कर्मणा एक रंगक अछि।

अबैबला लोक सभ आबि गेल छल। जे बाँकी बँचल छल, ओ सभ हेलैत-डुमैत आबि रहल छल। राजेसर दू-तीन संगीक संग अखैनो

फिरिशान रहबे करए। जे कमजोर छेलै तेकरा रस्सा पकड़ा कऽ पानिक वेगसँ बाहर निकालै छल।

नीतोसँ जेतेक मदैत संभव छेलै ओ कऽ रहल छल। अखैने ओ धरमलालक बेटी सुलेखाकेँ कँखियौने आएल छल आ दोसर दिस निकैल गेल।

सुलेखा बोम पाड़ि कऽ कानि रहल छेली। वेचारी- अंशकासँ घेराएल छेली। साले भरि पहिने सुलेखाक पति कार एक्सीडेन्टमे मरि गेल छेलइ। पाँच बर्खक बेटापर सन्तोष धेने जीवि रहल छेली। जखनीसँ बाढ़िक हो-हल्ला भेलै तखनीसँ ओहो बेटा नहि भेट रहल छेलइ।घरक दिवाल जखैन गिरलै तखैन सभ गोरे घरसँ बाहर निकैल गेल छेलए। तखनी धरमलाल नातिक ताका-हेरी केने रहइ। केते गोरेकेँ पुछनौं रहइ। नहि भेटलापर बेसी गोरेक यएह अनुमान रहै जे केकरो संगे स्कूलक ऊँचका जगहपर चलि गेल होएत। मुदा एतौ जे नहि भेटलै तँ सबहक परान उड़ि गेलइ।

सुलेखाकेँ कनैत-कनैत हालत खराप भऽ गेल छेलइ। कुलानन्द ताकैत-ताकैत अपसियाँत। बेटीक हालत देख धरमलालोक आँखिसँ दहो-बहो नोर बहि रहल छेलइ। बजैतकाल मुहसँ अवाज निकलैमे कष्ट भऽ रहल छेलइ।

विपैतकालमे लोककेँ हित आ मुदैक अनुभव होइ छइ। अपन कएल क्रिया-कलापक प्रतिफलो भेटै छइ। समाज आ सामुहिक शक्तिक अनुभव तँ संकटेकालमे होइ छइ।

लोकमे हड़कम्प मचले छेलइ।सभ अपने सेर-सम्पैत, माल-जाल आ सर-समांगकेँ बँचबैमे तवाह। धरमलालक बात के सुनत। ओ जोर-जोरसँ कानए लगल। राजेसरक धियान ओनए गेलै। लगमे जा कऽ पुछलक-

“अहाँ किए कनै छी?”

धरमलाल मनकेँ थिर करैत बाजल-

“हौ, हमरा बेटीक एकमात्र सहारा छेलइ। सेहो हमर नाति नहि भेट रहल छइ। केना कऽ हमर बेटी धीरज धरतै हौ।”

धरमलाल कानि-कानि सभटा बात राजेसरकेँ बुझबए लगलै। अन्तमे राजेसर कहलकै-

“एतेक अन्हारमे पानिसँ घेराएल टोलपर जेनाइ कठिन छइ। मुदा हम जाएब। अहाँ आशा राखू। जँ बौआ केतौ हेतै तँ हम निश्चिते ओकरा नेने आएब।”

कहैत ओ तेजीसँ विदा भऽ गेल।

धरमलाल सोचए लगल- सुआरथमे डुमल लोक केते नीच कर्म करए लगै छइ। गौंआँ-घरूआ, अड़ोसी-पड़ोसी, भाय-भैयारीक बीच जे रिश्ता-नाता रहै छै तेकरा छनेमे तोड़ि लइ छइ। ईहो बिसैर जाइ छै जे फेरो एकेठाम रहए पड़त। एक-दोसराक आवश्यकता पड़बे करता। रजेसराकेँ केतेक कष्ट देलिऐ। हमरे कारणे केते बेर आनो लोकसँ दुख पहुँचलै। आइ ओ सभटा बिसैर हमरा लेल केना तैयार भऽ गेल। जान हाथमे लऽ कऽ हमरा नातिकेँ बँचेबाक लेल गेल अछि।

अखैनो सबहक मुँहपर डर नाचि रहल छल। के कथी बजै छेलै तेकर कोनो पता नहि चलि रहल छेलइ। मुदा यंत्रवत सबहक हाथ-पैर चलि रहल छल। रहि-रहि कऽ कियो केकरो सोर पाड़ए लगै छल। कानब आ बाजब दुनू मिश्रित भऽ कऽ एकटा तेसरे स्वर निकैल रहल छल। ओही बीचमे बुझेलै जे किछु लोक राजेसरक जय-जयकार कऽ रहल छइ।

बेसी हल्ला सुनि लोकक संगे धरमलालो नजदीक गेल तँ देखलक। राजेसरक कपारसँ लहू बहि रहल छल। तैयो अपना पीठपरधरमलालक

नातिकेँ लादने आबि रहल छेलइ।

एकगोरे पुछलकै-

“हौ राजेसर, कपार केना फुटि गेलह?”

“हे यौ, टुटलाहा दिवार लग बच्चा बेहोश पड़ल छेलइ। उठबैतकाल ऊपरसँ एगो ईंटा हमरा कपारेपर खसि पड़ल।”

“अच्छा, कहुना एकरा बँचा कऽ लऽ अनलहक इएह पैघ बात।”

“धुर की कहब। आफते-पर-आफत। अबैतकाल जल भँवरमे फँसि गेल छेलौं। कहुना लपैक कऽ गाछक डारि पकड़लौं। कनछी काटि कऽ भँवरसँ निकललौं। नहि तँ परान चलि जाइत।”

“हे यौ, बच्चा ठीक अछि आकि नहि।”

गमछा खोलि बच्चाक पीठसँ उतारैत राजेसर बाजल-

“हँ यौ, बच्चा ठीके छै। कनी डेरा जरूर गेल छेलइ।”

धरमलालक मुहसँ बोल नहि फुटि रहल छल। ओ बच्चाकेँ भरि पाँजमे उठा सुलेखाक कोरामे रखि देलक।

सुलेखाक आँखिमे नोर भरल छेलइ। तैयो भरल नजरिये राजेसरकेँ धन्यवाद दऽ रहल छलइ।

सभ गोरे राजेसरक जय-जयकार करए लगल। तैबीच धरमलाल हाथ उठा कऽ बाजल-

“गामक असली नेता राजेसर छैथ। जे एहेन विकट समयमे सबहक रक्षा केलक।”

केतेक गोरे एके साथ स्वीकार करैत बजला- “गामक ऐगला मुखिया राजेसरकेँ बनौल जेतइ। सभ एकसाथ हाथ उठा कऽ भोँट देब।”

फेर सभ एके साथ राजेसरक जय-जयकार करए लगल।

राजेसर हाथ उठा कऽ सभकेँ चुप करैत बाजल-

"सुनै जाउ, ई हमर समाज नहि, बल्कि हमर परिवार छी। तँए ने पलिवारे जकाँ समाजोमे केकरो 'काका' कहै छी, केकरो 'भैया' कहै छी, केकरो 'दाय' कहै छी आ केकरो 'दादी'। अपना पलिवारक रक्षा केनाइ हमर परम कर्तव्य छल। जे हम केलौं। एकरा बदलामे अहाँ सभ हमरा नेता बनाएब। हमरा लाभ देबै तँ हम इहए बुझब जे अहाँ सभ हमरा काजक महत नहि देलौं। हम सुआरथमे डुमि कऽ काज नहि केलौं। हमरा एकर बदलामे किछ नहि चाही। हमरा खुशी भेल जे हम समाजक ॠणसँ उॠण भेलौं। हमरा अहाँ सबहक असीरवाद चाही। हम चाहै छी जे अहाँ सबहक संग प्रेमसँ रहि सकी।"

उपकारी राजेसरक फेर जय-जयकार भेल। तखैने राजेसरक कानमे एक गोरे फुस-फुसा कऽ किछु कहलकै। ओकर बात सुनिते राजेसर पच्छिम-मुहेँ विदा भऽ गेल।

पछबरिया कोणपर एकान्तमे एकटा गाछ छेलइ। ओही गाछतर नीता औंघहा रहल छल।

नीताक लगमे जा कऽ राजेसर ओकर बाँहि पकैड़ैत बाजल-

"सुतल छी आकि जागल?"

अँगैठी करैत नीता बाजल- "छी तँ जगले मुदा निन्नसँ आँखि भारी भेल जा रहल अछि।"

"हमरो देह ठेहिया कऽ भारी भेल जा रहल अछि। मन होइत अछि किछुकाल सुति रही।"

"आउ ने, किछ देर देह-हाथकेँ सोझ कऽ लिअ।"

एक-दोसराक देहपर हाथ दऽ दुनू गोरे सटि कऽ बैस गेल छल। रसे-रसे दुनू निन्नमे डुमि गेल।

राजेसर सपनाक संसारमे चलि गेल छल। सपनामे देखलक जे ओ अन्हार घरमे बन्न अछि। जेम्हरे जाइ ओम्हरेसँ ठोकर लगै। ओ लोक के

मदैतक लेल सोर पाड़ैत अछि, मुदा कियो नहि अबैत अछि। अन्हारमे असगरे औना रहल अछि। तखैने भयंकर अवाजक संग इजोत होइत अछि। इजोत होइते लगेमे घरक खुगल दुआरि देखैत अछि।

गड़गड़ाहटक स्वर सुनि राजेसरक निन्न टुटि गेल छल। अकासमे हेलीकप्टर चकभौर मारि रहल छेलइ। साइत नेता वा मंत्री बाढ़ि पीड़ितक रक्षा लेल आबि रहल छला।

लोकक मुखपर आशाक किरिण पसैर गेल छल। ❑



राजदेव मण्डल

जन्म : 15 मार्च 1960 ई.मे। पिता : स्व. सोनेलाल मण्डल। माता : स्व. फूलवती देवी। पत्नी : श्रीमती चन्द्रप्रभा देवी। पुत्र : निशान्त मण्डल, कृष्णकान्त मण्डल, विप्रकान्त मण्डल। पुत्री : रश्मि कुमारी। मातृक : बेलहा (फुलपरास, मधुबनी) मूलगाम : मुसहरनियाँ, पोस्ट- रतनसारा, भाया- निर्मली, जिला- मधुबनी। बिहार- 847452 मोबाइल : 9199592920 शिक्षा : एम.ए. द्वय (मैथिली, हिन्दी), एल.एल.बी; ई पत्र : rajdeokavi@gmail.com

सम्मान : अम्बरा कविता संग्रह लेल 'विदेह' समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार वर्ष 2012क मूल पुरस्कार तथा समग्र योगदान लेल 'वैदेह' सम्मान- 2013, डॉ. लक्ष्मी नारायण दुबे स्मृति सम्मान- 2001, सुभद्रा कुमारी चौहान-जन्म शताब्दी सम्मान- 2004 तथा हिन्दी सेवी सम्मान- 2005 इस्वीमे प्राप्त। **प्रकाशित कृति :** (1) अम्बरा- कविता संग्रह (2010), (2) बसुंधरा कविता संग्रह (2013), (3) हमर टोल- उपन्यास (2013), (4) जाल- पटकथा (2015), (5) जल भँवर- उपन्यास (2017), (6) लाज- एकांकी (2017), (7) पंचैती- एकांकी (2017), (8) वापसी- एकांकी (2018) तथा 'राजदेव प्रियंकर' नाओंसँ हिन्दीमे प्रकाशित कृति : (1) जिन्दगी और नाव- उपन्यास (1991), (2) पिंजरे के पंछी- उपन्यास (1994), (3) दरका हुआ दर्पण- उपन्यास (2001) अप्रकाशित कृति- (1) चाक (उपन्यास), (2) त्रिवेणीक रंग (लघु/बीहैन कथा संग्रह)।

दाम : 250 भा.रु.





पल्लवी प्रकाशन
जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452